



# डिप्लोमा इन एजुकेशन (डी.एड.)

(शिक्षा में पत्रोपाधि)

दूरस्थ शिक्षा हेतु स्व-अधिगम सामग्री

भाषा (द्वितीय भाषा अंग्रेजी)

व भाषा शिक्षण

द्वितीय वर्ष

प्रकाशन वर्ष—2013



निःशुल्क वितरण हेतु

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,  
छत्तीसगढ़, रायपुर

**प्रकाशन वर्ष – 2013**

**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर छत्तीसगढ़**

**राज्य कार्यक्रम प्रभारी**

अनिल राय

(भा.व.से)

संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

**राज्य समन्वयक**

ए.लकड़ा,

संयुक्त संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

**पाठ्य सामग्री समन्वय**

आर. के. वर्मा

यू.के. चक्रवर्ती

डेकेश्वर प्रसाद वर्मा

**विषय संयोजक**

डॉ एम.सुधीश

सुश्री संध्या रानी

**तकनीकी सहयोग एवं सामग्री संकलन**

विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बेंगलोर,

छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र, रायपुर

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् रायपुर उन सभी लेखकों/प्रकाशकों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है जिनकी रचनाएँ/आलेख इस पुस्तक में समाहित हैं।

## प्राक्कथन

“अनिवार्य एवं निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009” के निर्देशानुसार समस्त अप्रशिक्षित सेवारत प्रारंभिक शिक्षकों को 5 वर्ष की समय सीमा में प्रशिक्षण प्राप्त किया जाना है। राज्य के समक्ष यह एक बड़ी चुनौती है, साथ ही उन शिक्षकों के लिए परस्पर साथ आने का, अपने अनुभवों को साझा करने का सुअवसर है जो पूर्व से ही स्कूलों में बच्चों के साथ कार्य कर रहे हैं। इसी अनुक्रम में राज्य में सेवारत अप्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों को डी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर डी.एड. दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उपलब्ध कराया जा रहा है।

समाज में समय अनुरूप हो रहे वृहद सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप शिक्षाप्रणाली में शिक्षकों से अपेक्षाएँ बदलती रहती हैं। आज के संदर्भों में शिक्षक की भूमिका में काफी बदलाव आया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 ने भी शिक्षकों की बदलती भूमिका को रेखांकित किया है। आज एक शिक्षक के लिए जरूरी है कि वह बच्चों को जाने, समझे, कक्षा में उनके व्यवहार को समझे, उनके सीखने के लिए उपयुक्त माहौल तैयार करे, उनके लिए उपयुक्त सामग्री व गतिविधियों का चुनाव करे, बच्चे की जिज्ञासा को बनाए रखे, उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करे व उनके अनुभवों का सम्मान करे। शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह शालेय संदर्भ में उभरती हुई मांगों एवं आवश्यकताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करते हुए विद्यार्थी के प्रश्न, सीखने की प्रक्रिया, विषयवस्तु तथा शिक्षण के संबंध में अपने आप को निरंतर अद्यतन करते रहे।

शिक्षकों को इस बदलती भूमिका के लिए बेहतर तरीके से तैयार करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राज्य में डी.एड. का नवीन पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसामग्री तैयार की गई है। सेवापूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस पाठ्यसामग्री की स्वीकार्यता एवं गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए इसे स्व-अधिगम सामग्री में परिणित कर सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए तैयार किया गया है।

यह कोर्स स्वअधिगम पर आधारित है इसके लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यसामग्री को आप गंभीरता से पढ़ें, चिंतन करें, चर्चा करें एवं अपने दैनिक अनुभवों से जोड़ते हुए उपयोग करें। इसे रटने की अपेक्षा जीवन उपयोगी बनाएँ।

इस पाठ्यसामग्री का फोकस विषयवार समझ विकसित करने के साथ-साथ एक एकीकृत समझ विकसित करने में है, जो कि किसी विशेषीकृत शिक्षण विधि के आधार पर न होकर समग्र शिक्षण विधि जो बच्चों को सीखने में मदद करे, के आधार पर हो। प्रथम वर्ष की पाठ्य सामग्री का अध्ययन करते हुए आपने इस पाठ्य सामग्री की उपयोगिता का अनुभव किया होगा। द्वितीय वर्ष की स्व-अधिगम पाठ्य सामग्री इसकी अगली कड़ी के रूप में आपके समक्ष है।

द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में इन विषयों को सम्मिलित किया गया है—

1. गणित व गणित शिक्षण।
2. शिक्षा दर्शन—व्यक्ति सीखना व शिक्षा।
3. भाषा (हिन्दी) व भाषा शिक्षण।
4. भाषा (द्वितीय भाषा अंग्रेजी) व भाषा शिक्षण।
5. भाषा (तृतीय भाषा संस्कृत) व भाषा शिक्षण।
6. पर्यावरण अध्ययन व विज्ञान शिक्षण
7. आधुनिक विश्व के संदर्भ में भारतीय शिक्षा

चयनित पाठ्यसामग्री में कुछ लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री प्रशिक्षार्थियों के हित का ध्यान में रखकर ज्यों की त्यों ली गई है। कहीं-कहीं स्वरूप में परिवर्तन भी किया गया है, कुछ सामग्री अंग्रेजी की पुस्तकों से लेकर अनुदित की गई हैं। हमारा प्रयास यह है कि प्रबुद्ध लेखकों की लेखनी का लाभ हमारे भावी शिक्षकों को मिल सके। इग्नू और एन.सी.ई.आर.टी. सहित जिन भी लेखकों/प्रकाशकों की पाठ्यसामग्री किसी भी रूप में उपयोग की गई है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। हम विद्या भवन सोसायटी उदयपुर, दिगंतर जयपुर, एकलव्य भोपाल, अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन बैंगलुरु, आई.सी.आई.सी.आई. फाउण्डेशन पुणे, आई.आई.टी. कानपुर, छत्तीसगढ़ शिक्षा संदर्भ केन्द्र रायपुर के आभारी हैं जिनकी टीम ने एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग. और डाइट के संकाय सदस्यों के साथ मिलकर पठन-सामग्री को वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।

स्व-अधिगम पाठ्यसामग्री तैयार करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सहयोगियों का हम पुनः आभार व्यक्त करते हैं। पाठ्यक्रम तैयार करने तथा पाठ्यसामग्री के संकलन व लेखन कार्य से जुड़े लेखन समूह सदस्यों को भी हम धन्यवाद देना चाहेंगे जिनके परिश्रम से पाठ्य सामग्री को यह स्वरूप दिया जा सका। पाठ्य-सामग्री के संबंध में शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशिक्षार्थियों के साथ-साथ अन्य प्रबुद्धजनों, शिक्षाविदों के भी सुझावों व आलोचनाओं की हमें अधीरता से प्रतीक्षा रहेगी जिससे भविष्य में इसे और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

कोई भी पाठ्यक्रम सम्पूर्ण नहीं होता इसमें सुधार की असीम सम्भावनाएं होती हैं तथा निरंतर परिवर्तन जीवित होने का एक प्रमाण भी है। अतः आपसे अनुरोध है कि सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्रियों को पढ़कर अपने सुझाव हमें अवश्य भेजें ताकि पाठ्यक्रम में आवश्यक सुधार कर इसे जीवित रखा जा सके।

**धन्यवाद ।**

**संचालक**  
**राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण**  
**परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर**

## विषय-सूची

| Unit                                      | Page    |
|---|---------|
| Unit 1 English In Our Lives               | 01-11   |
| Unit 2- Learning English                  | 12-44   |
| Unit 3- How can English be taught?        | 45-78   |
| Unit 4- Structure of the English Language | 79-100  |
| Unit 5- Teaching Plan                     | 101-129 |





## UNIT - 1

### English In Our Lives

- 1.1 English- A Part of our Lives.
- 1.2 Historical and Political Context of English in India.
- 1.3 Social Aspect of Language.
- 1.4 Is proficiency in English language imperative?
- 1.5 Appropriate Environment for learning English.

#### ज़रा सोचें.....

- क्या अंग्रेजी भाषा जाने अनजाने हमारे जीवन का हिस्सा बन गई है?
- अगर हाँ तो ऐसा क्यों और कैसे हुआ?
- भारत में अंग्रेजी भाषा का क्या राजनीतिक और सामाजिक इतिहास रहा है?
- अंग्रेजी या कोई भी नई भाषा सीखना किस प्रकार से हमारे विकास में सहायक सिद्ध होता है?
- अंग्रेजी सीखने-सिखाने के लिए किस प्रकार का माहौल मददगार साबित हो सकता है?

#### 1.1 English- A Part of our Lives (अंग्रेजी- हमारे जीवन का एक हिस्सा)

चलिए इस पाठ की शुरुआत एक मजेदार गतिविधि से करते हैं!

##### Activity-1

1. Make a list of those English words /sentences that you commonly **see** around.  
words: \_\_\_\_\_  
sentences: \_\_\_\_\_
2. Now make a list of those words, phrases or sentences that you **use** in your daily language.  
words: mobile, pen \_\_\_\_\_  
sentences: \_\_\_\_\_  
(You can do this with your friends/children as well.)

इस गतिविधि से यह लगता है कि अंग्रेजी भाषा हमारे आस-पास हर जगह है और हम सभी थोड़ी या बहुत, कम या ज़्यादा अंग्रेजी ज़रूर जानते हैं!

जहाँ यह सच है कि अंग्रेजी सीखने के लिए हमें प्रायः एक औपचारिक माध्यम की आवश्यकता होती है, वहाँ यह बात भी गौरतलब है कि अंग्रेजी में अनेक ऐसे शब्द हैं जिन्हें सीखने के लिए हमें किसी विद्यालय या कक्षा में जाने की ज़रूरत नहीं होती। ये वे शब्द हैं जो आते जाते हमारे कानों में पड़ते हैं और स्वाभाविक तौर पर हमारी भाषा का हिस्सा बन जाते हैं। इसका अंदाज़ा आप अपनी शब्दों की सूची देखकर लगा सकते हैं।

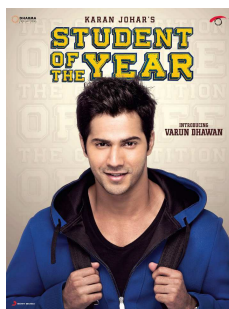
जैसे- pen, cycle, ball, bus, table....

**Discuss :** Where and how have you learnt these words/ sentences?



अंग्रेजी शब्दों/ वाक्यों का उपयोग आजकल टी.वी., धारावाहिकों, पत्रिकाओं, अखबारों, विज्ञापनों में इतना प्रचलित हो गया है कि बड़ी आसानी से ये शब्द/वाक्य हमारी आम भाषा में आ जाते हैं और हमारी बोलचाल का हिस्सा बन जाते हैं।

इस प्रकार से अंग्रेजी की शब्दावली का प्रयोग केवल सुनने या बोलने तक ही सीमित नहीं है। यदि आप अपने आस-पास नजर दौड़ाएँगे तो अनेक निर्देश अंग्रेजी में लिखे हुए पाएँगे, जिन्हें हम बिना किसी कठिनाई के समझ लेते हैं। जैसे:-



रेलवे-स्टेशन जैसी जगहों पर भी कई सूचनाएँ अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों में दोहराई जाती हैं।

उदाहरण के लिए- "2495 Chhattisgarh Express from New Delhi to Raipur will be late by 2 hours, and is expected to arrive at Raipur station at 9.00 pm"

चाहे हम इस वाक्य को खुद न बना पाएँ या हर एक शब्द का अर्थ न समझ पाएँ, लेकिन इसके कुछ शब्दों को समझते हुए, जैसे-'from New Delhi to Raipur', late और 'arrive at 9.00 pm', हम पूरे वाक्य का अर्थ समझ लेते हैं।

इसी प्रकार से अंग्रेजी में लिखित निर्देश/जानकारी भी चित्रों के माध्यम से हम समझ लेते हैं। जैसे:-



An apple  
a day  
=  
no doctor



1 Lemon  
a day  
=  
no fat



3ltrs of  
water  
per day  
=  
no diseases



Tulsi Leaf  
a day  
=  
no cancer



1 cup milk  
a day  
=  
no bone  
problem



अनेक जगहों पर हिन्दी व अंग्रेजी का मिश्रित प्रयोग भी देखने को मिलता है।



#### 4 | डी.एड.(द्वितीय वर्ष)

ये सारे उदाहरण हमें यह समझने में मदद करते हैं कि अंग्रेजी भाषा किस प्रकार हमारे चारों ओर फैली हुई है। हमने देखा कि हम अंग्रेजी के अनेकों शब्दों का अपनी रोजमर्रा की भाषा में इस्तेमाल करते हैं, पढ़ते हैं व सुनते हैं। ध्यान देने योग्य बात यहाँ यह भी है कि इनमेंसे कई शब्द ऐसे हैं जिनको हम अपनी भाषा में पूरी तरह से शामिल कर चुके हैं। इनके शब्दों के हिन्दी शब्दार्थ का प्रयोग हम नहीं या बहुत कम करते हैं।

जैसे— computer, railway station, mobile etc.

दूसरे शब्दों के संग अब ये भी हिन्दी में शामिल हो गए हैं।

#### **Activity-2**

Sit with your friends and make a list of such words which have become an integral<sup>1</sup> part of our local languages; and we don't use Hindi or local language words for them.

जिस प्रकार से विभिन्न अंग्रेजी शब्दों को हम अपनी भाषा में सम्मिलित कर लेते हैं, उसी प्रकार बच्चे भी अंग्रेजी के शब्दों से परिचित हो जाते हैं और उनका प्रयोग दैनिक जीवन में करने लग जाते हैं।

#### **Activity-3**

Now make a list of those English words which a child knows before coming to the school. Reflect upon<sup>2</sup> how does a child know those words?

## 1.2 Historical and Political Context of English in India

### (भारत में अंग्रेजी का ऐतिहासिक व राजनीतिक संदर्भ)

वर्तमान में अंग्रेजी का दर्जा और उपयोग क्या है, इसे जानने के लिए यह अनिवार्य है कि हम भारत में अंग्रेजी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझें। 17वीं सदी में अंग्रेज व्यापारी बनकर भारत आए, ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना से उन्होंने शुरुआत की तथा धीरे-धीरे अपना राज जमाया और अगली दो सदियों तक भारत पर शासन किया। इस दौरान हमारे देश का परिचय न केवल अंग्रेजी भाषा वरन पश्चिमी तौर-तरीकों व शिक्षा से भी हुआ।

1813 के Charter Act के तहत ईस्ट इण्डिया कंपनी को भारतीय शिक्षा में एक निर्धारित मात्रा में पैसा निवेश करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। उस समय यह बहस सामने आई कि शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा होना चाहिए या अंग्रेजी? एक समूह, जिसमें अधिकारी वर्ग के लोग शामिल थे, चाहते थे कि शिक्षा का माध्यम पूर्वी भाषा हो जैसे संस्कृत या अरबी, एक दूसरा समूह आधुनिक भारतीय भाषाओं के पक्ष में था। मगर अंग्रेजी भाषा का पक्ष काफी मजबूत था, जिसकी पैरवी हमारे कुछ समाज सुधारक भी कर रहे थे। राजा राममोहन राय चाहते थे कि आधुनिक उच्च शिक्षा को बढ़ावा मिले। उनका मानना था कि भारतीय भाषाओं के आधुनिक विवरण में अंग्रेजी शिक्षण एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

शायद इसलिए ही अंग्रेज भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रचार करने में एकमत नहीं थे। एक सीधा कारण तो दूरी बनाए रखना था। दूसरे कारण सांस्कृतिक और सियासी थे। उनका मानना था कि अंग्रेजी शिक्षा से अंग्रेजों की मुश्किलें बढ़ेंगी।

**Think :** अंग्रेज भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रचार करने में एकमत क्यों नहीं थे?

मगर टी.बी. मैकॉले<sup>1</sup> जैसे अंग्रेज शासकों के अंग्रेजी शिक्षा से संबंधित अलग उद्देश्य थे। मैकॉले के प्रसिद्ध 'Minute of 1835'<sup>2</sup> में वर्णित उद्देश्यों में एक मुख्य उद्देश्य था कि अंग्रेजी-भाषी भारतीयों का एक ऐसा समूह बने जो कि उनके अंग्रेजी शासकों व आम भारतीयों के बीच संपर्क बनाए रखे। साथ ही एक ऐसा समूह खड़ा करना जो कि रक्त और रंग से भारतीय हो पर पसंद, आचार, विचार व समझ में अंग्रेज हो। धीरे-धीरे अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों की संख्या बढ़ने लगी। जैसे-जैसे अंग्रेजी भाषा की जड़ें भारत की शिक्षा प्रणाली में मजबूत होती गईं, स्थानीय भाषाओं की स्थिति कमज़ोर होती गई। राजनीति और शिक्षा के क्षेत्रों में अंग्रेजी-भाषी शामिल होते गए, व अंग्रेजी भाषा का प्रभाव भी बढ़ता गया। जबकि उस समय के विचारकों व अंग्रेजी शिक्षा के समर्थकों ने कभी यह नहीं चाहा था। उनका मानना था कि अंग्रेजी साहित्य से परिचय स्थानीय भाषाओं की समृद्धि का साधन बन सकता है।

जहाँ यह सच है कि अंग्रेजी भाषा उंचे दर्जे व आधुनिकीकरण की पहचान बन गई, वहाँ यह भी सच है कि अंग्रेजी का उपयोग केवल विशिष्ट परिस्थितियों में किया जाता था, जैसे अकादमिक या प्रशासनिक कामों में। निजी जीवन में अंग्रेजी भाषा की भूमिका न के बराबर थी। जहाँ उच्च-अदालतों में अंग्रेजी का इस्तेमाल शुरू हो गया था वहीं निचली अदालतों में स्थानीय भाषाओं का इस्तेमाल होता था। चाहे शिक्षा की बात हो या व्यवसाय की, भाषा ने समाज को दो अलग-अलग तबकों में चिह्नित करना शुरू कर दिया— छोटे तबकों में जहाँ सारा काम स्थानीय भाषा में होता था; वहीं ऊँचे तबकों में अंग्रेजी भाषा को प्रमुखता प्राप्त थी।

Had you been the contemporary of Raja Ram Mohan Roy, which medium of education would you have supported and why?

.....

.....

.....

.....

1947 में अंग्रेज तो भारत छोड़कर चले गए, किन्तु अंग्रेजी भाषा का प्रभाव निरंतर बढ़ता गया और वह हमारे सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई।

20वीं सदी के शुरू के दशकों में कई राष्ट्रवादी नेताओं की यह सोच बनी कि अंग्रेजी के स्थान पर एक ऐसी भाषा चुनी जाए जो राष्ट्रवाद की पहचान बने। इस के अनुसार 1950 में संविधान बनाते समय हिंदी भाषा भारतवर्ष की राजभाषा (सरकारी कामकाज की भाषा) बनी। पर दक्षिणी राज्यों में इसका तीखा विरोध हुआ क्योंकि उनकी भाषा हिंदी भाषा से बिल्कुल अलग थी। उनका मानना था कि हिंदी भी एक क्षेत्रीय भाषा है और हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा देना हिंदी भाषी सभ्रांतों को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से लाभ देने के समान होगा। इन राज्यों की माँगों को देखते हुए 'The Official Languages Act, 1963' के तहत अंग्रेजी भाषा को भारत की Associate Official Language (सह-राजभाषा) के रूप में स्वीकार किया गया। इसी पक्ष में अंग्रेजी भाषा को भारत के राज्यों के बीच एक 'link-language' (संपर्क भाषा) के रूप में देखा गया। किंतु एक ओर जहाँ अंग्रेजी की माँग निरंतर बढ़ती रही वहीं दूसरी ओर इसके प्रभुत्व

1. Thomas Babington Macaulay.

2. These minutes were a kind of proposal to start teaching English language in Indian schools. He also proposed to change the official language from Persian or Sanskrit to English.

## 6 | डी.एड.(द्वितीय वर्ष)

को कम करने की वकालत भी चलती रही है। महात्मा गांधी का यह मानना रहा कि सच्ची शिक्षा एक विदेशी माध्यम में करना असंभव है।

"Real Education is impossible through a foreign medium." *Young India* 1919-22, p. 451.

अंग्रेजी के इर्द-गिर्द इन चर्चाओं के फलस्वरूप शिक्षा प्रणाली में भी कई महत्वपूर्ण बदलाव आए, जो अंग्रेजी पर से जोर हटाने में सहायक रहे। उदाहरण के लिए 10+2 शिक्षण पद्धति लागू होने के उपरांत दसवीं के बाद विद्यार्थी अंग्रेजी पढ़ना छोड़ सकते हैं। 1979 तक भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा केवल अंग्रेजी में दी जा सकती थी। किंतु अब विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी परीक्षा देने की आजादी है।

**Think :** You just read that regional states opposed the acceptance of Hindi as the official language of the Indian nation. On a political level today, do we still witness debates around language? Why do you think this happens?

### 1.3 Social Aspect of Language (भाषा का सामाजिक पक्ष)

प्रत्येक भाषा एक सामाजिक परिवेश में डूबी होती है। भाषा का स्वरूप और विकास, उसे इस्तेमाल करने वाले लोगों के अनुभवों पर निर्भर करता है।



'English in denotes linguistic features, whereas academics have been more interested in the historical, literary, and cultural aspects of English in India.' Indian English refers to dialects or varieties of English spoken primarily in India.

The reasons for these variations are:

- The presence of many vernacular languages
- People learn their mother Language first
- By the time they start learning English, they find it difficult to follow that pronunciation
- They have in them very strongly formed linguistic habits that interface with their learning English
- The phonological system of the mother tongue will have an influence on the phonology of their

English



We have a variety of English spoken in India, such as Tamil English, Malayalam English, Bengali English, Punjabi English etc. Basing on these varieties, the feature of Indian English can be grouped under phonological and grammatical features.

- Most Hindi speakers of the north such as in Bihar say 'school' as 'iskul' and 'stamp' as 'istamp'
- 'fail' is pronounced as 'phail' and 'fifty' as 'phipty' because of interference of L<sub>1</sub>.
- The usage of "isnt it", "no", "na", as tag questions; like "you are going, isnt it?", "I am going, no?", "she likes it, na?" instead of "you are going, arent you?", "I am going" and "does she like it?"
- "Your good name please?" instead of "what is your name"-carry over from Hindi expression "subhnaam" which means "auspicious name"

Use of suffix "uncle"/"aunty" while addressing relatives, strangers, friend's parents, etc. such as "shopkeeper uncle" "vimala aunty"

- Greetings like 'happy birthday' is also said like "today is my happy birthday"
- "Full Shirt" is used for "Full Sleeves" and "Half Shirt" for "Half Sleeves" or "Short Sleeves". Similarly full-pant means trousers and half-pant means shorts.

अतः हम यह समझ सकते हैं कि भाषा एक निश्चित सामाजिक परिवेश में बसती और पनपती है। अब ध्यान देने योग्य बात यहाँ यह है कि जहाँ एक ओर भाषा हमारी संस्कृति और विचारों की परिचायक होती है वहीं दूसरी ओर वह हमारे विचारों को प्रभावित भी करती है। क्या आप सोच सकते हैं कैसे?

**Think :** भारत में अंग्रेजी सीखने वाले लोग क्या इंग्लैण्ड की संस्कृति के ज़्यादा करीब हो जाते हैं?  
क्या भारतीय समाज में सालों से रची-बसी अंग्रेजी भाषा के स्वरूप में कोई बदलाव आया है?

मैकॉले तो चाहते थे कि एक ऐसा समूह खड़ा किया जाए जो विचारों और मूल्यों में अंग्रेजों के ज़्यादा करीब हो। और शायद यही कारण है कि आज भी कुछ लोग अंग्रेजी शिक्षण को भारतीय संस्कृति की पतन के लिए जिम्मेदार मानते हैं।

परंतु आज के समय में जब अंग्रेजी में लिखा गया भारतीय साहित्य बहुतायत में मौजूद है तो यह समस्या अब नहीं रही। इसी के साथ हमारे बच्चे इस दोहरी मार से बच सकते हैं, जहाँ वे एक नई भाषा, एक नए संदर्भ में सीखें। पर यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि भाषा हमें अलग-अलग संदर्भों से परिचित कराती है और हमारे दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में भी मदद करती है।

दूसरे सवाल का जवाब इसी बात में है कि अंग्रेजी कोई एक भाषा नहीं है, इसके अनेक रूप हैं। जैसे- भारतीय अंग्रेजी, ब्रिटिश अंग्रेजी व अमेरिकन अंग्रेजी आदि। ये अलग-अलग प्रकार एक दूसरे से कई स्तरों में भिन्न हैं। जैसे- उच्चारण, शब्दार्थ, कुछ हद तक वाक्य संरचना आदि।

आज अंग्रेजी का प्रयोग कई क्षेत्रों में किया जाता है, चाहे वह सरकारी प्रशासन में हो या दफ्तरशाही कामों में, व्यापार में, संचार में – राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय, या निजी जीवन में। हमारे देश के कई जाने-माने लेखक व कवि भी अपने विचारों व भावनाओं को अंग्रेजी में ही अभिव्यक्त करते हैं। इसके अलावा, शिक्षा के संदर्भ में भी, खासतौर पर उच्च शिक्षा में, अधिकतर पाठ्यपुस्तकें अंग्रेजी में ही लिखी जाती हैं और यदि उनका स्थानीय भाषा में अनुवाद किया भी जाए तो अधिकतर पारिभाषिक शब्दावली अंग्रेजी की ही रखी जाती है। यहाँ तक कि विश्व साहित्य के संदर्भ में भी, चाहे वे फ्रेंच, जर्मन या स्पेनिश भाषा में हो, सबसे अधिक अनुवाद अंग्रेजी भाषा में ही होता है।

---

1. lack of equality 2. relation of something 3. office based jobs. 4. a period of 10 years 5. insistence, importance 6. important 7. to cut or make too small 8. without doubt 9. सहज ज्ञान संबंधित 10. lacking the rights and advantages of other members of society



Is there a need to learn English in today's world? Give reasons to support your answer.

.....

.....

.....

.....

## 1.4 Is proficiency in English Language Imperative?

(क्या अंग्रेजी भाषा में निपुण होना ज़रूरी है?)

कई लोगों का मानना है कि काम-काज के क्षेत्र में अंग्रेजी के महत्त्व का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कई क्षेत्रों में व्यावसायिक वृद्धि के लिए अंग्रेजी में निपुणता अनिवार्य हो गई है। पर कई लोग इससे असहमत हैं और मानते हैं कि इसके चलते व्यावसायिक वृद्धि की चाह में हमारा झुकाव अंग्रेजी के प्रति अनायास ही बढ़ता जा रहा है और भारत की विभिन्न भाषाओं के प्रति घटता जा रहा है। आर्थिक उन्नति के लिए अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं पर गणित, विज्ञान व साहित्य की समझ अनिवार्य है। इन्हीं दो पक्षों में नीचे दो अखबार के लेख दिए गए हैं—

**लेख-1** : ... A study carried out in Mumbai a few years ago - based on a large sample and published in the American Economic Review - came up with interesting findings. According to it, access to English education reduced gender inequalities<sup>1</sup> and the relevance<sup>2</sup> of caste. It multiplied the choices and career options available to children in urban working-class homes, enabling a far greater percentage of them to move on to white-collar jobs<sup>3</sup> than children who studied in Marathi medium schools.

'... English has demonstrably been one of the building blocks of India's remarkable economic growth over the past decade<sup>4</sup>. By laying such emphasis<sup>5</sup> on the tertiary sector, the growth model has ensured that knowledge of English becomes an essential<sup>6</sup> part of a professionals skill set. To give just one statistic highlighting its importance, 80 per cent of the sector's offshoring business comes from the US and the UK. But even outside of those two countries, English has established itself as the language of international business. With the high profile role of India's IT and BPO businesses as well as the growing market footprint of multinationals, the language of globalisation and international commerce cannot be ignored.'

'... There's a demand for English at the grassroots, which can't be ignored. The poor scrimp<sup>7</sup> and save, in order to spend their hard-earned money to send their wards to schools that teach English. Implicit<sup>8</sup> in this is an intuitive<sup>9</sup> recognition that knowledge of English can offer an escape route from poverty, at least for the next generation. Let's facilitate that process, and speed upward mobility, by offering the underprivileged<sup>10</sup> access to decent English-language skills free or at low cost.'

'None of this is to suggest that local languages should be ignored. Our richest cultural expressions can continue to be in these languages, and our educational institutions should do all they can to facilitate this. But there's no reason why multiple languages can't coexist. Indeed, they have done so since time immemorial in this country. English is just a practical skill, a tool of empowerment which will help everyone access the world of commerce and opportunity.' (from Sanjiv Kaura, 'Language Without Barriers', The Times of India, Mar 11, 2010)

1. a period of 10 years 2. insistence, importance 3. important 4. to cut or make too small 5. without doubt 6. सहज ज्ञान संबंधित 7. lacking the rights and advantages of other members of society

**लेख-2** : ' ... Undoubtedly, English has helped jumpstart the Indian economy. The outsourcing boom has been driven by the fact that so many Indians speak flawless English. But one billion people aren't going to be uplifted through call centres. We will progress by becoming more educated and productive members of society. And remember that education and productivity come regardless of language. It's a solid foundation in math, science, arts, history and literature that will drive productivity. Not familiarity with the English language.

Japan, for instance, is a textbook example of productive growth. Any visitor to Japan will quickly realise that few speak or write English well. Japan's growth has been driven by an education system with an emphasis on the basics: maths, physics, chemistry, biology, literature and history - and all done in Japanese ... the rise of Japan, South Korea, Taiwan, Hong Kong, China and Thailand and even the recent rise of Russia show that English is neither a sufficient nor a necessary component of economic growth.

The third myth<sup>1</sup> is that learning English doesn't cost India anything. It does. Our familiarity with English comes at the expense of our own languages. Go to any major museum in the world and you will find Indians, but you will not find Indian languages.

... Today, the language guides are in German, Spanish, French, Italian, Portuguese (for Brazil), Russian, Korean, Japanese and Chinese. Hindi isn't there. Neither is Tamil or Gujarati or any of the other 16 official Indian languages (save English). The lesson of this is that Indians who travel abroad<sup>2</sup> better learn some English before going there" (or at least some Chinese or Spanish or Japanese).

... We learn English at the expense of our own languages and culture. If we don't make our languages a priority, no one else will either. We should learn English, but we should also learn our own languages. The key to economic progress isn't spelled out in English, but it can be found if we establish a grounding in math, science and literature at the core of learning in any language.'

(from Prashant Agrawal, 'Leader Article: Myths About English', The Times of India, Nov 17, 2007)

What are the main points of these two articles? Which of the arguments do you support and why?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

**1.5 Appropriate environment for learning English**

(अंग्रेजी भाषा सीखने के लिये उचित माहौल)

अंग्रेजी बोलते समय कई लोग घबरा जाते हैं। मगर अंग्रेजी किसी भी दूसरी भाषा की तरह सही माहौल मिलने पर आसानी से सीखी जा सकती है। आइए इस मुद्दे पर चर्चा की शुरुआत एक उदाहरण के साथ करें—

1. a traditional story accepted as history 2. in a foreign country.

महेश कई दिनों से अंग्रेजी सीखना चाहता था पर वह यह नहीं समझ पा रहा था कि अंग्रेजी की शुरुआत वह कहाँ से करे। हिम्मत करके महेश ने अपने कार्यस्थल के उन लोगों के साथ अपनी परेशानी की बात की जो अंग्रेजी को लेकर सहज थे। उन लोगों ने महेश का हौसला बढ़ाया और उसकी मदद करने का आश्वासन दिया। वे महेश से अंग्रेजी में बात करते और उसे भी अंग्रेजी में बात करने को उत्साहित करते। महेश कुछ गलतियाँ करता, पर उनको लेकर कोई उसका मज़ाक नहीं उड़ाता था। .. इस तरह से अंग्रेजी के लिए उसकी झिझक कम हुई और वह इस भाषा के साथ काफी सहज होने लगा।

कुछ समय बाद महेश ने अपने घर के आस-पास के अन्य दोस्तों से भी अंग्रेजी में बात करना शुरू कर दिया, पर यहाँ मामला ज़रा अलग रहा। उन्होंने उसकी ग़लतियों का मज़ाक उड़ाना शुरू कर दिया और यदा-कदा वह मज़ाक का पात्र बनने लगा। अब महेश अपने कार्यस्थल पर भी अंग्रेजी बोलने से हिचकने लगा। उसे अपनी ग़लतियों का पहले भी अहसास था, पर अब ये ग़लतियाँ उसको असहज करने लगीं और असहजता के कारण वह अटक-अटक कर बोलने लगा। अंत में असहजता, मज़ाक और बार-बार की टोका-टाकी से तंग आकर महेश ने अपनी कोशिशों को विराम लगा दिया।

**Think :** What are your thoughts on Mahesh's effort at learning language? What did you like and what did you dislike about his efforts? Can we help Mahesh now? How?

#### **Activity-4**

अपने आस-पास 2-3 वर्ष के कुछ बच्चों को बात करते हुए सुनें। फिर निम्नलिखित बातों पर विचार करें:-

- बच्चे अमूमन कितने लंबे वाक्य बोलते हैं?
- क्या बच्चे लंबे वाक्य बिना रुके बोल जाते हैं या वे बीच-बीच में रुकते या अटकते हैं?
- क्या वे सहज रूप से भाषा का इस्तेमाल कर पाते हैं?
- क्या वे बोलते समय कुछ ग़लतियाँ करते हैं?

**Discuss :** आपने खुद भाषा कैसे सीखी, इसको ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करें:-

- क्या आपने भी बचपन में भाषा सीखते समय ग़लतियाँ की थीं?
- क्या वे समय के साथ अपने आप ठीक हो गईं या उसके लिए आपको बड़ों द्वारा कुछ नियम याद कराए गए?

दरअसल, हमारे समाज में भाषा सीखते समय होने वाली ग़लतियों के प्रति बहुत घबराहट और असहजता देखने को मिलती है। हम ग़लतियों को ऐसे देखते हैं जैसे कोई बीमारी हो जिसका शीघ्र उपचार करना आवश्यक है। जबकि हम सब यह जानते हैं कि बच्चे अपनी पहली भाषा बिना किसी चेतन प्रयास के सीख जाते हैं। और साथ ही यह भी जानते हैं कि वे बहुत सी ग़लतियाँ भी करते हैं जो समय के साथ चली जाती हैं।

उसी तरह से अंग्रेजी या कोई भी नई भाषा सीखते वक्त बच्चे जो ग़लतियाँ करते हैं वे उनकी अज्ञानता नहीं बल्कि ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया की सूचक हैं। उदाहरणतः— जब कोई बच्ची कहती है 'I caught the ball' तो हमें यह समझना चाहिए कि उसने अंग्रेजी में भूतकाल का '-ed' वाला नियम पकड़ लिया है। और वह इस नियम को सब जगह प्रयोग में ले रही है। हालाँकि समय के साथ जैसे-जैसे वह अपने आस-पास के लोगों को 'caught' बोलते हुए सुनेगी या पढ़ेगी, तो वह स्वयं समझ जाएगी की 'catch' के संदर्भ में यह नियम समान रूप से लागू नहीं होता।

**Think :** क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि क्यों हम अपनी मातृ भाषा (जो घर पर बोली जाती है) बिना किसी सचेत प्रयास के सीख जाते हैं?

यह इसलिए क्योंकि इस भाषा को सीखने के लिए हमारे आस-पास बोलने, सुनने व सीखने के बहुत से अर्थपूर्ण संदर्भ होते हैं। यह हमारे प्रियजनों के संवाद की भाषा है। हमारी आम जीवन और ज़रूरतों से जुड़ी है। शुरू से ही बड़े लोग इस भाषा में हमसे बात करते हैं। सभी खेल गीत व बालगीत, चुटकुले, कहानियाँ, पहेलियाँ आदि हम इसी भाषा में सुनते और सीखते हैं। अतः इस भाषा से सहज ही एक रिश्ता बन जाता है और इसे उपयोग करना हमारे लिए स्वाभाविक होता है।

पर अब सवाल यह खड़ा होता है कि कोई भी भाषा अगर हम एक सहज और अर्थपूर्ण वातावरण में सीखते हैं, तो अंग्रेजी सीखते समय केवल प्रश्न उत्तर याद करना, व्याकरण के नियम रटना या ग़लतियों पर बार-बार डाँटना कहाँ तक सहायक होगा? क्या ऐसी दबावपूर्ण और बच्चों के जीवन से कटी हुई प्रक्रियाएँ बच्चों को भाषा अर्जन के लिए एक रोचक और कारगर माहौल दे सकती हैं?

#### **Activity-5**

Sit with your friends and discuss about what kind of teaching learning environment would you like to create in your class to facilitate English language acquisition among your children.

Write them below. One has been done for you.

1. Doing English poems and rhymes regularly.

2. \_\_\_\_\_
3. \_\_\_\_\_
4. \_\_\_\_\_
5. \_\_\_\_\_
6. \_\_\_\_\_

#### **Answer the following questions:-**

1. What are the different forces/factors that led to the flourishing of English in India?
2. English is now a part of the Indian Languages. Do you agree? Support your views by giving example of your own languages.
3. How can we help people improve their language abilities?
4. Ramesh believes that people who make mistakes while speaking English language, are foolish and we must laugh at them so that they will work harder and stop making mistakes. Then they will start speaking English language perfectly. Do you agree with Ramesh. Support your views.



## UNIT - 2

## Learning English

## 2.1 Using language freely

- (i) Activities based on 'rhymes'.
- (ii) Activities based on 'talk'.
- (iii) Activities based on 'role-plays'.

## 2.2 Fun with words

## 2.3 Reading and understanding text

## 2.4 Writing:

Guided writing, descriptions, picture composition, narrations, story writing, paragraph writing, note making

## 2.5 Projects:

- (i) Role play and dramatization
- (ii) Making a presentation
- (iii) Reviewing a book
- (iv) Diary writing

## जरा सोचें.....

- क्या अंग्रेजी सीखना-सिखाना आपको एक ऊबाऊ और मुश्किल प्रक्रिया लगती है?
- क्या किसी नई भाषा को सीखना हमेशा एक भयावह अनुभव होता है?
- क्या भाषा सीखने की हमारी 'समझ' सही है?
- क्या अंग्रेजी भाषा सीखने या सिखाने की प्रक्रिया को रोचक बनाया जा सकता है?



ऐसे ही कुछ सवालों के जवाब हम इस पाठ में खोजेंगे।

साथ ही इस पाठ में हम अंग्रेजी सुनेंगे, पढ़ेंगे, लिखेंगे और बोलेंगे।

पिछले वर्ष हमने देखा कि किस प्रकार से सहज वातावरण में हम अपनी मातृभाषा सीख जाते हैं। कोई भी नई भाषा ऐसे सहज और सहायक वातावरण मिलने पर सीखी जा सकती है और अंग्रेजी भाषा कोई अपवाद नहीं। अतः इस पाठ को पढ़ते समय और इसमें दी गई गतिविधियाँ करने से पहले सर्वप्रथम अपने मन से हिचक को बाहर निकाल दें और बेझिझक होकर अंग्रेजी भाषा का इस्तेमाल करें। निश्चित रूप से इस पाठ को पढ़ने में आपको मजा आएगा।

चार वर्ष की एक बच्ची बड़ी ही आसानी से अपने परिवेश में बोली जाने वाली सारी भाषाएँ सीख लेती है। पर जब बात स्कूलों में अंग्रेजी सीखने की हो तो उसी बच्चे को बहुत परेशानी आती है। ऐसा क्यों? इस प्रश्न के जवाब में अक्सर लोग यह कहते हैं कि अंग्रेजी हमारे परिवेश का वैसा अंग नहीं है जैसे कि अन्य भाषाएँ। बच्चे तो सिर्फ स्कूल में ही अंग्रेजी सुनते हैं।

पर हमने पिछली इकाई में देखा कि अंग्रेजी हमारे भाषा का एक अटूट अंग बन चुकी है। हमारे रोजमर्रा की ज़िन्दगी में अनेक शब्द अंग्रेजी के हैं। यह बात तो ठीक है कि हमारे परिवेश में फ़र्स्ट से अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या कम है; लेकिन इसका मतलब यह नहीं निकलता कि अंग्रेजी सीखना असंभव है। ज़रूरत है तो केवल सही दिशा में प्रयास करने की।



# LANGUAGE

(at a glance)

## IMPORTANCE

1. LANGUAGE IS A MEDIUM FOR COMMUNICATION
2. VEHICLE OF CULTURAL OR RELIGIOUS ENLIGHTENMENT.
3. LANGUAGE OF THE LEGAL SYSTEM, HIGHER EDUCATION, ADMINISTRATIVE NETWORK, SCIENCE AND TECHNOLOGY, TRADE AND COMMERCE
4. LINK LANGUAGE ON INTERNATIONAL PLATFORM

## SKILLS

- A. RECEPTIVE
  1. LISTENING
  2. READING
- B. PRODUCTIVE
  1. SPEAKING
  2. WRITING

## COMPONENTS

- A. VOCABULARY
- B. STRUCTURE

## CHARACTERISTICS

1. VERBAL & VOCAL
2. SOCIAL PHENOMENON
3. MEANS OF COMMUNICATION
4. NON-INSTINCTIVE, CONVENTIONAL
5. ARBITRARY
6. SYMBOLIC
7. SYSTEMATIC
8. UNIQUE
9. LINGUISTIC & COMMUNICATIVE COMPETENCE
10. HUMAN & STRUCTURALLY COMPLEX

## STATUS

- *ENGLISH IS THE SECONDARY OFFICIAL LANGUAGE*
- *INDIAN LAW DEFINES NO NATIONAL LANGUAGE*

## SYNTAX

THE ARRANGEMENT OF WORDS AND PHRASES TO CREATE WELL-FORMED SENTENCES IN A LANGUAGE.

## SEMANTICS

THE STUDY OR SCIENCE OF MEANING IN LANGUAGE.

इस इकाई में हमने यही कोशिश की है कि आपको ऐसी गतिविधियों के उदाहरण दें जिनमें आप अधिक से अधिक अंग्रेजी भाषा का इस्तेमाल कर पाएँ। आप अपनी तरफ से भी अन्य गतिविधियाँ सोचें और जोड़ें। अपनी कक्षा के बच्चों के साथ इन्हें कर के ज़रूर देखिए.....

आप सोच रहे होंगे कि क्या बस यह एक इकाई पढ़कर सब भाषा सीख जाएँगे? नहीं! सिर्फ इस इकाई को पढ़ने से काम नहीं चलेगा। यह इकाई बस आपको ऐसे मौकों से अवगत कराएगी जिससे आप भाषा सीख सकते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से न केवल भाषा से संबंधित विभिन्न कौशलों का विकास होगा बल्कि व्याकरण की भी समझ बनेगी। इसका एक अर्थ यह भी है कि व्याकरण को अलग से न देखकर भाषाई गतिविधियों से जोड़कर देखा जा रहा है। इनकी सहायता से ऐसे मौके ढूँढ़ें जो आपको और बच्चों को अंग्रेजी का इस्तेमाल करने में मदद करें। पाठ को पढ़ते समय यह भी याद रहे कि गलतियाँ सीखने की सीढ़ियाँ हैं।

## 2.1 Using language freely

This unit is to help us learn and use language. The unit begins with a framework of how language is learnt by free usage. There are several activities that have to be tried by all of you. These simple activities are designed for initiating conversations and helping you get over your hesitation. The activities include simple greetings of different kinds and on different occasions, seeking information about whereabouts, choices, etc through simple questions. Slowly, they would extend to narrating events, describing things, or speaking on some topics. It would also extend to discussions on issues which you know well. Any language is learnt by use.

The aim of this unit is to develop a taste for English language, be confident in using it and learn to enjoy its literature. So, the facts that language is learnt by its use and errors are a part of learning a new language are emphasized in 'word and practice' throughout the unit.

हमारा स्वयं का भाषा सीखने का अनुभव व किसी छोटे बच्चे को भाषा सीखते हुए देखना हमें यह भली-भाँति बताता है कि हम भाषा का इस्तेमाल उसके व्याकरण के नियम सीखने से बहुत पहले कर देते हैं। ठीक इसी प्रकार हम अंग्रेजी या अन्य कोई भी भाषा उसके इस्तेमाल से ही सीखते हैं, व्याकरण के नियम पढ़कर नहीं। इसलिए अंग्रेजी सीखने के दौरान गलतियाँ होना स्वाभाविक है।

अंग्रेजी भाषा को ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग करने के अवसर बनाएँ और अंग्रेजी भाषा सीखने के लिए यह ज़रूरी है कि हम अपने साथियों, सहपाठियों, परिवार के सदस्यों के साथ भी इस भाषा का इस्तेमाल करें। शुरुआत में ऐसा करने में थोड़ी हिचकिचाहट होगी परन्तु धीरे-धीरे आप सहजता के साथ अंग्रेजी का इस्तेमाल कर पाएँगे।

आगे कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं जिनमें आप अंग्रेजी भाषा का ज़्यादा से ज़्यादा उपयोग करेंगे।

### (i) Activities based on rhymes (बालगीत आधारित गतिविधियाँ)

Given below are some rhymes. Sing them aloud with actions and do the activities. Also try and engage some of your friends or your students in them.

- Two little hands to clap, clap, clap.  
Two little legs go tap, tap, tap;  
Two little eyes are open wide,  
One little head goes side to side.



a) Identify the rhyming words used in the given rhyme.

---



---

b) Shall we extend this rhyme by adding all the other body parts?

You can use the words from the help box or think of other parts of body and their functions.

| Parts of body | Functions                           |
|---------------|-------------------------------------|
| mouth         | speak, eat, tell, chew, bite, ..... |
| nose          | smell, breathe, .....               |
| tongue        | taste                               |
| legs          | run, jump, kick, .....              |
| fingers       | write, grip, hold, .....            |

---



---

c) Underline all the words which tell some actions. These words are also called as Action words or Verbs. Write them below. For example - clap

---

2. Row, row, row your boat,  
Gently down the stream,  
Merrily, merrily, merrily, merrily,  
Life is but a dream.

*Kishore has added one stanza to the above rhyme.*

Ride, ride, ride your cycle  
Slowly down the street,  
Merrily, merrily, merrily, merrily,  
Life is but a treat.

a) Now can you add one more stanza to it? Let's try-

---



---



---



---



b) Underline the verbs used in the above stanzas.

c) The words which describe verbs are adverbs.

Ex: 'merrily' is an adverb - (How does he ride the bicycle? - merrily)

Underline the adverbs used in the following sentences-

He drives his car slowly.

We read the stories quickly.

Manish runs fast.

3. Cats sleep anywhere,  
 Any table, any chair,  
 Open drawer, empty shoe,  
 Anybody's lap will do.  
 Fitted in a cardboard box,  
 In the cupboard with your frocks.  
 Anywhere! They don't care!  
 Cats sleep anywhere.



b) Discuss

- What do cats do?
- Where else can cats sleep?
- What is the difference between a cat and a dog?
- Find words which sound similar to the given words and write them below:

|       |        |
|-------|--------|
| box   | frocks |
| chair |        |
| shoe  |        |
| edge  |        |

c) Think of some animals and the places they live in. For example:-

|         |   |       |
|---------|---|-------|
| sparrow | - | nest  |
| _____   | - | _____ |
| _____   | - | _____ |
| _____   | - | _____ |

d) Continue the pattern:

cap, flap, lap, \_\_\_\_\_  
 \_\_\_\_\_

e) Complete the following sentences using each of the words from the box. These words are 'prepositions' which tell us about the position.

in | on | under | behind | near | in front of

The cat is sleeping \_\_\_\_\_  
 The cat is sleeping \_\_\_\_\_  
 The cat is sleeping \_\_\_\_\_  
 The cat is sleeping \_\_\_\_\_  
 The cat is sleeping \_\_\_\_\_  
 The cat is sleeping \_\_\_\_\_

To complete the sentences, you can take help from the poem.

4. Crunch, crunch, crunch,                      Come rabbit, come here,  
 Carrots they munch,                              There is nothing for you to fear.  
 And hop, hop, hop,                                Your eyes go blink, blink,  
 Don't they ever stop?                            I wonder what you think?

a) What does a rabbit do?

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

- b) Underline the words which you think are new in this rhyme and search their meanings.  
 c) Naming words are called as 'nouns'. Nouns are the names of persons, places, things etc. In the above rhyme, rabbit is a noun. (It's the name of an animal).  
 Write the other nouns used in the rhyme.

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_

5. Oh! Pretty butterfly,  
 Why can't we fly,  
 Up into the sky,  
 Just you and I?



Red, yellow and white,  
 Your wings are so bright,  
 I know you love flowers,  
 On them you sit for hours.



- a) Replace the word 'butterfly' with the name of your favourite animal and recreate the rhyme.

- b) List the nouns used in the above rhyme.

\_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_



**(ii) Activities based on 'talk' (बातचीत आधारित गतिविधियाँ)**

Look at the opinions of different people regarding 'learning a language'. Put a tick (3) next to those you agree with; and a cross (5) against those you disagree with.

I just like to watch movies and serials in English language for a long time before I speak.

I would like to talk first with other students who are trying to learn English like me.

I like to go abroad and talk with the native people there.

I hate grammar. It's boring and I forget the rules.

I like to hear new language and see it in written form too.

I don't like people who tries to find mistakes when I speak.

| I can learn a language when ... | I can't learn a language if ... |
|---------------------------------|---------------------------------|
|                                 |                                 |
|                                 |                                 |
|                                 |                                 |
|                                 |                                 |
|                                 |                                 |

In the table above write your opinions/experiences regarding learning a language.

1. Please discuss with your friends by selecting a topic from the following:

favourite fruit/food item.

my favourite story/poem - what makes it favourite.

an interesting TV programme.

a memorable incident of my childhood.

a piece of local news  
Ex: Mr. Ramesh married Leela. Mr. Singh built a new house, somebody broke the window pane of the classroom window etc. - real news from your locality.

Please note that you are expected to speak in English, but if you use some Hindi words or sentences, it is absolutely fine. While conversing, if you think you are making mistakes, don't worry. Continue with the conversation, help and encourage each other. This is how we learn a language!

Now write down about a topic that you have discussed.

---

---

---

---

---

---

---

---

2. Here are some examples of conversations between two persons, to give you an idea about how people interact in different situations.

a) **Getting to know each other:**

A. Two D. Ed. students are interacting at 'Inter-college dancing Competition'.

Sachin : Hello! My name is Sachin. What's your name?

Vaibhavi : My name is Vaibhavi.

Sachin : Great! Where are you from?

Vaibhavi : I'm from Ambikapur. Where are you from?

Sachin : I'm from Bastar.

Vaibhavi : Are you performing today?

Sachin : Yes. What about you?

Vaibhavi : Me too. All the best!

Sachin : Thank you! Wish you the same.

**Activity-1**

Now, imagine that Sachin and Vaibhavi meet again at railway station. Write a short conversation (in English) between them and share with other friends/ your students/ colleagues.

---

---

---

---

---

---

---

---

Here is another example:-

Anil : Hi! How are you?  
Ahmed : Hello! I'm fine.  
Anil : I always find you in the library. You study very hard!  
Ahmed : Reading is my hobby. I love to read books about different places.  
What do you like?  
Anil : I love painting.  
Ahmed : That's interesting! I would like to see some of your paintings.  
Anil : Sure!

**Activity-2**

If you meet Ahmed, what will you talk about? Imagine and write down the conversation.

---

---

---

---

---

---

---

**b) Between friends - offering and accepting help**

Kaushik is frustrated as his scooter is not starting. Anand offers to help him.

Kaushik : (Kicking his scooter) Oh, what a day! I've been kicking for five minutes.  
This scooter isn't starting. Oh God, I'm tired.  
Anand : Hi Kaushik! Having trouble with the scooter? May I help you?  
Kaushik : How kind of you, Anand!  
Please try your hand.  
Anand : (Tries for some time and then succeeds) Aah! Here we go.  
Kaushik : Oh, thanks Anand.

**c) Conversation : Dealing with a wrong number.**

The phone rings at Kartik's home.

Kartik : Hello.  
Caller : Hello, can I speak to Samarth, please?  
Kartik : I'm sorry. There is no Samarth here. May I ask you which number you  
have dialed?  
Caller : 2419673  
Kartik : No, this is a wrong number. This is 2419672.  
Caller : Oh, I'm sorry.  
Kartik : That's Okay.

**Activity-3**

a) Let's do this in pairs:

Given below are some short conversations. Extend them and write in your copies.

Reena : What is Abhay doing?

Suman : He is doing his homework.

Reena : But I saw him \_\_\_\_\_

Lalit : Can you speak in English?

Jaya : Yes, it's very simple.  
\_\_\_\_\_

b) Talk to your friends/students in English casually and see how long and how often you converse. You may tell and ask about your daily routine, your favourite actor/actress, your future plans etc.

Given below are some conversations. Read them aloud and tick the correct alternative.

• Nikhil : Do you remember what time our Math class starts?

Nikita : Sure, at quarter to three.

What does Nikita mean?

- She will tell the student the time for the class later.
- Class begins at 2:45.
- They are going to be late for their class.
- Class starts at 3:15.

• Manisha : Gayatri just called and said everybody is already at the restaurant waiting for us before they order.

Suman : Oh, we'd better make a move.

What does Suman's statement mean?

- She isn't hungry right now.
- They should hurry.
- They should ask the others to order their food for them before they arrive.
- She wishes they lived closer to the restaurant.

**(iii) Activities based on 'role play'**

Read the following role-play activities. Select any one of them. Think of the situation, write your dialogues try to enact this with your friends/ students/ colleagues. Do not worry about accuracy of dialogues. Express yourself freely in English.

You can also think of other situations or include few more characters in the same situation. You may use the local material for presenting your role play. This activity will give you opportunities to discuss in English in groups, think of dialogues, enact and remove the hesitation of using English in larger group.

- a) Imagine that one of you is a farmer. Other students ask questions about his/her daily routine, experiences etc.
- b) Imagine that, on a rainy day, a doctor and a thief take shelter in a roadside garage. Think about their conversation and enact.

- c) A student has lost a bag. His/her parents go with him/her to the police station. He/she is at the police station reporting it to the police.
- d) 2-3 friends are trying to watch a film on TV, but are interrupted by a series of visitors: a talkative friend, the neighbour who has lost his/her keys, a stranger who has mysteriously convinced that one of them is his childhood friend.
- e) One of you is a salesperson trying to sell few items. He/she goes to two houses and \_\_\_\_\_ (Then what happened think and act )

Did you enjoy these exercises?

.....

Now, let's write the following conversations:

- Suppose you have come to a new city to search for a job. You are searching for a room on rent to live. Write a conversation between you and your prospective land lord.
- Write a conversation between you (a teacher) and a parent during parents meeting.
- Write a conversation between you and your friend while making plan for a Sunday outing.

## 2.2 Fun with Words

किसी भी भाषा को सीखने व इस्तेमाल करने के लिए उस भाषा के शब्द जानना अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है। पिछली इकाई में हमने जाना की अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी में हम अनेक अंग्रेजी के शब्द सुनते और बोलते हैं।

इस खंड में हम अपनी अंग्रेजी के शब्द भंडार का प्रयोग करते हुए कुछ रोचक खेल खेलेंगे। ये खेल न केवल आपको अपना अंग्रेजी का शब्द भंडार विस्तृत करने में मदद करेंगे, बल्कि उन शब्दों का इस्तेमाल करते हुए नए-नए वाक्य बनाने और बेहतर अभिव्यक्ति में भी सहायक सिद्ध होंगे।

**नोट:-** नीचे दी गई गतिविधियों/खेलों में से अधिकतर में समूह कार्य होगा। तो ऐसे में आप अपने मित्रों/परिवार के सदस्यों या कक्षा में बच्चों के साथ ये गतिविधियाँ कर सकते हैं।

तो आइए, कुछ गतिविधियाँ करके देखें!

### 1. Word-webs

This is a simple game that can be played individually as well as in groups. Choose a theme and write it at the centre... Then think of words related to the theme and keep adding them to the web.

Then see how many words you could think of



Can you add some more words to the list ?Try out!

---



---

Now write a short paragraph using some words from the list!



2. **Antakshari (अन्ताक्षरी)**

- a) Make groups of 3 to 4 people.
- b) Select a theme - water/trees/myself/season/school/games/my sister .....
- c) Write it on the board/paper. (Let the theme be 'water').
- d) The first person says a word which starts with 'r' (last letter of water) But that word should also be related to the theme.

Water - rain

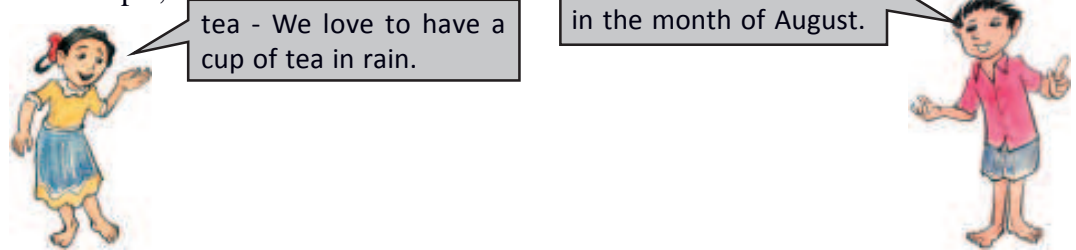
Then the second person thinks of a word starting with 'n' (last letter of rain) and still related with the theme of 'water'.

So, the chain may go on like this -

Water - rain- nature- environment - tea -august- traffic- cool-

If someone tells a word which you feel is not related to the theme,then ask that person to explain the relation.

For example,



In certain cases if the explanations are not very convincing, accept the word; don't worry too much about what's right or wrong.

- e) Keep playing and noting down all the words on the board/ paper.
- f) After playing categorise these words in the appropriate columns

| nouns                 | adjectives                             | verbs        | adverbs                    |
|-----------------------|--|--------------|----------------------------|
| naming words (Raipur) | words that describe a noun (beautiful) | action words | word which describe a verb |
| rain                  | cool                                   |              |                            |
| nature                |  |              |                            |
| water                 |  |              |                            |
| environment           |  |              |                            |
| traffic               |  |              |                            |

Now play with your friends/students using the theme of food/animals/raipur etc.

3. **Hidden words**

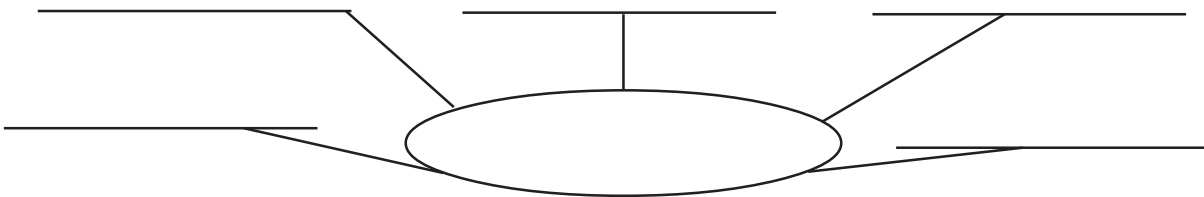
Look at the letters of the word 'education' - e, d, u, c, a, t, i, o, n. Now make as many words as possible from these letters.



**Note:** You can repeat a letter only as many times as it is there in the given word. E.g. 'n' is once in the word 'education' so whenever you make a new word, you can use 'n' only once. e.g. You can make the word 'note' but not 'nothing'. (Can you tell reason ?)

You may play this game with words like - newspaper, microwave, blackboard, comprehension, creativity. Think of some more words to play this game? Write them below -

Now select any one word and find out the words hidden inside it.



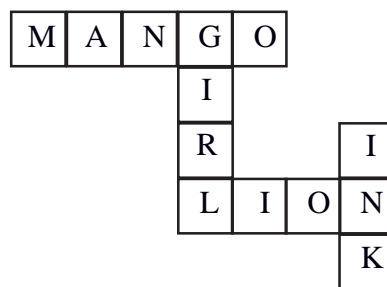
4. **Cross words**

You can play this game in pairs or in groups.

- a) One of the partners writes one word, e.g. 'mango' on the paper/board.
- b) The second person thinks of a word which has any one letter common with the letters of the word 'mango'.

Then the first person again thinks of a word which shares a letter with any letter of these words.

Continue building up the cross word alternating between horizontal and vertical words.



Now find a partner and extend this cross word on a piece of paper!

See how many words could you write!

5. **Time to rhyme**

Read the poem aloud-

Jack and Jill  
 Went up the hill,  
 To fetch a pail of water  
 Jack fell down  
 And broke his crown,  
 And Jill came tumbling after.

- a) List the Rhyming words - \_\_\_\_\_
- b) Let's try and write rhyming words for the word 'hill'.  
Some are given below. Add more on your own.

|       |        |         |        |
|-------|--------|---------|--------|
| hill, | chill, | pencil, | drill, |
|-------|--------|---------|--------|

- c) Now write down the rhyming words for the following words:

| sun | look | cool | bat | book |
|-----|------|------|-----|------|
|     |      |      |     |      |

- d) Now try and make a short poem using a few rhyming words. Try out and have fun!

For example,

My cat's name is Pook,  
Pook reads a book,  
The book has a hook.



A rat called Rook,  
Nibbles on the book,  
Gets hurt with the hook.

Pook catches it right,  
Then they have a fight.



I switch off the light,  
And they are out of my sight!

## 6. Expanding texts

This game is about creating meaningful text by 'expanding'. You may play this in pairs or groups. Start by writing one word on paper or blackboard. Group members write words one by one so as to create a meaningful story/paragraph or sentences.

One example is given below:-

|           |   |                                       |
|-----------|---|---------------------------------------|
| Student 1 | - | I                                     |
| 2         | - | go                                    |
| 3         | - | I go to                               |
| 4         | - | I go to school                        |
| 1         | - | I go to school everyday               |
| 2         | - | I go to school every day but          |
| 3         | - | I go to school everyday but yesterday |
| 4         | - | _____                                 |
|           |   | _____                                 |

You may change the punctuation marks, if required.

Keep on adding words (individually/ in pairs/ or in groups. You may get a paragraph or a story at the end.)

### 7. Say a word

This is a simple activity that can be done alone, in pairs or in small groups:

Take any object available in your surroundings, rotate it in the group and say a word about it for example, if you take on object like 'candle'.

Then your group may come out with the following words -

Hard, white, wax....

Try to say sentences using these words.

- This is a candle.
- It is white in colour etc...

Now play this game using the object bottle/pen/notebook etc.

**Note:** *No word/phrases/sentences should be repeated!*

### 8. Don't say 'Yes' or 'No'

This game can be played between two persons. So first, find a partner for yourself. Now one of you can start by asking questions and the other will respond.

The condition is that while responding, one cannot use 'yes' or 'no' and also cannot repeat a sentence said earlier.

For example -

- A-Is it raining?
- B- Let me see.
- B- Are you wearing a red suit ?
- A- It is red and black.
- A- Do you like apples ?
- B- Yes

Oops! She said 'yes'. So 'A' is the winner! Now A will start the game again.

9. **Weaving words**

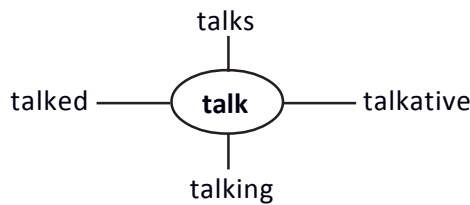
This is an interesting activity that you can do individually or in pairs. Take any sound and make as many words starting with it as you can -

Fill in the following table. One is done for you as an example.

|                  |      |      |      |
|------------------|------|------|------|
| Cl - Clown, Claw | Pl - | Tr - | St - |
|                  |      |      |      |

10. **More words**

This activity can be done in small groups. Think of a root word like 'talk'. Write all the words (one by one) that are derived from this word - (These words are called as derivatives of the root word. We get derivatives by adding suffix / prefix to the root words).



Now write sentences using these words

- a) He talks a lot.
- b) Yesterday, I attended a talk on 'diversity'.
- c) They talk loudly.
- d) Asif is talking to his mother.
- e) I am very .....

Given below are some root words. Write their derivatives and make sentences using those derivatives.

walk

place

suggest

permit



### 2.3 Reading and Understanding text

‘पढ़ना’ एक बहुत बड़ी अवधारणा है, जिसकी अनगिनत परतें हैं। हम केवल चित्र का अवलोकन कर उससे कुछ अर्थ संप्रेषित करने को भी पढ़ना कहते हैं, और कठिन निबंध को पढ़कर उसमें से अर्थ निकालने को भी! मूल बात यह है कि पढ़ने की प्रक्रिया केवल शब्दों का उच्चारण नहीं है, अपितु उन शब्दों में निहित अर्थ को समझना है।

जब हम कुछ पढ़ने की बात करते हैं, तो उसमें केवल उच्चारण करना ही नहीं होता, भाषा के लिखित रूप को समझने के लिए कुछ नियमों का पालन भी करना होता है, जो अंत में जाकर अर्थ निकालने की प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं। उदाहरण के लिए अगर हम अंग्रेजी भाषा में देखें तो इस भाषा को समझने के लिए आपको बाएँ से दाएँ पढ़ना शुरू करना होगा, जबकि उर्दू के लिए हमें उल्टा करना होता है। पढ़ते समय यह भी होता है कि हम एक वर्ण के ऊपर ध्यान न देकर पूरे शब्द या शब्दों के समूह से अर्थ निकालते हैं। और आपको यह जान के अचरज होगा कि कक्षा में आने वाली बच्चे इन नियमों को जानती है और इनका पालन भी करते हैं।

#### चलिए एक उदाहरण देखते हैं :

मेरा नाम अंजली है। मैं दुर्ग में स्थित एक स्कूल देखने गई थी। वहाँ पर बच्चों को पढ़ने के लिए किताबें दी जा रही थीं। मैंने देखा कि सब बच्चों को किताबें दी जा रही थीं, चाहे उन्हें पढ़ना आता हो या नहीं। वहाँ एक बच्चा था, भरत। भरत को लिखना-पढ़ना नहीं आता था। उसने किताब उठाई और उसे देखना शुरू कर दिया। किताब में कहानी दी गई थी। कहानी की हर पंक्ति के साथ जुड़ती तस्वीरें थीं। उसने किताब खोली, पहले पन्ने से शुरू किया। वह एक के बाद एक पन्ने पलट रहा था, उसकी नजर बाएँ से दाएँ की ओर चल रही थी। वह अपने दोस्त को चित्रों की मदद से कहानी सुना रहा था।

आइए, अब एक और पहलू को समझने की कोशिश करते हैं कि पढ़ने को लेकर हमारी कक्षाओं में कौन सी प्रक्रियाएँ अपनाई जाती हैं। कक्षा 1 का ज्यादातर समय, और कक्षा 2 का कुछ समय बच्चों को वर्णमाला रटवाने में जाता है। इस बात पर गौर किया जाए कि वर्णमाला रटवाने के मुख्यतः दो उद्देश्य हो सकते हैं। पहला कि बच्चों को सारे अक्षर याद हो जाएँ और दूसरा कि बच्चे हर एक अक्षर के उच्चारण को पहचान जाएँ। पर सिर्फ इन दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इतनी लम्बी और नीरस प्रक्रिया करवाने की क्या जरूरत है?

यही सब काम हम बच्चों को सार्थक सन्दर्भ देकर भी कर सकते हैं। बच्चे के अपने सन्दर्भ से जुड़े हुए शब्दों और वाक्यों का इस्तेमाल कक्षा में किया जाए। बच्चों की मदद से कहानियाँ बनाई जाएँ, शब्द लिखें और उन्हीं शब्दों और कहानियों से जुड़ी दूसरी गतिविधियाँ करवाई जाएँ, जिससे बच्चे खुद को जोड़ पाएँ।

#### गतिविधियों के बारे में :

आगे दी गई गतिविधियाँ आपको अपनी अंग्रेजी की समझ बढ़ाने के लिए दी गई हैं। इन गतिविधियों को थोड़े संशोधन के बाद आप बच्चों के साथ, उनकी कक्षा के अनुसार इस्तेमाल कर सकते हैं। एक बार आप खुद इन गतिविधियों के साथ सहज हो जाएँ, फिर आप इनके जैसी और भी गतिविधियाँ बच्चों की कक्षा को ध्यान में रख के बना सकते हैं।

इनमें से कुछ गतिविधियों में सार लेखन के अभ्यास भी रखे गए हैं। किसी भी पाठ की समझ को और पुख्ता करने के लिए उसका सार लिखना एक महत्वपूर्ण गतिविधि हो सकती है। सार लिखने के लिए आपको उस पाठ को ध्यान से पढ़ना पड़ेगा, उसके मुख्य बिन्दुओं पर विचार करना पड़ेगा और फिर उसे अपने शब्दों में लिखना होगा।

किसी पाठ के अनुवाद के लिए आपको यह अच्छे से समझना होगा कि उस पाठ का भावार्थ क्या है। यहाँ शब्दों का अनुवाद न होकर अपितु उस पाठ में दिए गए विचारों का अनुवाद करना है। अनुवाद करने की गतिविधि के अन्तर्गत आपको विविध पाठों के साथ काम करने का मौका मिलेगा, जिसमें कहानियाँ, कविताएँ, विवरण आदि होंगे।

आप जितने अलग-अलग प्रकार के पाठों के साथ काम करेंगे, उतना ही आपकी पढ़ कर समझने की क्षमता का विकास होगा। भाषा सीखने-सिखाने का एक प्रमुख पहलू यह भी है कि हम किसी भी प्रकार की पाठ्य सामग्री को समझकर अपनी समझ बढ़ा सकते हैं।

इन वाक्यों का शब्दशः अनुवाद कीजिए—

1. Keep in touch.
- 2.
- 3.
- 4.

### Lets think:

How will you help your students engage with different texts on different levels? Please list some more activities which you can do for better understanding of the text.

#### 1. **Kitu in Kitchen**

"Ma, you are busy. May I make the chapatis today?" asked Kitu.

"Thank you for thinking of helping me, but no Kitu", said Ma.

"But why can't I cook?" asked Kitu.

"Because you are too small to cook", said Ma.

"Ma, please let me know, am I big or am I small?" asked Kitu.

Mama smiled and asked, "Why are you asking me this, Kitu?"

Kitu said, "When I want to go out on my tricycle to the market, you tell me that I should not go out alone because I'm too small and I may fall".

"Very true, Kitu" said Ma.

Kitu said, "But when I want Mitu's toys, then you tell me you are a big boy , you should not make him cry, so, please tell me Ma whether I am big or small."

Ma said, "Kitu, the fact is that you are six years old. For many things you are too small, like going in the kitchen and trying to open the gas burner or cutting vegetables with a knife, you need to be bigger to do those things well".

"Why Ma?" asked Kitu.

Ma said, "At the age of six years you may not be able to handle a knife well, you can cut yourself as you may not be so careful. I love you so I don't want you to feel pain. So, I worry about you hurting yourself and tell that you are small".

"Then how am I big sometimes?" asked Kitu.

Ma said, "You have learnt many things in six years. You are the elder brother of your younger brother, Mitu, who is only one year old. So, you are big."

a) Now try to answer the following question.

- How old is Kitu?
- Does Kitu's mother allow him to cook? Why?



- How else can Kitu help his mother?
  - How do you help your parents at home?
- Try to frame some more questions.*

b) The following sentences are written in simple present tense (V1 form of the verb). Convert them into Simple Past Tense and Past Continuous tense. One has been done for you.

| S. No. | Simple Present Tense                   | Simple Past Tense | Present Continuous Tense |
|--------|--|-------------------|--------------------------|
| 1      | I eat food.                            | I ate food.       | I am eating food.        |
| 2      | Nirag tells good stories.              |                   |                          |
| 3      | Shashi buys many electrical items.     |                   |                          |
| 4      | Lata keeps her ornaments in bank.      |                   |                          |
| 5      | I drink a lot of water in the morning. |                   |                          |
| 6      | You write beautifully.                 |                   |                          |

Do you see any pattern in sentences of Present Tense, Past Tense and Present Continuous Tense?

What is that pattern?

Simple Present Tense: .....

Simple Past Tense: .....

Present Continuous Tense: .....

## 2. A mime in a zoo

One day an out of work mime<sup>1</sup> is visiting the zoo and attempts to earn some money as a street performer. As soon as he starts to draw a crowd, a zoo keeper grabs him and drags him into his office. The zoo keeper explains to the mime that the zoo's most popular attraction, a gorilla, has died suddenly and the keeper fears that attendance at the zoo will fall off. He offers the mime a job to dress up as the gorilla until they can get another one. The mime accepts.



So the next morning the mime puts on the gorilla suit and enters the cage before the crowd comes. He discovers that it's a great job. He can sleep all he wants, play and make fun of people and can draw bigger crowds than he ever did as a mime. However, eventually the crowds get tired of him and he gets tired of just swinging on tires. He begins to notice that the people are paying more attention to the lion in the cage next to him. Not wanting

to lose the attention of his audience, he climbs to the top of his cage, crawls across a partition, and dangles from the top to the lion's cage. Of course, this makes the lion furious, but the crowd loves it.

1. A mime is an actor who communicates entirely through facial expressions.

At the end of the day the zoo keeper comes and gives the mime a raise for being such a good attraction. Well, this goes on for some time, the mime keeps taunting the lion, the crowds grow larger, and his salary keeps going up. Then one terrible day when he is dangling over the furious lion, he slips and falls. The mime is terrified.

The lion gathers itself and prepares to pounce. The mime is so scared that he begins to run round and round in the cage with the lion close behind. Finally, the mime starts screaming and yelling, "Help, Help me!", but the lion is quick and pounces. The mime soon finds himself flat on his back looking up at the angry lion and the lion says, "Shut up you idiot! Do you want to get us both fired?"

- a) What was the zoo keeper afraid of?
- b) Why was the mime's salary raised frequently?
- c) What does the story tell you about the zoo keeper?
- d) Write 2 sentences about the zoo mentioned in the story.
- e) Punctuate the following:

The monkey said I will climb up the tree and give you a guava

### 3. Read the following

Indian Festivals, celebrated by varied cultures and through their special rituals, add to the colours of the Indian Heritage. Some festivals welcome the seasons of the year, the harvest, the rains, or the full moon. Others celebrate religious occasions, the birthdays of divine beings, saints, and gurus (revered teachers), or the advent of the New Year. A number of these festivals are common to most parts of India. However, they may be called by different names in various parts of the country or may be celebrated in a different fashion.

Many festivals celebrate the various harvests; remember great historical figures and events, while many express devotion to the God and Goddesses of different religions.

Every celebration is centered around the rituals of prayer, seeking blessings, exchanging goodwill, decorating houses, wearing new clothes, music, dance and feasting.

In India every region and every religion has something to celebrate. The festivals reflect the vigour and life-style of its people. Vibrant colours, music and festivity make the country come alive throughout the year.

The emphasis laid on the different festivals differs in different parts of the country. For instance, Holi is celebrated with pleasure in the north, and although it is also observed in the western and eastern parts of India, in the south it is almost unknown. There are also a few regional festivals like Pongal in Tamil Nadu; Onam in Kerala and the various other temple festivals devoted to the specific patron Gods and Goddesses of the temples, which are celebrated exclusively in those areas, which may be limited to one or a few villages.

- a) Suggest a suitable title.
- b) Name any 2 festivals mentioned in the above paragraph and write a few sentences about them.
- c) Discuss with your friends about your local festival. Use the following points for discussion:
  - When do we celebrate?
  - How do we celebrate?
  - Why do we celebrate?
- d) Now write a paragraph on anyone of the local festival you like most.

#### 4. Now, let's read the following story

One night, a donkey met a jackal and became friends with him. Both of them went out in search of food. They found a field full of cucumbers and had them to their full. They were happy to find a nice place for their food and decided that they would come daily to eat cucumbers. Now, daily they came to the field to have cucumbers. Soon, the donkey started looking healthy and fat.

Once, after a tasty meal of cucumbers, the donkey was extremely happy. He was so happy that he got an intense desire to sing a song. He told the jackal that he was overwhelmed and wanted to express his happiness with a melodious song. The jackal immediately replied, "Don't be a fool. If you sing, the guards sleeping in and around this field will wake up and beat us black and blue with sticks".

The donkey insisted on singing. The jackal again warned him not to do any foolish act. The donkey said, "You are a dull fellow. Singing makes one happy and healthy. No matter what comes, I'll definitely sing a song." The jackal told him that his voice was not sweet. The donkey thought that the jackal was jealous of him. The jackal once again warned him that if he would sing, the guards would come and reward him in the way, he would not like.

But the donkey could not stop himself from singing. Seeing the donkey singing, jackal said to the donkey, "Friend, wait a minute. First, let me jump over to the other side of the fence for my safety." The jackal decided to wait outside the garden. On hearing a donkey braying in the field, the guard woke up from his sleep. He picked up his stick lying by his side and rushed out to beat him. The donkey was braying happily, unknown about the danger.

The angry guard found the donkey and beat him so mercilessly that the donkey was physically incapacitated temporarily. Somehow, the donkey managed to drag himself out of the field to the waiting jackal. The jackal looked at the donkey and said in a sympathetic tone, "I am sorry to see you in this pathetic condition. I had already warned you, but you didn't listen to my advice." The donkey realized his mistake and felt sorry for not listening to the good advice of jackal.

Now, let's guess and write the conversation that might have taken place between the jackal and the donkey when -

- They met for the first time.
- The jackal tried to stop the donkey from singing.
- The donkey realized his mistake.

Now categorise the above questions from all the passages into 'Understanding the text' and 'going beyond the text'.

## 2.4 Writing

लिखना मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। लिखना कभी-कभी अपने विचारों को दोस्तानापूरण तरीके से दूसरों तक पहुँचाने के लिए होता है, तो कभी लेखक इसे एक शस्त्र के रूप में इस्तेमाल करके विचार क्रांति भी लाते हैं। लिखना विचारों को सहेजता है, व्यवस्थित करता है। यह हमें खुशी देता है, प्रेरित करता है और कई घंटों, दिनों तक हमें वैचारिक प्रक्रियाओं में बाँधे रख सकता है। लेखन हमें संतुष्टि की अनुभूति कराता है।

### सोचें:-

- लिखते समय दिमाग में क्या-क्या प्रक्रियाएँ चलती हैं?
- लिखना हमें किस प्रकार से मदद करता है?



लिखने की प्रकृति बोलने की प्रकृति से जुदा होती है। हालांकि दोनों ही अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। लिखने के शुरुआती दौर में गलतियों का डर बच्चों की उलझन और झिझक का एक प्रमुख कारण बनती हैं। और ये झिझक या डर मात्राओं की त्रुटि, भाषाई व्याकरण, विस्तृत शब्द भंडार की कमी, वाक्य संरचना या विषय-वस्तु आदि के संदर्भ में हो सकती है। आमतौर पर देखने में आता है कि अंग्रेजी भाषा के संदर्भ में यही डर दो गुना हो जाता है।

आईए, लिखने को लेकर अपनी हिचक दूर करें!

Given below are a few exercises for writing which include writing messages, descriptions, picture compositions, writing stories etc. Do not worry about the grammatical errors. Use dictionaries to see meanings, usage of words, spellings and find new words.

1. **Messages**

**Think :** Around how many messages you receive or send in a day/ Are all messages of the same kind?

कुछ संदेश विज्ञापनों के लिए, कुछ सूचनाओं के लिए, तो बहुत कुछ व्यक्तिगत भी होते हैं। आइए अपने मोबाइल फोन के मैसेज को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटें और सबमें कुछ उदाहरण लिखें:-

| for advertisement | information | personal |
|-------------------|-------------|----------|
|                   |             |          |

Now let's create one message for each category.

| for advertisement | information | personal |
|-------------------|-------------|----------|
|                   |             |          |

इसी प्रकार बच्चों के द्वारा कक्षा के दौरान कुछ छोटे संदेश कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखकर एक दूसरे को देते हुए आपने देखा होगा। अक्सर हम बच्चों के इन गतिविधियों के लिए दण्ड भी देते हैं। पर क्या इसे एक सार्थक गतिविधि के रूप में कक्षा के भीतर देखा जा सकता है?

Ask your children to write about any one thing they like in their friends. They may write in words or small sentences in English. These messages need not be completely in English. They can use

Hindi words, give them freedom to write and express. It is important for you to recognize that as a teacher you must continue to write and encourage children to write. Do share the messages in the class and appreciate their efforts. Can you also ask to write such messages for some other people also?

## 2. Games

- a) We could create a treasure hunt for which clues could be indicated through words as well as signs. Hide something at a particular place. Write the clues to reach that place on chits of paper. Keep each of these chits at different places, giving clues to reach that hidden object. This way children will learn to follow instruction in English and enjoy the game.
- b) We could think of a game that gives each person a chance to write about an object in one sentence. This sentence should be such that the team members are able to read it and identify the object. The similar kind of game could also be used for action words/verbs where a child reads the name of the action and performs it; while the rest of the children try to guess what is written on the paper.

Think of designing similar activities which will provide you and your students the opportunities to write words and simple sentences in English.

The tasks above are examples of writing simple and short texts which help in communicating simple ideas. We would, now move forward to little more complex writing.

## 3. Cloze

Meena loves to tell stories and Leena writes these stories neatly. While writing, Leena has forgotten some words. Help her by filling in the blanks.

- a) A boy and a girl were \_\_\_\_\_ together. The boy had a collection of \_\_\_\_\_. The girl had some \_\_\_\_\_ with her. The boy told the girl that he will give her all his \_\_\_\_\_ in exchange for her \_\_\_\_\_. The girl \_\_\_\_\_.  
The boy kept the \_\_\_\_\_ aside and gave the rest to the girl. The girl gave him all \_\_\_\_\_ as she had promised.  
That night, the girl slept peacefully. But the boy \_\_\_\_\_ as he kept thinking \_\_\_\_\_.
- b) A \_\_\_\_\_ lived in a pond. He had two \_\_\_\_\_ as friends. One day, they found that the pond was drying. So, they decided to go to some other place. The \_\_\_\_\_ requested them to take him also with them. So, they asked the \_\_\_\_\_ to take a stick. The two friends held the ends of the stick in their beaks and the \_\_\_\_\_ held the middle of the stick and they flew away to a safer place.
- c) A \_\_\_\_\_ entered the nest of a \_\_\_\_\_. When the \_\_\_\_\_ asked him to leave, he didn't. He said that it was his nest. Both of them went to \_\_\_\_\_ to get a solution. \_\_\_\_\_ was very wicked.

He told them to come near to tell their problem. As they went near him, he \_\_\_\_\_ both of them and \_\_\_\_\_ them.

4. **Writing Descriptions**

अपने आस-पास हम कई तरह की चीज़ें देखते हैं। इन सबके बारे में हम लोगों बातचीत भी करते हैं, इनका वर्णन भी करते हैं। इस तरह के वर्णन में इनकी बनावट, आकृति, आकार, रंग, वस्तुस्थिति, इसके आस-पास के क्षेत्र व स्वयं के भाव अनुभूति व अन्य अनुभवों आदि को साझा करते हैं।

प्रस्तुत गतिविधि में इसी तरह के वर्णन को अंग्रेजी में लिखना है:-

In the following example, a hut is described. Read the description.  
Add more points to it if you wish.



This is a hut. Its roof is made of hay. Its wall is of mud. I really like it and it looks beautiful. A hut is cool from inside. Whenever I see a hut, I feel like spending a few days in it.

Now let's describe the following:




---



---



---




---



---



---




---



---



---

5. **Picture Composition**

- a) नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से देखें। प्रत्येक के लिए एक-एक पैराग्राफ़ लिखें एवं पात्रों, स्थानों व वस्तुओं के नाम भी लिखें। वर्तमान में इनके बारे में लिखने के साथ-साथ भविष्य में इनकी क्रियाओं की भी अटकलें लगाएँ।



---

---

---

---



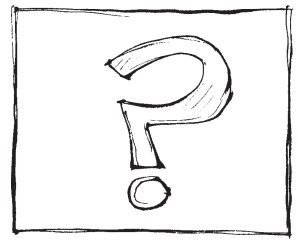
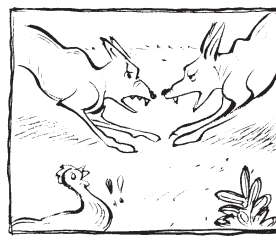
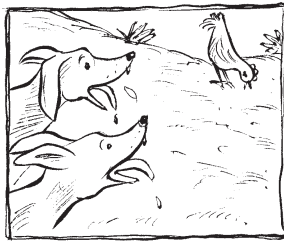
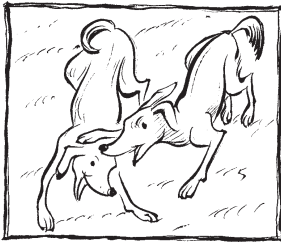
---

---

---

---

b) Given below are three pictures in sequence. Think of the fourth picture to complete the story. Write the whole story in your own words.



---

---

---

---

Look at the following pictures and make a story out of them. Also give your story a title.



---

---

---

---

---

---



6. **Writing Experiences**

We all love to share our experiences with friends. Here, Mohan is sharing what happened in the market the previous day. Let's read:

Yesterday I went to the market. Monday is a market day, so there was heavy rush. I bought some vegetables and fruits. Niku, my younger sister was with me. She loves soft-toys a lot. We went to the toy shop and she bought a teddy-bear. There we saw a boy with his puppy. As soon as the puppy saw a 'bear', he jumped over it! And soon he realized that it was a toy. We all burst out with laughter.

You also must be having many such experiences to share. Write them in your copies and share with your students. This will also give your students an opportunity to listen English and they may also begin to write in English.

Now share your experiences on the following topics:-

- My most scary nightmare
- My best teaching experience
- When I made chapati for the first time
- The most funny incident in my childhood
- \_\_\_\_\_ (Think on your own)

7. **Paragraph Writing**

- Let's read the following paragraph:

**My Sister**

My sister is one of the most amazing persons I have come across in my life. She is a true friend and has always been there whenever I needed her. She is not just a sister, but a friend, a companion, a guide and also a teaser. Yes! She never loses an opportunity to do my leg-pulling; but also cares for me from the core of her heart. She is a blessing in my life. I love my sister dearly.....

- Write paragraphs on the following topics and share with your students.
  - My friends
  - Corruption
  - Evaluation system in India

8. **Note Making**

**Think** : आप नोट्स कब-कब बनाते हैं? ये किस प्रकार आपकी मदद करते हैं?

एक महत्वपूर्ण बात जो लिखने को लेकर है वह है नोट बनाना। यह विषय को न केवल याद रखने के लिए सरल बनाता है बल्कि किसी टॉपिक के बारे में विचारों को पुनर्स्थापित करने में मदद भी करता है। नोट्स बनाने के कई तरीके हो सकते हैं। ये नोट्स सरल शब्दों के रूप में जो उस विषय वस्तु के सार को बता सकें, हो सकता है, तो कभी वाक्यों के रूप में भी।

अच्छे नोट्स लिखना बहुत आसान नहीं होता। यह कौशल धीरे-धीरे और निरन्तर अभ्यास से विकसित होता है। नोट्स बनाना स्वयं में आत्मविश्वास को बढ़ाने और विषयवस्तु के प्रति समझ बढ़ाने में भी बहुत मदद करता है।

Let's do this:

- Select any paragraph from the compendium and write its key points.
- Select another paragraph and make notes in the form of sentences.

The following section deals with some ways of making notes.

You will find that all of us make notes in our own ways. The most important aspect is that they suit our purpose. Our notes may be neat or messy, ordered lists or sprawling webs. This does not matter as long as we can make use of them.

Key points before taking notes:-

- Write the title at the top. This will help you to recall and set your mind thinking about it.
- Don't start writing straight away. Listen / read carefully.
- Instead of writing complete / long sentences write down key words and phrases.
- While taking notes from a book try to write in your own words.
- Use abbreviation instead of complete spellings of long words. 'Eg'- for 'example', 'Ed' for education .....and so on.

Here we shall see three ways of making notes:-

- Headings and bullet points
- Tabular format
- Mind maps

a) **Headings and bullet points:-** Headings and bullet points are the most common way of making notes. This helps to reorganize information under new headings. All lists of points under it refer to that one heading.

b) **Tabular format:-** You can take down your notes in the following tabular format.

|  |  |  |
|--|--|--|
| Title-   |  |  |
| Source (Name of the book being read or the person being listened to) | Facts / information/ viewpoint presented | What does the information imply? What is the importance? Etc |

c) **Mind maps:-** Mind map may help you to quickly identify and understand the structure of subjects, and the way that pieces of information fit together. A good mind map may have main topic lines radiating in all directions from center. Subtopics and facts will branch off these, like branches and twigs from the trunk of a tree. For example:-



Look at the mind map and answer the following questions:

- What is the main heading of this mind map?

---

- What are the uses of water mentioned in the mind map?

---

- What are the sources of water?

---

- Convert the above mind map into a paragraph.

---

---

---

---

**An example:-**

The Japanese have always loved fresh fish. But the waters close to Japan have not held many fish for decades. So to feed the Japanese population, fishing boats got bigger and went farther than ever. The farther the fishermen went, the longer it took to bring in the fish. If the return trip took more than a few days, the fish were not fresh.

To solve this problem, fishing companies installed freezers on their boats. They would catch the fish and freeze them at sea. Freezers allowed the boats to go farther and stay longer. However, the Japanese could taste the difference between fresh and frozen and they did not like frozen fish. The frozen fish brought a lower price. So fishing companies installed fish tanks. They would catch the fish and stuff them in the tanks, fin to fin. After a little thrashing around, the fish stopped moving. They were tired and dull and lost their fresh-fish taste. The fishing industry faced an impending crisis!

But today, they get fresh tasting fish in Japan. How did they manage? To keep the fish tasting fresh, the Japanese fishing companies still put the fish in the tanks but with a small shark. The fish are challenged and hence are constantly on the move. The challenge they face keeps them alive and fresh!

Have you realized that some of us are also living in a pond but most of the time tired & dull? Basically in our lives Sharks are new challenges to keep us active. If you are steadily conquering challenges, you are happy. Your challenges keep you energized. Don't create success and revel in it in a state of inertia. You have the resources, skills and abilities to make a difference. Put a shark in your tank and see how far you can really go!

Constantly challenge your thoughts, do not wait for someone to point it out. You have to believe, when say nobody can be a better critic of you but you yourself. Ask rather challenge yourself, "Could that have been done better?" if yes how? How can I better my output? If there a way I do not know?

Challenge .....challenge.....challenge.....

Do not be a traveller in life.....be the dirver of your life..... before criticizing others, look inwards.

Given below are the notes on the story "Fresh Fish in Japan." Here the notes are taken in tabular format. While making notes you may choose any format that suits your purpose.

| Title- Fresh fish in Japan |   |  |
|----------------------------|---|--|
| Source<br>(Reading is fun) | Main points of the content:- <ul style="list-style-type: none"> <li>• Japanese loved fresh fish.</li> <li>• Growth in population required more fish.</li> <li>• Fishermen went farther and took longer to bring fish.</li> <li>• To keep the fish fresh, freezers were installed.</li> <li>• Frozen fish did not taste as good as fresh fish</li> <li>• Fish tanks were installed</li> <li>• But these fish were dull and tired</li> <li>• A small shark was kept in the tank</li> <li>• To save themselves from shark fish remained active and fresh.</li> </ul> | What does the information imply?<br>Challenges keep us happy and energized.<br>Challenge your thoughts so that you grow more and more. |

**Let's do this:**

Read the paragraph given below and make notes using any one of the three ways mentioned above.

The word 'banana' is believed to come from banan, the Arabic word for finger. Every part of the banana tree is used. The raw banana is cooked and eaten. The ripe fruit is nutritious. The stem too is cut and cooked as is the flower. The fibre of the tree is found to be useful as string. The leaves are used as plates and are even folded into cups.

In a world where the importance of environment is increasing and wastage is a big threat, the banana stands as a symbol of complete utility. Any part of the plant need not to be wasted no part is to be thrown away. This wholeness, where every element of the plant has a role to play, is one of the reasons for its symbolism. In addition, the banana plant has many baby plants growing around its base. This has made the plant a symbol of fertility. During an auspicious or special occasion, a banana plant, complete with fruit and flower, is tied to the entrance. This plant is a symbol of a complete and prosperous family. From the point of nutrition the banana is rich in fiber and potassium. With an abundance of vitamins and minerals, the banana is a healthy part of any diet.

The tree usually lives only about one year. A folktale tells of how all the trees went looking for husbands. The banana, though, wanted only children. Their wishes were granted. The banana had many children who grew around her. The other trees had branches for husbands and children from fruit.

The practice of eating on a banana leaf is traditional one. It has many aspects to recommend it. It is clean and hygienic as it is used and thrown away. Unlike other disposables, it is completely bio-degradable and environment friendly.

The banana is a symbol of many things. Inexpensive and easy to grow, it has often been called the poor man's apple. In nutrition and taste as well as in its abundant symbolism, it is truly the fruit of paradise.

## 2.5 Projects (भाषा शिक्षण में प्रोजेक्ट कार्य)

किसी भी विषय के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में प्रोजेक्ट कार्यों की विशेष भूमिका होती है। भाषा शिक्षण में कोई अपवाद नहीं। प्रोजेक्ट कार्यों के कई फायदे हैं। जैसे—

- अगल-अलग कौशलों पर एक साथ कार्य करना।
- जिंदगी में आने वाली परिस्थितियों की तैयारी।
- प्रोजेक्ट कार्य आमतौर पर समूह में होते हैं और हमें लोगों से बात करने और मिलकर कार्य करने के मौके प्रदान करते हैं। भाषा सीखने में इस बात पर जितना जोर दें, कम है।
- यह हमें भाषाई कौशलों के अतिरिक्त कई अहम बातें सीखने का मौका देते हैं। जैसे, सामग्री ढूँढना, छाँटना, ठीक से व्यवस्थित करना, प्रभावी अभिव्यक्ति के तरीके सोचना आदि।
- अपने साथियों के साथ मिलकर कार्य करना हमें बिना भय के सीखने और अभ्यास करने के मौके देता है।

नीचे कुछ प्रोजेक्ट कार्यों के उदाहरण दिए गए हैं। इन्हें अपने साथियों के साथ करें। यदि संभव हो तो किसी कक्षा में जाकर या बच्चों का समूह बनाकर उन्हें प्रोजेक्ट पर कार्य करने के मौके भी दें।

### (i) Role play and dramatization

Choose any story from the compendium. Convert it into a drama. Make your own dialogues. Get a group of children to present it.

All of us are familiar with the story of 'The rabbit and the tortoise'. Now read the initial conversation and write a script for converting it into a drama.

#### The Rabbit (R) and the Tortoise (T)

- R : Hello Titu how are you?  
 T : I am good Bunny! How about you?  
 R : It's a good day to play and have fun.  
 T : Yes, that is right.  
 R : Hey! Let's have a race. He...he .....

Now you try and complete the play.

### (ii) Making a presentation

Choose any topic of your interest for presentation. Read more about the topic to know the exact details and recent updates. Arrange the matter in a sequence and add your own views into it to make it interesting.

Start the presentation with greetings (say good afternoon, hello etc). Introduce the topic. Tell the details and your views. You can also tell why you have chosen the topic. Conclude in a line or two covering the main idea. Keep to the time allotted.

Try and make a presentation based on the following topics. Share with your students during class time or during assembly.

- Truth wins
- Historical monuments
- My Hobbies
- Life of great scientists etc.

### (iii) Reviewing a book

A book review is a description, critical analysis, and an evaluation on the quality, meaning, and significance of a book, not a retelling. A critical book review is not a book report or a summary. It is a 'reaction paper' in which strengths and weaknesses of the material are analyzed. It should focus on the purpose and content of the book; and include a statement of what the author has tried to do! In a book review one should evaluate how well (in the opinion of the reviewer) the author has succeeded; and present evidences to support this evaluation.

Read the following book review:-

Rusi and Pussy is an interesting book for young children published by Eklavya. This book is written by V. Suteyev. The language of the book is easy and yet it explores friendship between two friends Rusi and Pussy, where one is a human being and the other a ..... (Read and find out.) Another interesting feature of the book is its gradual development of how drawing may be linked to children's dreams and desires.

Read any book of your choice and write a review of it. You may use the following points:

- Name of the book, author, publication, year of publication etc.
- Theme of the book, main characters.
- Your personal feeling while reading the book, the character you liked/disliked, favourite part of the book (if any).
- If you could change something in the book, what would it be?
- Would you recommend this book to another person? Why?

### (iv) Diary writing

One very useful way of practicing writing is to write your diary. It is useful because it helps you reflect on whatever has happened. As a teacher it would give you a lot of insights into how your students are developing and give you an opportunity to go over the day's happening and analyze it. It is important to recognise that there would be steps that you have to take slowly in order to be able to write a diary that is meaningful.

We could begin by writing about some simple aspects of your daily activities. In fact, you could begin by routine that you follow in a day. You could then start recording the events that you participated in during the day or the week or what you observed. This would then be organised in a chronological order and initially that is fine. But slowly you could start writing a couple of lines about how does it feel to have done or experienced all that. This is the beginning of reflection and your diary writing that would be a record of your experiences and of your development as a teacher. A good diary can give a person a lot of insight about oneself.

In this description, you can start gradually underlining those points that seem to be important. As you become more confident you could start the process of describing a few of these important



elements and elaborate on the details that make them relevant and important. It is through this process that you would gradually develop the ability to write a diary.

Look at the following two diary entries, they are written by two very different children at different times. Don't you think they tell us a lot about their lives?

|  |   |
|--|---|
| <p><b>Diary entry of a 10 year old</b></p> <p>"Today I went school after holiday Hindi Madam did not cam and are had free period I got homework in science. This year I will study everyday.</p> | <p><b>Diary entry of a teenage girl during second world war</b></p> <p>I hope I will be able to confide everything to you as I have never been able to confide in anyone and I hope you will be a great source of comfort and support.</p> <p>It's difficult in times like these: ideals, dreams and cherished hopes rise within us, only to be crushed by grim reality. It's a wonder I haven't abandoned all my ideals, they seem so absurd and impractical yet I believe in spite of everything that people are truly good at heart.</p> |
|--|---|

Write diary for at least a week. In the beginning you can use words from your mother tongue but gradually try and write in English.

|   |
|---|
| <p>At the age of 5 years, Sheela was a fluent speaker of Marathi and Hindi. Since her father got transferred to Chhattisgarh, she started using more of Hindi and less of Marathi. Today, that is after 5 years, she hardly can speak Marathi.</p> <p>Languages flourish only when used.</p> <p>The activities mentioned in this unit should not end here. These are the activities that you need to continue even after you complete the course - Language learning and mastery requires sustained usage and continuous reading.</p> |
|---|

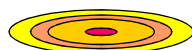
### Unit End Exercise:-

Answer the following questions. Write your answers in your copy.

1. Reading helps improve your writing. Explain.
2. Design an activity (other than the ones given in this unit) for your students. Through this activity they should get opportunity to write simple sentences. Describe the activity in your copy.
3. Language flourishes in each other's company. Elaborate.
4. 'No pain, No gain' is a proverb in English. Find out the proverb in your own language with the similar meaning and explain it with an example.
5. Gather information on any topic of your interest. And create a mind map summarizing the main points.

### References:

Adrian Doff, Teacher's workbook - Teach English-- Cambridge teacher training and development.  
 Mary Spratt., English for the teacher- A language development course-  
 Rungeen singh, Kitu goes on a holiday --Vishv books  
<http://www.improvespokenenglish.org/search/label/Conversation>  
<http://www.mindmapart.com/energy-saving-mind-map-jane-genovese>  
<https://www.msu.edu/~caplan/drama/tesol2005/situations.doc>  
<http://www.scribd.com/doc/391505/Paragraph-Writing>



## UNIT - 3

## How can English be taught?

- 3.1 (i) How to encourage children to learn a new language?  
(ii) Motivation
- 3.2 N.C.F. 2005 and teaching of English
- 3.3 Using materials and activities for teaching English  
(i) Materials and activities for facilitating learning  
(ii) Shared reading  
(iii) Songs, rhymes and word play  
(iv) Developing reading and writing  
(v) Games, plays and puppetry
- 3.4 How to teach with the help of a textbook?
- 3.5 Using children's literature for teaching English
- 3.6 Role of a teacher

## ज़रा सोचें.....

- एक नई भाषा सीखने के लिए आप बच्चों को कैसे प्रोत्साहित करेंगे?
- भाषा सीखने-सिखाने के लिए अलग-अलग सामग्री का किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है?
- बाल-साहित्य के बारे में आप क्या समझ रखते हैं?
- अंग्रेजी सीखने में बाल-साहित्य की क्या भूमिका हो सकती है?

## Introduction

In the previous unit, we have done a lot of activities for learning English. We have to continue doing them so that we become more and more confident in using English.

Before we proceed with this unit please write your views on the activities we've done in unit 2. Were they interesting/boring? Do you think they were useful? Why do you think so?

.....

.....

Now, let's read the experience of Ranjani Raghavan about learning a new language.

*Learning Gujarati from Friends; Not learning Marathi at School*

नमस्कार। मेरा नाम रंजनी है। मैं तमिलनाडू की रहने वाली हूँ, लेकिन मुम्बई में पली बड़ी हूँ। मैंने तीन साल की उम्र से ही हिन्दी, अंग्रेजी व तमिल में बात करना शुरू कर दिया था। मैंने गुजराती भी बोलनी शुरू कर दी थी, क्योंकि मेरे दोस्त गुजराती थे। तो मैंने सहज तरीके से एक बिल्कुल ही नई भाषा को सीखा। मगर, आज भी मैं 5 मिनट से ज़्यादा किसी के साथ मराठी में बातचीत नहीं कर पाती हूँ- ऐसी भाषा जो मैंने स्कूल में 6 साल सीखी!

किसी भी भाषा को सीखना शुरू होता है उस भाषा के अक्षर ज्ञान से, पर मराठी के साथ ऐसा नहीं हुआ। क्योंकि मराठी और हिन्दी की लिपि लगभग एक सी थी तो हमने पाठ्यपुस्तक के साथ काम करना शुरू कर दिया। पाठों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। पाठों पर आधारित प्रश्न दिए गए और छात्रों ने उनके उत्तरों को रट लिया। वे ही प्रश्न परीक्षा में आते थे, छात्र रटे हुए उत्तर लिख देते और पास हो जाते।

ये सिलसिला कक्षा 10 तक चला। इस प्रक्रिया के दौरान छात्रों ने मूल भाषा को तो समझना शुरू कर दिया था मगर फिर भी उनके बनाये वाक्यों में व्याकरण की गलतियाँ पाई जाती थीं और कोई भी लेख, निबंध या पत्र लिखते समय अपने विचारों को मराठी भाषा में अभिव्यक्त करने में उन्हें परेशानी होती थी। हम इस तरह की दक्षता के लिए तैयार ही नहीं थे। पाँच प्रतिशत से भी कम बच्चों ने मौलिक लेखन में अच्छा प्रदर्शन किया।

पाठ्यक्रम में लचीलेपन की कमी की वजह से भाषा सीखने का अप्रत्याशित दबाव था। पाठ्यक्रम में कम से कम 25 अध्याय थे जिनमें पाठ और कविताएँ शामिल थी। 100 नम्बर के पर्चे के लिए सौ से ज्यादा प्रश्न रट्टा मारने के लिए थे। साथ ही वो पाठ बिल्कुल भी मज़ेदार नहीं होते थे। फिर भी, कोई भी छात्र, बिना कुछ भी सीखे, सिर्फ रट्टा लगाकर आराम से 65 अंक ला सकता है। इसलिए किसी भी तरह का 'भाषा सीखना' नहीं होता था। कक्षा 10 के बाद छात्र राहत की सांस लेते, क्योंकि तब मराठी विषय अनिवार्य नहीं रह जाता था।

- प्र. रंजनी और आपके अपने डी.एड. द्वितीय साल के भाषा सीखने के अनुभवों की तुलना कीजिए। क्या उनमें कुछ समानता है या फिर वे अलग हैं? कैसे?
- प्र. कल्पना कीजिए कि आप उस स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं जिसमें रंजनी पढ़ती थी। एक प्रधानाध्यापक के तौर पर रंजनी के भाषा सीखने के अनुभवों को और अर्थपूर्ण बनाने के लिए आप अध्यापकों को क्या सलाह देंगे। लिखिए।

### 3.1 (i) How to encourage children to learn a new language?

रोबर्ट रोसेन्थॉल (Robert Rosenthal) नामक एक शोधकर्ता ने सैन फ्रांसिस्को के एक विद्यालय के शिक्षकों और बच्चों के साथ एक शोध किया। इसके तहत अलग-अलग कक्षाओं में सत्र की शुरुआत में बच्चों का एक टेस्ट लिया गया। इसके पश्चात शिक्षकों को टेस्ट में उपलब्धि स्तर व उत्तरों को नजरन्दाज़ करते हुए, बच्चों के कुछ नाम ऐसे ही चुनकर दिए। शिक्षकों को यह बताया गया कि इन बच्चों में सीखने की बहुत संभावना है। यह बात गौर करने योग्य है कि यह बात केवल शिक्षकों को बताई गई थी, बच्चों एवं उनके अभिभावकों को नहीं।

#### क्या आप सोचते हैं इसका कुछ असर बच्चों के सीखने पर हुआ होगा?

सत्र के अंत में एक और टेस्ट लिया गया और यह पाया कि जिन बच्चों के नाम शिक्षकों को बताए गए थे उन्होंने बहुत अच्छा परिणाम दिखाया। मजे की बात यह है कि ऐसा एक प्रयोग चूहों पर भी किया गया था। इसमें जूनियर शोध कर्ताओं को रोबर्ट रोसेन्थॉल (Robert Rosenthal) ने चूहों के दो एक जैसे समूह दिए और बताया कि एक समूह को खास तौर पर भुलभुलैया से बचने के लिए तैयार किया है और दूसरा समूह काफी सुस्त चूहों का है। थोड़े समय बाद लिए गए टेस्ट में इन चूहों के प्रदर्शन में भी काफी अंतर पाया गया। चुस्त बताए गए चूहे काफी सीखे व आगे बढ़े। इस प्रक्रिया का नाम रोजेन्थाल ने "अपेक्षा का प्रभाव" रखा।

इसका अर्थ है कि किसी भी व्यक्ति के सीखने पर जो बातें प्रभाव डालती हैं उनमें से कुछ हैं:-

1. **उसकी स्वयं से अपेक्षा:-** कुछ दिनों पहले सुमन ने गाड़ी चलाना सीखना शुरू किया। घर में कई लोगों को लगा कि लड़की होने के कारण गाड़ी चलाना सीखना सुमन के लिए मुश्किल होगा पर सुमन को इस बात में कोई दम नहीं लगा। वह इस तरह के भेदभाव में कतई विश्वास नहीं करती। आज सुमन बढ़िया गाड़ी चलाती है, इसका अर्थ यह नहीं कि उसने कभी सीखते वक्त टक्कर नहीं मारी पर अब वह एक आत्मविश्वासी एवं सतर्क चालक है।

2. **शिक्षक की अपेक्षा:-**.....

3. **अभिभावकों की अपेक्षा:—**

4. **साथियों की अपेक्षाएँ:—**

5. **सामाजिक अपेक्षाएँ या पूर्वाग्रह:—**

**इन अपेक्षाओं का किसी व्यक्ति के सीखने पर कैसे प्रभाव पड़ सकता है, सोचिए और उदाहरण सहित लिखिए।**

इसके कई आयाम हैं जैसे कि शिक्षक बच्चों को किस प्रकार का कार्य दे रहे हैं। वह कितना चुनौतीपूर्ण है, वे बच्चों के प्रदर्शन को कैसे देखते हैं, उस पर क्या प्रतिक्रिया रखते हैं? बच्चे अपने सीखने की क्षमता के बारे में क्या सोचते हैं किसी भी कार्य को किस मानसिकता से शुरू करते हैं? असफल होने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया है एवं पुनः जूझने के लिए वे कितने तैयार हैं? आदि।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि इंसानी सम्प्रेषण सिर्फ बोलचाल या हावभाव पर निर्भर नहीं करता। हम बिना कुछ कहे भी बहुत बार अपनी अपेक्षाएँ और मत दूसरों तक पहुंचा देते हैं। ये बातें सभी प्रकार की सीखने की परिस्थितियों पर लागू होती हैं। हम सब मानते हैं कि हमारे बच्चे घर की भाषा में बोलना और समझना सीख जाएंगे और वो सीखते हैं। फिर भले ही अलग-अलग बच्चा अलग-अलग समय लगाए और ढेरों गलतियाँ करे हम विचलित नहीं होते। अब यह भी देखना जरूरी है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के अंग्रेजी सीख सकने के बारे में क्या सोचते हैं और साथ ही वें अपने अंग्रेजी सीख सकने के बारे में क्या विचार रखते हैं? इसी से जुड़ा है बच्चों की गलतियों का मुद्दा जिसके बारे में हम पहले भी बात कर चुके हैं।

अधिकतर शिक्षक व अभिभावक बच्चों की भाषा को सूक्ष्मता से जाँचते हैं। ऐसा इसलिए नहीं कि उन्हें बच्चों की गलतियाँ निकालना अच्छा लगता है बल्कि इसलिए कि यह आम धारणा है कि जब तक सुधार नहीं करवाया जाता तब तक सीखना नहीं होता। इसीलिए वे 'गलतियाँ ढूँढते हैं और उपचार के लिए सलाह देकर संभावित उपयुक्त कार्य करवा लेते हैं। अभिभावकों और शिक्षकों को यह जानना चाहिए कि बच्चा स्कूल आने से पूर्व सिर्फ चलना या दौड़ना ही नहीं सीखता है वरन वह अपनी पहली भाषा के जटिल व्याकरण के ढाँचे को भी सीख लेता है। वह अलग अलग सन्दर्भ में अलग अलग तरह की उपयुक्त भाषा का उपयोग भी सीख लेता है और यह सब वह बिना किसी के सिखाए खुद ब खुद स्वयं ही सीखता है। चार वर्ष का एक बच्चा हिंदी, अंग्रेजी, बंगाली व तेलगु सभी भाषाएँ (जो उसके वातावरण में मौजूद हैं) एक साथ अच्छी तरह से जान सकता है और उनमें से किसी को भी उपयुक्त सन्दर्भ में काम में ला सकता है। तब सवाल यह है कि इतने सीमित अनुभव होते हुए भी बच्चा इतना कुछ किस प्रकार सीख लेता है? इस बात के अकाट्य प्रमाण हैं कि बच्चे पैटर्न पहचानने और उसके आधार पर सामान्यीकरण करने की विशिष्ट एवं पैनी क्षमताएं लेकर पैदा होते हैं। लेकिन जो पैटर्न देखते हैं, वयस्कों की दुनिया के मान्य पैटर्न से अलग भी हो सकते हैं। हम कितनी भी कोशिश करें, बच्चों को गलती करने से बचने में मदद नहीं कर सकते। क्योंकि जो हमारे लिए गलतियाँ हैं वो बच्चों के लिए सीखने के सफर में एक अहम कदम है। जैसे अंग्रेजी सीख रही बच्ची 'went' बोलने से पहले 'goed' बोल सकती है। यानी गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया में आवश्यक चरण हैं और बच्ची किस तरह से

सोच रही है, यह दर्शाती है। हमें बच्चों की गलतियों की तरफ ध्यान न देकर बच्चों के सीखने के तरीके जानने व समझने की कोशिश करनी चाहिए। इससे हमें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को ज्यादा प्रभावी बनाने में मदद मिलेगी। अगर हम ध्यान से सोचें तो समझ पाएंगे कि असल में गलतियां बच्चों के ज्ञान की द्योतक हैं, न कि उनके अज्ञान की।

### अंग्रेजी व्याकरण और अंग्रेजी सीखने का संबंध

हम यह मानते हैं कि किसी भी भाषा को सीखने के लिए उसका व्याकरण सीखना जरूरी है। इस इकाई के शुरू में आपने पढ़ा कि कैसे इस तरह की शिक्षण प्रक्रिया सीखने वाले को डरा कर भगाने में कारगर है। आइए पहले हिन्दी सीखने के विषय में पुनः कुछ बात करें। यह तो आप जानते हैं कि 3-4 साल के बच्चे भाषा के इस्तेमाल में काफी सक्षम हो जाते हैं। वे व्याकरण के नियम बता तो नहीं सकते पर उनका भरपूर इस्तेमाल करते हैं। उदाहरण के तौर पर देखें कि हिन्दी का एक शब्द है 'लड़का' जिसका बहुवचन स्कूल में पढ़ाया जाता है 'लड़के', परन्तु चार साल का बच्चा निम्नलिखित वाक्य बोलते वक्त 'लड़का' शब्द के बहुवचन बनाने में पूर्णतया सक्षम है।

1. लड़के पार्क में खेल रहे हैं।
2. यह खिड़की उन लड़कों ने तोड़ी है।

'लड़का' शब्द के बहुवचन बनाने के दो तरीके हो सकते हैं। - 'लड़के' और 'लड़कों' इन तरीकों के बारे में हम ना तो बताते हैं, ना सोचते हैं पर बच्चे और हम इस्तेमाल ठीक से कर पाते हैं। तब सवाल यह है कि जिन भाषाई नियमों/व्याकरण को हम बच्चों को सिखाते नहीं हैं या बच्चे बता नहीं सकते, क्या वे उसका इस्तेमाल नहीं करते?

दूसरा सवाल है भाषा नियमों के स्थायित्व का, और नियमों के आधार पर भाषा के इस्तेमाल को सही या गलत करार देने का। एक उदाहरण लेते हैं- अमेरिका में कई तरह की अंग्रेजी बोली जाती है। इसमें से एक प्रकार है ऐफ्रो अमेरिकी अंग्रेजी, जिसके कई नियम बाकी अंग्रेजी से बिल्कुल अलग हैं। यदि हम बोलना चाहते हैं- मुझे कहीं नहीं जाना। इस बात को अंग्रेजी में कहने के कई तरीकों में से दो तरीके निम्नलिखित हैं:-

- I am not going anywhere
- I ain't going no where

दूसरे वाक्य में दो बार नकारात्मक शब्द का इस्तेमाल ऐफ्रो अमेरिकी अंग्रेजी का एक feature है। तो आप देख सकते हैं कि भाषाई नियम अलग-अलग संदर्भों में बदल जाते हैं। क्या आप ऐसे कुछ नियमों को अलग-अलग जगह की हिन्दी में ढूँढ सकते हैं?

भारत जैसे देश में हर कक्षा में कई भाषाएँ बोलने वाले बच्चे साथ पढ़ रहे होते हैं। ऐसे बहुभाषी संदर्भ का अंग्रेजी भाषा सीखने पर क्या प्रभाव पड़ेगा? सोचिए! आमतौर पर शिक्षक इस बहुभाषिता की चुनौती से घबरा जाते हैं। वे यह नहीं सोच पाते कि इससे सीखने की संभावना कैसे बढ़ती है। एक बहुभाषी बच्चा कई भाषाओं के व्याकरण, शब्दावली, ध्वनि संरचना आदि से परिचित है। यदि उसे इस समृद्ध आँकड़े का विश्लेषण करने में सहायता दी जाए तो वह किसी भी नई भाषा जैसे अंग्रेजी के सम्पर्क में आकर उसका विश्लेषण करने की क्षमताएँ विकसित कर लेगा। इस तरह के बच्चे भाषाई भिन्नताओं के प्रति ज्यादा संवेदनशील होते हैं।

It's helpful to provide gentle feedback when children mispronounce words or use language incorrectly. When Lakshmi said, 'I remember the pumpkin farm,' her teacher responded by modeling the correct pronunciation of the word 'remember' and said 'Lakshmi, I'm glad you remember that trip. We had so much fun.' Helping children to use their new words, however, is far more helpful than correcting their pronunciation. As young language learners, it's important for them to feel comfortable in using their new words without having to worry that they are making mistakes.

## (ii) Motivation

Motivation is the activation or energization of goal-oriented behavior. Motivation is the 'neglected heart' of the classroom transaction. Many teachers believe that by providing language materials and trying to discipline their disobedient students, they will manage to create a meaningful classroom environment.

अंग्रेजी शिक्षकों के पास अंग्रेजी पढ़ाने के दौरान सबसे मजबूत पक्ष है, छात्रों में अंग्रेजी सीखने को लेकर तीव्र इच्छा और उनकी तत्परता। छात्रों में मौजूद अंग्रेजी भाषा सीखने की इच्छा को कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में पर्याप्त हौसला और अभिप्रेरणा न दे पाना एक बेहद सक्षम कारक को उपेक्षित करना है। बहुत से शिक्षक-शिक्षिकाओं का मानना है कि अगर वे कक्षा में उचित भाषा सीखने की सामग्री मुहैया करवाएँ और उद्दण्ड बच्चों को अनुशासित करें, तो वो कक्षा में भाषा सीखने का एक अर्थपूर्ण माहौल बना सकेंगे। मगर शायद कभी-कभी हम शिक्षक ये भूल जाते हैं कि अगर हम बच्चों के व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं करेंगे, उनकी रुचियों का ध्यान नहीं रखेंगे, उनके संदर्भ का खयाल नहीं रखेंगे, तो हम बच्चों को प्रेरित नहीं कर पाएँगे।

अगर शिक्षक अपने छात्रों को अंग्रेजी सीखने और इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करना चाहता है, तो उसे ऐसे विभिन्न तरीके सोचने पड़ेंगे जिनके द्वारा वे कक्षा में बच्चों को प्रेरित करने वाला माहौल बना सकें। कुछ तरीके जैसे—

### 1. **Appropriate teacher behaviour and good teacher-student rapport** (बच्चों के साथ शिक्षक का उचित व्यवहार)

विद्यार्थियों के साथ आपसी विश्वास और सम्मान आधारित एक रिश्ता बनाने के लिए अच्छा तरीका है कि आप उनसे व्यक्तिगत स्तर पर बातचीत करें। इससे उनमें उत्साह को बढ़ावा मिलेगा। उदाहरण शिक्षिका सीमा का हमेशा उसकी कक्षा में स्वागत होता है। वे ज्यादातर बच्चों के साथ जाजम/दरी पर ही बैठती हैं और उन्हें काम करने में मदद करती हैं। किसी भी बच्चे को उनसे डर नहीं लगता, तब भी नहीं, जब वे गृहकार्य नहीं कर के लाते। इसका मतलब यह नहीं कि वह गृहकार्य को अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते। सीमा बच्चों के साथ अंग्रेजी में खूब सारी बातचीत करती है, मगर धीरे-धीरे। यह बात बहुत दिलचस्प है कि उसकी कक्षा में काफी छात्र अंग्रेजी में बोलते हैं और लगातार कोशिश भी करते रहते हैं।



It is very crucial to develop a relationship of mutual trust and respect with the learners. One way of developing this relationship is by listening to them and talking with them at a personal level.

### 2. **A pleasant and stress free environment**

(कक्षा में रुचिकर, सहज, मजेदार और चिंता मुक्त वातावरण बनाना।)

किसी भी सुरक्षित माहौल में जहाँ बच्चों को अपनी बात आत्मविश्वास के साथ कहने का मौका मिले और उनकी कोई हँसी न उड़ाए, ऐसी कक्षा में छात्र सीखने के लिए अधिकतम प्रेरित होते हैं।

सीखने के लिए प्रेरित होने के लिए बच्चे को सीखने के व्यक्तिगत अवसरों की जरूरत होती है। उसे चाहिए कि कोई उस पर विश्वास रखे, उसका हौसला बढ़ाता जाए और उसके सीखने की विभिन्न कोशिशों में आवश्यकतानुसार उसकी मदद करता जाए। संभव है कि बच्चे को हम एक अव्यवस्थित कक्षा में प्रेरित न कर पाएँ, तो ये ज़रूरी है कि शिक्षक कक्षा में सीखने-सिखाने का प्रभावशाली वातावरण बनाने के लिए कक्षा को उस प्रकार से व्यवस्थित कर सके। व्यवस्था का मतलब ये नहीं



है कि कक्षा में बच्चे चुपचाप बैठ कर अपना काम करते रहें अर्थात् हम बच्चे को सीखने-सिखाने का मौका दें।

To be motivated to learn students need both ample opportunities to learn, steady encouragement and support to their learning efforts. Since motivation cannot be developed in a chaotic classroom a teacher needs to organize the classroom to create relaxed and supportive learning environment.

c) **Supportive classroom atmosphere throughout the teaching learning process**

**(सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान कक्षा कक्ष में सहयोगात्मक वातावरण बनाना।)**

अगर शिक्षक खुद किसी गतिविधि में भाग ले, तो बच्चों को लगता है कि वह काम या गतिविधि उनके लिए फायदेमंद है। इसी तरह अगर हम बच्चों के साथ कोई बातचीत करें, तो संभव है कि बच्चे खुद भी उसमें रुचि दिखाएँ। हम रोज़ाना अलग-अलग बच्चों के समूह के साथ बैठकर चर्चा करेंगे, तो हम पाएँगे कि कुछ दिनों बाद बच्चे खुद ब खुद पहल करने लगे हैं, खुद से चर्चा शुरू करने लगे हैं। शायद हमें किसी समूह से किसी बच्चे की आवाज़ आए, "talk about everyone's favourite snack" या "what did everyone do after school yesterday?"

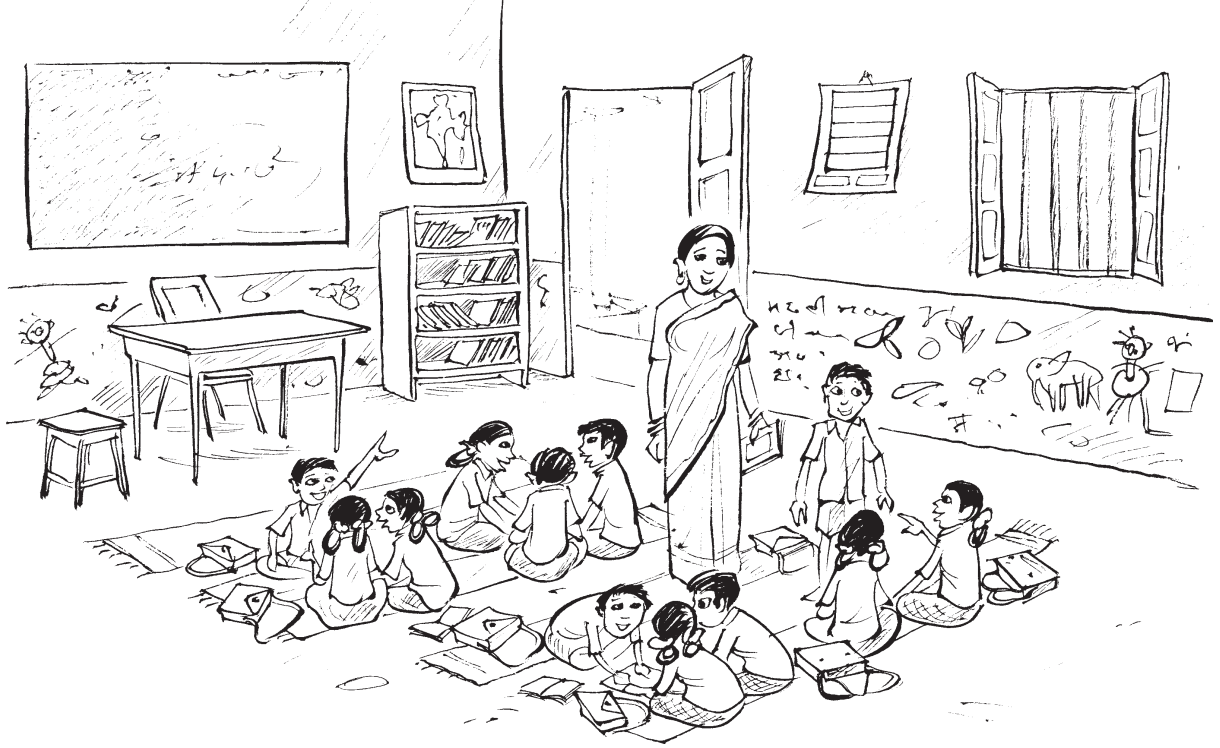
एक शोध में कुछ तथ्य सामने आते हैं, जो शायद हमें कक्षा-कक्ष की स्थितियाँ बेहतर समझने में मदद करें। उस शोध के तथ्य कुछ इस प्रकार हैं:-

- किसी भी भौतिक क्षेत्र (जगह) की व्यवस्था और संरचना मानव व्यवहार को प्रभावित करती है। हम कहाँ हैं और किसके साथ हैं, हम क्या सोचते हैं या कहते हैं को प्रभावित करता है।
- लिखने-पढ़ने की क्षमता को बढ़ाने के लिए बच्चे के वातावरण में पढ़ने के असंख्य मौके होने चाहिए। बच्चे खुद-ब-खुद अपने वातावरण में लिखी हुई चीज़ें ढूँढना शुरू कर देंगे जो उन्हें समझ आती हैं। मगर पुरानी चीज़ें ही अगर दीवार पर चिपकी रहें, तो एक हद के बाद वे अपना आकर्षण और सार्थकता खो देती हैं। तो ये ज़रूरी है कि दीवार पर जो भी चिपकाया जाए वह व्यवस्थित हो और समय समय पर बदला जाए।
- गतिविधि के लिए अच्छी तरह से व्यवस्थित जगह (सामग्री) बच्चों के सीखने और समझने में सहयोग प्रदान करती है। उदाहरण के लिए कक्षा में एक ऐसा कोना स्थापित करना जिसमें बच्चों के लिए पर्याप्त किताबें हों, जहाँ वे अकेले या अपने साथियों के साथ पढ़ सकें, बच्चों की साक्षरता में मददगार साबित होता है।
- एक बच्चा कितनी भाषाएँ इस्तेमाल करता है और उसके पढ़ने-लिखने की योग्यता किस तेज़ी से बढ़ती है, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह बच्चा वयस्कों के साथ कितनी बातचीत करता है और किस तरह की बातचीत करता है। जो शब्द बच्चे इस्तेमाल करते हैं वे उन्हें आस-पास होने वाली बातचीत और उन किताबों में से निकल कर लाते हैं, जो वयस्कों उनके साथ या सामने पढ़ते हैं। बच्चा जितनी बातचीत और किताबों की चर्चा का हिस्सा बनेगा, उसकी भाषा उतना ही समृद्ध होगी।

कक्षा-कक्ष किस प्रकार का दिखता है, उसमें रोशनी की क्या व्यवस्था है, कक्षा-कक्ष में बच्चे को घर जैसा कितना वातावरण मिल रहा है, ये सब बेशक बच्चे की भाषा सीखने की क्षमता और उनके सीखने को लेकर पहल करने पर असर डालते हैं। पर उससे भी ज़रूरी है कक्षा में एक ऐसा व्यवस्थित माहौल तैयार करना जिसमें बच्चे खुद को अभिव्यक्त कर पाएँ और दूसरे बच्चों के साथ सहजता से संवाद स्थापित कर पाएँ। ऐसे अवसरों को पैदा करने के लिए हमें ऐसी छोटी-छोटी गतिविधियों के बारे में सोचना होगा जिनमें बच्चों को छोटे समूहों में एक दूसरे से बातचीत करने का मौका मिले, वो एक दूसरे के साथ संबंध स्थापित कर पाएँ, जुड़ पाएँ और खुद को व्यक्त कर पाये।

Think of different ways in which you can create an engaging and interactive print rich environment in the class? And list them down.

There is a child in your classroom who's name is Mohan? Mohan is a shy kind of child. He is always scared of teacher. If the teacher asks him to stand and to answer the question, doesn't speak anything. If teacher asks him again and again, he usually starts crying. List some activities you will plan for 'Mohan' so that he will also become the part of the classroom process .



हम बच्चों के साथ कभी कभी जानकारी आधारित बातचीत भी कर सकते हैं। कक्षा में इस तरह की बातचीत करने के अवसर बनाए जा सकते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

1. बच्चे रोज़ाना नये-नये शब्दों से परिचित होते हैं। वे कुछ शब्दों को पकड़ लेते हैं और उन्हें इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं। उन शब्दों के उचित उपयोग करने में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये ज़रूरी नहीं है कि शिक्षक उन्हें डाँटे या रोके, अपितु वह संदर्भ के अनुसार उसी शब्द को सही तरह से इस्तेमाल करके बच्चे के सामने रख सकते हैं। ताकि बच्चे खुद अवलोकन करें।

उदाहरण:—

Student: Teacher, I complaint the work.

Teacher: Very good. You completed the work?

Teacher (to the whole class): The students who have completed the work can go to the library.

इस उदाहरण में शिक्षक बच्चे को सीधा बताने की बजाए कि उसने गलत शब्द का इस्तेमाल किया है, सही शब्द का इस्तेमाल एक नये वाक्य में इस तरह कर देती है कि वो बच्चे को समझ आए।

2. बच्चों को जब कोई जानकारी ढूँढनी होती है, तब वे प्रश्न करते हैं। बच्चों द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर उनके साथ विचार करते हुए और उन्हें उत्तर देते हुए आप उन्हें और प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। अगर बच्चे किसी प्रश्न के साथ आपके पास आते हैं, तो शिक्षक उसे उस प्रश्न का उत्तर बता सकते हैं और उन्हें आगे सोचने के लिए कुछ और प्रश्न भी दे सकते हैं। मदद करने के लिए शिक्षक उन्हें ये बता सकते हैं कि वे कहाँ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, या फिर वे खुद भी उनके साथ जानकारी ढूँढना शुरू कर सकते हैं, वे जानकारी ढूँढने के लिए बच्चों के अलग-अलग समूह

भी बना सकते हैं। इस तरह बच्चों को यह मौका मिलेगा कि वे अपने शिक्षक के साथ, अपने सहपाठियों के साथ तथा लिखी हुई जानकारियों के साथ एक संवाद स्थापित कर सकें। इसी प्रकार आप उनके सामने एक आदर्श भी रख सकते हैं कि किसी भी उत्तर को ढूँढने के लिए किस प्रकार की प्रक्रिया की ज़रूरत होती है।

3. खुद को पाठ्यपुस्तक तक सीमित करने के बजाय बातचीत को बच्चों तक ले जाना चाहिए। कुछ ऐसी चर्चाओं की योजना बनाई जानी चाहिए जो छोटे समूह में हो सके जिसमें हर बच्चे को बोलने व सुनने का मौका मिले। जिस भी विषय पर बातचीत करनी है, आप उसके अलग-अलग दृष्टिकोण को सामने रख सकते हैं। इससे बच्चों को सोचने और खुद को व्यक्त करने में मदद मिलेगी।
4. आसपास के वातावरण में क्या हो रहा है, इसके बारे में बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा बातचीत की जा सकती है। बच्चे अपने आसपास घटने वाली विभिन्न घटनाओं का सुगमता से अवलोकन करते हैं, चाहे वह शिक्षक का नए कपड़े पहनने हों या फिर इनके किसी साथी का कक्षा में नए तरीके का शार्पनर लाना हो। ऐसे छोटे-छोटे बदलावों पर बच्चों के साथ अच्छी चर्चा हो सकती है। ("You know what? Satish got a new cap from Bilaspur")

#### Let's do

- List 5 to 7 questions you can ask students to start a conversation. You need to keep in mind that experiences with the questions should help in linking children classroom activity.
- Think of the activities wherein the learners interact with each other and with the teacher in second language. For Ex: Teacher asks the students to make balance, weights and set a shop in the classroom. Teachers and students of other classes come to shop. Everybody can be requested to communicate in English as far as possible.

### 3.2 N.C.F. 2005 and Teaching of English

National Curriculum Framework 2005 is a framework developed by NCERT (National Council of Educational Research and Training) to draw public attention to what should be taught to our children and how.

Given below is the jist from NCF-05 on teaching English.

#### द्वितीय भाषा सीखना

##### A Global Language<sup>1</sup> in a Multilingual<sup>2</sup> Country (where english is second language)

भारत में अंग्रेजी-शिक्षण में विविधता की स्थिति दो कारणों से है :

1. शिक्षकों की अंग्रेजी में दक्षता।
2. विद्यार्थियों का स्कूल से बाहर मिला जुला अंग्रेजी भाषा का वातावरण।

द्वितीय भाषा की पाठ्यचर्या के दोहरे लक्ष्य हैं:

1. बुनियादी दक्षता प्राप्त करना।
2. भाषा का ऐसा विकास हो कि वह अमूर्त चिंतन और ज्ञान का उपकरण बने।

अंग्रेजी शिक्षण का लक्ष्य ऐसे बहुभाषी लोगों को तैयार करना है जो हमारी भाषाओं को समृद्ध कर सकें; यह एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण रहा है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की तुलनात्मक सफलता यह बताती है कि भाषा तब सीखी जाती है जब वह भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती बल्कि सार्थक संदर्भों से जोड़कर उसे पढ़ाया जाता है।

1. Global Language : भाषा जो सर्वत्र बोली जाती है।
2. Multilingual : दो से ज्यादा भाषाओं कि उपस्थित।

प्राथमिक शिक्षा की दृष्टि से संपूर्ण पाठ्यचर्या के अंतर्गत भाषा शिक्षण का विशेष महत्त्व है और बाद में सभी शिक्षण एक अर्थ में भाषा शिक्षण ही होता है। यह दृष्टिकोण 'विषय के रूप में अंग्रेजी' और 'माध्यम के रूप में अंग्रेजी' की दूरी को पाट सकेगा। इस तरह से हम समान स्कूली पद्धति की दिशा में प्रगति कर सकते हैं जिसमें भाषा शिक्षण और शिक्षण के माध्यम के रूप में भाषा के उपयोग में भेद न हो।

भाषाई माहौल को समृद्ध बनाने की जरूरत है जिसके लिए स्कूलों को सामुदायिक शिक्षण केंद्र के रूप में विकसित करना चाहिए। इस दिशा में कई सफल नवाचार मौजूद हैं जिनके सामान्यीकरण को खोजने और बढ़ावा देने की जरूरत है। उच्चस्तरीय कौशल (जिसमें साहित्यिक आस्वाद और जेंडर संबंधी दृष्टिकोण निर्धारण में भाषा की भूमिका शामिल है) विकसित करने की ओर तब ध्यान दिया जाए जब बुनियादी दक्षता सुनिश्चित हो चुकी हो।

शिक्षक की दक्षता और व्यावसायिक जागरूकता को समान रूप से बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है और व्यावसायिक जागरूकता जहाँ आवश्यक हो उसे शिक्षक की अपनी भाषा के माध्यम से दिए जाने की जरूरत है। जो भी शिक्षक अंग्रेजी पढ़ाते हों उनकी अंग्रेजी में बुनियादी दक्षता होनी चाहिए। हर शिक्षक में यह कौशल होना चाहिए कि वह परिस्थिति व स्तर के अनुसार उपयुक्त तरीके से अंग्रेजी पढ़ा सके। इसके लिए विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए ताकि पाठ्यचर्या निवेश-समृद्ध हो और अर्थ पर जोर दे।

भाषा-संबंधी मूल्यांकन को किसी विशेष पाठ्यक्रम के संदर्भ में उपलब्धियों से नहीं बांधना चाहिए, बल्कि उसे भाषा दक्षता के मापने में पुनःनियोजित किया जाना चाहिए। मूल्यांकन को बाधा के रूप में देखने के बजाए अधिगम की समर्थक प्रक्रिया के रूप में देखने की जरूरत है। शिक्षार्थी की प्रगति का निरंतर आकलन होना चाहिए और पोर्टफोलियो के रूप में उसका लेखन रखना चाहिए। भाषा क्षमता में राष्ट्रीय मानदण्डों को विकसित करने की जरूरत है जिसके बाद वैकल्पिक अंग्रेजी भाषा के परीक्षणों का एक समुच्चय बनाया जाए जिससे पाठ्यचर्या में आजादी और मूल्यांकन के मानकीकरण के बीच संतुलन हो।

1. पहले पैराग्राफ में लिखें – “अंग्रेजी शिक्षण ..... पढ़ाया जाता है” इसकी व्याख्या करें:-

-----  
 -----  
 -----

2. तीसरे पैराग्राफ में लिखा है- “भाषा तब सीखी जाती है ..... न हो।” अपनी सहमति / असहमति के आधार बताएँ-

-----  
 -----  
 -----

3. पाँचवे पैराग्राफ में दिए- “हर शिक्षक में ..... पढ़ा सके।” में उपयोग किए गए ‘परिस्थिति’ व ‘स्तर’ किन बातों की ओर इंगित करते हैं?

परिस्थिति

-----  
 -----  
 -----

### पढ़ना—लिखना सीखना

हालाँकि हम भाषा के विभिन्न कौशलों को एकीकृत रूप में पढ़ाने की प्रस्तावना की ज़ोर—शोर से वकालत करते हैं लेकिन कई मामलों में स्कूल को पठन और लेखन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, खासकर घरेलू भाषाओं के संदर्भ में। दूसरी, तीसरी या शास्त्रीय या विदेशी भाषा के संदर्भ में वाचिक दक्षता सहित सभी कौशल महत्वपूर्ण हो जाते हैं। बच्चे सर्वांगीण परिस्थितियों में अधिक सीखते हैं जिनमें बच्चों को सार्थकता दिखती है बजाय एक योगात्मक या बंधे बंधाए ढर्रे से जिसमें कोई अर्थ नहीं होता। समृद्ध और व्याख्यात्मक निवेश भाषा के सभी मुश्किल कौशलों को सीखने के लिहाज से महत्वपूर्ण होते हैं। कई प्रकार की संवाद स्थितियों में, जैसे फोन पर किसी को सुनकर संदेश को दर्ज करना, कई कौशल एकसाथ उपयोग में लाने पड़ते हैं। हम सचमुच चाहते हैं कि बच्चे समझ के साथ पढ़ें—लिखें। भाषा — कौशलों के पुंज के रूप में, चिंतन और अस्मिता के रूप में स्कूल के सभी विषयों में मौजूद है। बोलना और सुनना, पढ़ना और लिखना सभी सामान्य कौशल हैं और उनमें बच्चों की दक्षता, स्कूल में उनकी सफलता को प्रभावित करती है। कई स्थितियों में इन सभी कौशलों को एक साथ उपयोग में लाने की जरूरत होती है। इसलिए स्कूल स्तर पर भाषा शिक्षण सभी की चिंता का कारण होना चाहिए, न कि केवल भाषा शिक्षक का दायित्व। साथ ही, भाषा के साथ जुड़े कौशलों को केवल प्राथमिक स्तर पर ही नहीं छोड़ दिया जाना चाहिए, बल्कि जैसे—जैसे विषय में नयी आवश्यकताएं पैदा हों उनको माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों तक ले जाना चाहिए। जीवन संबंधी कौशल, जैसे आलोचनात्मक चिंतन का कौशल, अन्य लोगों के साथ संप्रेषण के कौशल, तोलमोल करने/मना करने के कौशल, निर्णय लेने या समस्या सुलझाने के कौशल, और परिस्थितियों से निपटने तथा स्वयं की व्यवस्था आदि के कौशलों का रोज़मर्रा के जीवन की चुनौतियों और आवश्यकताओं के संदर्भ में बड़ा महत्व होता है।

परम्परागत रूप से प्रशिक्षित भाषा—शिक्षक बोलने के प्रशिक्षण को, भाषा के सहभागी और अभिव्यक्तिमूलक कौशल पर ज़ोर देने के बजाय शुद्धता से जोड़ता है। इसीलिए कक्षा में बोलने को हमारी व्यवस्था में नकारात्मक मूल्य समझा जाता है और शिक्षक की काफी ऊर्जा बच्चों को शांत कराने या उनके उच्चारण को ठीक करने में चली जाती है। अगर शिक्षक बच्चे के बोलने को बेकार की बातों के बदले संसाधन के तौर पर देखें तो यह संभावना बढ़ जाएगी कि विरोध और नियंत्रण का दुष्चक्र बदल कर अभिव्यक्ति और प्रत्युत्तर का चक्र बन जाए। इस संबंध में विस्तृत ज्ञान उपलब्ध है कि कैसे बातचीत को आधार सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। सेवा—पूर्व और सेवा के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों का इससे परिचय करवाना चाहिए। (पाठ्यपुस्तक और शिक्षक मार्गदर्शिकाएं तैयार करने वालों को शिक्षकों के लिए इस तरह के निर्देश लिखने चाहिए कि किस प्रकार विषयवस्तु को बच्चों की छोटे समूह में चर्चा द्वारा और ऐसी गतिविधियों के द्वारा आगे प्रवर्तन किया जाए जो बच्चों में तुलना और विपरीतता, आश्चर्य और स्मरण, अटकल और चुनौती तथा मूल्यांकन और पहचान की क्षमता का विकास करे) सुनने के क्रम में, इसी प्रकार गतिविधियों की योजना तैयार कर पाठ्यपुस्तकों और मार्गदर्शिकाओं में उनका समावेश कर महत्वपूर्ण कौशलों और मूल्यों के विकास में काफी कुछ किया जा सकता है। इसके अंतर्गत ध्यान देने की क्षमता, अन्य व्यक्तियों की बात को महत्व देना और जो बोला गया उसका अर्थ—निर्धारण, मुक्त अभिव्यक्ति और कही गई बात पर लचीली परिकल्पना शामिल हैं। ठीक इसी प्रकार, बातचीत की तरह सुनना भी कई जटिल कौशलों का जाल है। स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों में लोककथाएं और कहानी सुनाना, सामुदायिक गायन और नाटक आते हैं। कहानी सुनाना न केवल शाला—पूर्व शिक्षा के लिए आवश्यक है, बल्कि वह बाद में भी महत्वपूर्ण बना रहता है। कथात्मक विमर्श होने के कारण, मौखिक रूप से कही गई कहानियां तार्किक समझ का आधार तैयार करती है, साथ ही, ये हमारी कल्पनाशीलता को समृद्ध बनाती है और अपने जीवन से अलग परिस्थितियों में भागीदारी की क्षमता का विकास भी करती है। कल्पनाशीलता और रहस्यात्मकता का बच्चे के विकास में बड़ा योगदान होता है। भाषा शिक्षण के एक पहलू के रूप में सुनने की कला का भी विकास संगीत की मदद से किया जाना चाहिए, जिसमें लोक, शास्त्रीय और लोकप्रिय सभी रचनाएं शामिल हों। लोकगीतों और संगीत को भाषा की पाठ्यपुस्तकों में भी स्थान मिलना चाहिए तथा उनको अभ्यास और गतिविधियों की मदद से विकसित किया जाना चाहिए।

जबकि पठन को भाषा शिक्षण का महत्वपूर्ण अवयव माना जाता है, स्कूली पाठ्यक्रम सूचनाओं और रटत पाठों से इतने भरे होते हैं कि सिर्फ पढ़ने के लिए पढ़ने का आनंद कहीं दूर ही छूट जाता है। पढ़ने की संस्कृति के विकास के क्रम में वैयक्तिक पठन को प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है, और शिक्षकों को इस संस्कृति का हिस्सा बनकर स्वयं उदाहरण पेश करना चाहिए। इसके लिए स्कूल और सामुदायिक स्तर पर पुस्तकालयों को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। यह मान्यता है कि कथा – उपन्यास पढ़ना समय नष्ट करना है पठन को हतोत्साहित करने का बड़ा कारण है। सभी स्कूली विषयों और स्कूल के सभी स्तरों पर पूरक पठन सामग्री का विकास और उनकी आपूर्ति की तत्काल आवश्यकता है। इस प्रकार की काफी सामग्री, बाजार में उपलब्ध है यद्यपि उनकी गुणवत्ता में काफी अंतर है, परन्तु उनका कक्षा में पठन-पाठन के दौरान उपयोग किया जा सकता है। कक्षा में व्यवस्थित रूप से ऐसी सामग्री का उपयोग किया जाए तो विषयों के शिक्षण में विस्तार होगा। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों को ऐसी सामग्री से परिचित कराए जाने की आवश्यकता है और उन्हें ऐसे मानदंड बताए जाने की ज़रूरत है ताकि वे प्रभावी ढंग से पठन सामग्री का चुनाव और उपयोग कर सकें।

लिखने का महत्त्व सर्वविदित है, लेकिन पाठ्यचर्या में इसको लेकर नवाचार अपनाने की ज़रूरत है। शिक्षकों का जोर इस पर होता है कि बच्चे सही तरीके से लिखें। लिखने के माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति को महत्वपूर्ण नहीं माना जाता। ठीक जैसे समय से पहले सही उच्चारण का बोझ, बच्चे के खुलकर अपनी बोली में बात करने की क्षमता को कुण्ठित करता है, उसी तरह मशीनी रूप से शुद्ध लिखने की मांग विचारों को अभिव्यक्त करने में बाधा बनती है। शिक्षकों को इस रूप में प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है कि वे लेखन को एक कला की तरह समझें, न कि कार्यालयी कौशल की तरह। आरंभिक वर्षों में, लिखने की क्षमता का विकास, बोलने, सुनने और पढ़ने की क्षमता की संगति में होना चाहिए। स्कूल में माध्यमिक और उच्चतर स्तर पर नोट तैयार करने को कौशल विकास के प्रशिक्षण के तौर पर देखा जाना चाहिए। आगे चलकर इससे श्यामपट्ट, पाठ्यपुस्तकों और कुंजी से टीपने की प्रवृत्ति हतोत्साहित होगी। ऐसे प्रयास भी आवश्यक हैं जिनसे पत्र-लेखन और निबंध लेखन की घिसी-पिटी गतिविधियों पर रोक लगाकर शिक्षा में कल्पना और मौलिकता को महत्वपूर्ण भूमिका दी जाए।

1. पहले पैराग्राफ में कहा गया है “पठन और लेखन पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।” क्यों? वर्तमान में इसमें क्या कमी है?

-----

-----

-----

2. पहले ही पैराग्राफ में – “ बच्चे समझ के साथ पढ़ें-लिखें। ” वर्णित है। क्या इस संदर्भ में कोई पौराणिक प्रसंग याद आ रहा है? दूसरों को बतायें अथवा चर्चा कर जानने-समझने का प्रयास करें। प्रसंग महर्षि वेदव्यास से जुड़ा है – जिसमें समझ के साथ लिखने का महत्त्व प्रतिपादित होता है। बेहतर होगा उसे यहाँ लिखें:-

-----

-----

-----



3. दूसरे पैराग्राफ में – “कक्षा में बोलने ..... चली जाती है।” – लिखा है। इस कथन पर आपका क्या अभिमत है?

---

---

---

4. दूसरे पैराग्राफ में ही – “ सेवा पूर्व और ..... इससे परिचय करवाना चाहिए ।” इस वाक्य में प्रयुक्त “ इससे ” का अर्थ स्पष्ट करें।

---

---

---

5. आगे – “ कहानी सुनाना न केवल ..... बना रहता है” – लिखा है । कारण बतायें क्यों?

---

---

---

6. पैराग्राफ तीन में – “ पढ़ने की संस्कृति ..... आवश्यकता है ” – क्यों? अपना अभिमत दर्ज करें!

---

---

---

7. आगे – “ पुस्तकालयों को बढ़ावा देने की जरूरत .....बताया गया है।” सहमती अथवा असहमती के पक्ष में अपना विचार बतायें।

---

---

---

8. और आगे – “पूरक पठन-सामग्री ..... आवश्यकता है।” – क्यों?

---

---

---

9. चौथे पैराग्राफ में – “लिखने का महत्त्व ..... महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता।” लिखा है। इसे स्पष्ट करें। यह कैसे किया जा सकता है? इससे क्या लाभ होगा? इसे कराने में क्या कठिनाइयाँ हैं?

---

---

---

10. आगे – “इससे श्यामपट ..... हतोत्साहित होगी।” किस संदर्भ में यह बात कही गई है? इससे क्या लाभ अपेक्षित है?

---

---

---

### 3.3 Using materials and activities for teaching English

प्रारंभिक साक्षरता और भाषा विकास की वर्तमान सोच और शोध में यह बात उभरकर आई है कि बच्चे सबसे अधिक लिखना-पढ़ना तब सीखते हैं, जब उनके लिखने-पढ़ने के अनुभवों को अर्थपूर्ण बनाया जाए और उनके जीवन से प्राप्त अनुभवों और शब्दों के साथ जोड़ा जाए। भाषा सीखने-सिखाने की वर्तमान सोच के पीछे यह अवधारणा है कि बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। यह निर्माण किसी के सिखाए जाने से नहीं, बल्कि बच्चों के खुद के अनुभवों और सक्रिय खोजबीन द्वारा होता है।

यह माना जाता है कि बच्चे अपने परिवेश से प्राप्त किए गए पूर्व ज्ञान का उपयोग करके लिखित सामग्री से अर्थ ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। बच्चे अर्थ और समझ बनाने के कुछ सामाजिक नियम घर के परिवेश से प्राप्त करते हैं और फिर इन्हें स्कूल के अनुभवों पर लागू करते हैं। इस सोच के अंतर्गत बच्चे की पृष्ठभूमि, संदर्भ और उसके अनुभव उसके ज्ञान और समझ निर्माण का आधार बन जाते हैं। यही कारण है कि कक्षा के भीतर विभिन्न गतिविधियाँ करवाने की गुंजाइश जरूरी होती है, जो कि बच्चों की विभिन्न प्रकार की भाषा, सोच और पूर्व ज्ञान को जगह दे सके।

इस उदाहरण को ध्यान से देखें:-

5 वर्ष का निशांत अपने शिक्षक के पास पहुँच कर कहता है, “जंगली तोते नकल नहीं कर सकते। और पता है कुछ बड़े तोते होते हैं जो 75 वर्ष से भी ज्यादा जीते हैं।”

“सच!”, शिक्षक ने जानना चाहा

“तोते पेड़ों के कोटरों बड़े-बड़े पत्थरों/चट्टानों के छिद्रों में रहते हैं।” निशांत ने बताया।

बच्चे प्राकृतिक रूप से खोजी प्रवृत्ति के होते हैं, चाहे चित्र बनाना हो, फिसलपट्टी पर खेलना हो, विद्यालय के भीतर भोजन बनाने की प्रक्रिया को देखना हो या किसी सूचनाओं का इकट्ठा करना हो, निशांत के संदर्भ में हर जगह उनका सीखना सतत चलते रहता है। वे अपने संसार में सीखना समझना चाहते हैं एवं अपने विचारों व अनुभवों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। परिणाम स्वरूप उनके शब्द भंडार व ज्ञान में उनकी उत्सुकता व प्रश्न करने की प्रवृत्ति ही उन्हें सीखने के लिए बांधे रखता है। और इसीलिए बच्चों को इस तरह का वातावरण उपलब्ध कराते रहना चाहिए जैसे कुछ चित्रों का प्रदर्शन, यथासंभव वस्तुओं का प्रदर्शन, पुस्तकें, चार्ट आदि जो उनका ध्यानाकर्षित कर सकें व संबंधित संदर्भ में अंग्रेजी का उपयोग करने संबंधित गतिविधि की योजना बनाई जा सके।



Children are natural knowledge seekers - whether 'cooking' in the classroom kitchen, drawing, playing on a slide, or gathering parrot facts like Nishant. They want to learn about their world, and they are eager to share their ideas and experiences with others. As a result their knowledge and vocabulary grows with each new encounter and engaging experience.

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 की अनुदित सामग्री यहां दी जा रही है। इसे पढ़कर समझने का प्रयत्न करें। भाषा एवं विशेषकर अंग्रेजी भाषा शिक्षण से संबंधित अंशों पर आधारित अभ्यास कार्य बीच-बीच में दिए गये हैं जो आपकी इस पर समझ बनाने में सहायक होंगी। भाषा शिक्षक के संदर्भ में यह मार्गदर्शी आधार है।

**Think :**

1. Which of the following questions will be suitable for Class V students? Why?
  - a) Write a paragraph on 'Time is money'.
  - b) Write a paragraph on 'How you utilize your free time'.
2. Which of the following activities will be useful for language learning? Why?
  - a) Asking children to recite the poem 'A little plant' and answer the questions.
  - b) Asking children to bring seeds, grow saplings in the school playground and note the observations (preferably in English) and then recite the poem.
3. Which of the following classroom situations is better? Why?
  - a) A teacher enters the classroom; students stand up and wish the teacher. They sit down at their places and continue their chit chat. Teacher asks them to keep quiet, bangs on the table, shouts, but no body listens. Then he goes to one of the groups of students and tries to be a part of that group. Children hesitate, but slowly he makes them comfortable. He starts taking interest in their conversation, listens to all and then add one or two points from his side and thus the conversation goes on. Slowly he involves other children too in the conversation.
  - b) A teacher enters the classroom; students stand up and wish the teacher. They sit down at their places and continue their chit chat. Teacher asks them to keep quiet, bangs on the table, shouts, but no body listens. Teacher starts writing on the board, and asks the children to write. Children open their copies and start writing. They finish questions and answers of two lessons - copy answers from the board.

**(i) Using real objects/ Models and situations**

बच्चे की भाषायी क्षमता को बढ़ाने के लिए उसके वातावरण में मौजूद सामग्री और उसके अनुभवों का इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण— पसंद, नापसंद, पसंदीदा खाना, सब्जी, लोग, शिक्षक, उसका घर, परिवार, दूधवाला, नाई की दुकान, बाजार, खेल का मैदान, खेल और ये सूची बहुत लम्बी हो सकती है। आइये इस उदाहरण के बारे में सोचें।

शिक्षिका हीना पहले से ही कक्षा-1 में मौजूद है। जैसे-जैसे बच्चे कक्षा में आ रहे थे वह सबका स्वागत करते हुए कह रही थी, "Good morning, Preeti" "Welcome, Syed" बच्चे उसे ध्यान से देख रहे थे। हीना अपने साथ अलग-अलग प्रकार की सब्जियाँ लाई थी जिन्हें उसने एक थाली में जमाना शुरू कर दिया। अब हीना और बच्चों के बीच में जो बातचीत हुई, वह कुछ इस प्रकार है—

Teacher : What have I brought today to the classroom?

Students : Vegetables.

Teacher : Do you know their names?

Students : Bhindi, tamatar, aaloo....

Teacher : (showing them lady's finger) this is lady's finger, it's long.

Teacher : What is the colour of lady's finger?

Students : Hara.

Teacher : Yes, it's Hara, it's green.

Teacher : Shubha, come and take this lady's finger. (also expresses this with gestures, repeats in English).

Teacher : Now, give this green lady's finger to Raj.

Repeats this conversation 2-3 times with other students.

Teacher : (showing tomato) What is this?

Students : Tomato/ tamatar (Accepts all the answers)

Teacher : Yes, it is Tomato.

Teacher : Is it long? (Shows lady's finger) Is it long like lady's finger?

Students : No response.

Teacher : It is round.

Teacher : (showing lemon) Is it long or round?

Students : Round

Teacher : Lady's finger is long; tomato and lemon are round.

Teacher : (showing cucumber) Is it round like lemon and tomato?

Student : No, Long.

Repeats this for potato and beans.

Teacher : Now let's do some printing.

Teacher gives drawing sheets to each of the students. She keeps water colours in dishes, gives them the pieces of lady's finger, beans, potato. Show them once how to dip and print.

Now, all the children are busy doing their printing. Students are using names of vegetables in English. After this Madam Heena is going to display the children's work on the walls of the classroom.

#### **Think :**

- Could the teacher teach English to the children?
- What did the children learn?
- Was it a boring class? Why/Why not?
- Heena has used familiar and easily available objects to teach language. Identify some objects / daily life experiences of a child. Think of ways to use them for language learning in the classroom. (Hint - you may think of items in a kitchen, a playground, a bathroom or a shop etc)
- Collect the variety of stones, shells, feathers, coins, buttons, dry leaves and arrange all this in a corner of your classroom in an organized manner. Name this corner. Share about this collection with your students in English - from where you collected them? Why? Etc. This will help you to practice English and give your students opportunities to listen to English.

#### **(ii) Story telling**

सभी बच्चों को कहानी सुनना पंसद होता है। वह स्कूल आने के पहले भी अपने दोस्तों, को और अपने छोटे भाई-बहनों का कहानी सुनाते हैं। मगर उनकी पाठ्यपुस्तकों में कुछ वाक्य या कुछ छोटे अनुच्छेद ही होते हैं, लेकिन अगर शिक्षिका उनके लिए कहानियाँ पढ़े तो क्या इससे बच्चों को कुछ फायदा होगा? चलिए इस पर विचार करते हुए यह लेख पढ़ते हैं—

“बच्चे को किस उम्र का होना चाहिए, इससे पहले कि उसे पढ़ना सीखाया जाए? ” यह एक ऐसा प्रश्न है जो पालकों द्वारा अधिकतर पूछा जाता है। अगला प्रश्न होता है – “बच्चा कब खुद पढ़ने के काबिल हो जायेगा?”

पहले प्रश्न के उत्तर में मैं उनसे प्रश्न करता हूँ— “आप अपने बच्चे से कब बात करना प्रारंभ करते हैं? क्या आप उसके छः माह के होने का इंतजार करते हैं?”

“हम उसके जन्म लेने के दिन से ही बात करना प्रारंभ कर देते हैं।” पालक बड़े गर्व से बताते हैं। “और आपके बच्चों ने जन्म लेने के दिन किस भाषा में बात किया? अंग्रेजी, हिन्दी या कन्नड? वे हिन्दी कहना चाहते थे कि एक विचित्र भाव उनके चेहरे पर दिखा क्योंकि वे महसूस कर चुके थे कि बच्चे ने अब तक किसी भाषा का प्रयोग नहीं किया था या उसने कुछ नहीं बोला था।

“आश्चर्यजनक!” मैंने कहा। जब आप अपने बच्चे को अपनी गोदी में लेकर कुछ कह रहे हैं — बेटा, हम आपको प्यार करते हैं बंटी, पापा और मैं सोचते हैं कि आप दुनिया के सबसे बुद्धिमान बच्चे हो क्या तुम्हें पता है?

तब आप बहुत से सिलेबिल वाले शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं, कठिन/जटिल संरचना वाले वाक्यों का प्रयोग करते हुए बात कर रहे हैं, उस बच्चे से जो आप जो बोल रहे हैं उसका एक शब्द भी नहीं समझता है। आपने ऐसा करने से पहले एक बार भी नहीं सोचा। किंतु अधिकांश लोग उसी बच्चे को पढ़कर सुनाने के बारे में कल्पना भी नहीं कर सकते। यदि बच्चा इतना बड़ा है कि उससे बात की जा सकती है तो वह पढ़ भी सकता है। क्योंकि भाषा तो वही है।

जबकि दूसरी तरफ ऐसे शोध कार्य भी हैं जो यह दर्शाते हैं कि जिन बच्चों को पढ़ने के लिए कम उम्र में बाध्य किया गया उन्हें कक्षा दो से आगे सीखने में मज़ा नहीं आया।

कोई भी विशेषज्ञ यह नहीं कहते कि “पढ़ने में शीघ्रता/तत्परता” खराब बात है। बल्कि वे मानते हैं कि जल्दी पढ़ना शुरू करने वाले बच्चे स्वाभाविक रूप से, स्वयं के प्रयास से उस मुकाम तक पहुंचते हैं, बिना कोई माता पिता के प्रयास से, उन बच्चों के मूकाबले जिन्हें प्रतिदिन के समय बंधन में अक्षर, ध्वनी, या शब्द खण्ड/“सिलेबिल” सीखाते हो।

प्रायः देखा जाता है कि जो बच्चे पढ़ना सीख जाते हैं, उनके लिए पालक और शिक्षक, जोर से पढ़ना बंद कर देते हैं। जैसे मेरा बच्चा कक्षा चौथी में अपने स्तर के सभी विषय वस्तुओं को पढ़ लेता है तो “उसके लिए मैं क्यों पढ़ूँ?” इस प्रश्न में कई गलत अवधारणायें छिपी हुई हैं।

अधिकांश बच्चों के सुनने का स्तर उनके पढ़ने के स्तर से कक्षा आठवीं तक काफी उंचा होता है। चौथी में पढ़ने वाला बच्चा भी सम्पूर्ण रूप से कक्षा छठवीं के लिए लिखे किताबों को सुनकर समझने के काबिल होता है — उत्तेजित करने वाली कहानियाँ, समृद्ध करने वाली एवं चुनौतिपूर्ण सामग्रियाँ जिसे वह स्वयं पढ़ सके।

जोर जोर से बोलकर पढ़ने को केवल भाषा की कक्षा तक सीमित करना एक गलती है। जब बच्चे पुस्तकों से प्यार करते हैं तो उसका असर पाठ्यक्रम के प्रत्येक भाग पर पड़ता है।

बच्चों का शब्द भंडार, वर्तनी (spelling) यह उच्चारण और लेखन कैसे सुधारें? पठन के द्वारा। शब्द भंडार, वर्तनी, उच्चारण आदि शब्दकोश देखकर नहीं सीखा जा सकता। हम शब्द वर्तनी उच्चारण उसी तरह से सीखते हैं जैसे शिक्षक नए प्रत्येक बच्चों का नाम जुलाई माह में सीखता है। उनसे बार-बार मिलकर, नाम और चेहरे के बीच तालमेल बिठाकर। प्रत्येक व्यक्ति शब्द का उच्चारण अपनी स्मृति के आधार पर करता/बताता है, किसी नियम के आधार पर नहीं। जब संदेह हो तब हम शब्द को कई तरह से लिखकर देखते हैं और जो सही लग रहा है उसका चयन करते हैं। एक बच्चे का जितनी बार किसी शब्द से सामना होता है और उस शब्द का उपयोग वाक्य और पैराग्राफ में देखता है, उतना ही अधिक वह उस शब्द को जानेगा, समझेगा एवं उच्चारित कर पायेगा/वर्तनी बता पायेगा। इसके ठीक विपरीत जितना कम हम पढ़ेंगे उतने ही कम शब्दों से हमारा सामना होगा और उस शब्द के अर्थ/वर्तनी के मामले में हम उतने ही अनिश्चित होंगे।

एक शिक्षक में जितने गुण होने चाहिए उनमें से सबसे अधिक फ़ैलने वाला गुण है उत्सुकता। क्या आपमें किताबों के प्रति उत्सुकता है? क्या आपके विद्यार्थियों ने आपको कभी अपने हाथों में पाठ्यपुस्तक के अलावा किसी और किताब के साथ देखा है? क्या आपने कभी उस किताब के बारे में कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा की जिसे आप सुबह के दो बजे तक पढ़ते रहे? क्या आपने किसी पत्रिका में कोई आलेख या समाचार पत्र में स्तंभ को अपने बच्चों को कक्षा में पढ़कर सुनाया जिसने आपको वाकई प्रभावित किया हो या आपको रुचिकर लगा हो?

### Let's do

बच्चों के साथ-साथ शब्दों पर ऊंगली रखकर पढ़े तो बच्चों को पढ़ने की प्रक्रिया समझने में और नये शब्दों को जानने में मदद मिलती है। वह नई भाषा को अर्थपूर्ण संदर्भ में सुनते हैं और कहानी में आगे क्या होने वाला है? इसका अनुमान भी लगाना शुरू कर देते हैं।

Think of other ways to provide exposure to the students so that they see, predict the words, speak about things in second language.

For Example - Write a story on a big chart paper. Cut the sentences and put them in a big box. Now ask the children to sit in groups, read the sentence aloud and arrange them to make a complete story. Select any one story of your choice in English. Tell the reasons why your selected the story. Read it aloud for your students.

### (iii) Songs, rhymes and word play (गीत, कविताएं और शब्दों का खेल)

Rhymes can be of great use to help students practice speaking English in the elementary level. Rhymes are fun. When children repeat a rhyme after the teacher they start speaking a new language without being overtly aware of this fact. Secondly, singing rhymes in group helps little ones get rid of the shyness. Further working with their friends enhances self confidence of the learners. This is the starting point to develop confidence in students to try to use the language in speaking. However, we can use rhymes for developing other language skills and sub-skills too. Depending on the level and language proficiency of learners we can use rhymes to draw learners' notice to features of conversation, how to ask questions and respond.

Young children love to sing, clap, rhyme and play with words. Teachers' job is to help them use these fun activities with greater intentionality - that is, to help children notice the sounds they hear and are making.

कविताएं सुनना और गाना, केवल बच्चों को ही नहीं बल्कि बड़ों को भी पसंद होता है। कविताओं में शामिल ताल और लय उन्हें मजेदार बनाती है। अगर एक चुनी हुई अच्छी कविता जो की आसानी से कक्षा में गाया जा सके, बच्चों के साथ कक्षा में कही जाए तो उन्हें अंग्रेजी भाषा बोलने में मदद करती है। कविताओं को गाते समय बच्चे सिर्फ कविताओं का आनंद लेते हैं उन्हें इस बात कि चिंता नहीं होती कि वह अंग्रेजी सही बोल रहे हैं या नहीं जो अनुभव उन्हें दूसरी परिस्थितियों में अंग्रेजी बोलते समय होता है। कविताएं गाते समय बच्चे किसी भी तरह के दबाव के बिना अंग्रेजी का इस्तेमाल करते हैं।

साथ ही में अंग्रेजी का उपयोग करने व अंग्रेजी में नई कविताएं सृजित करने का आत्मविश्वास भी देती है। यही छात्रों में वह शरूआती दौर होता है जब भाषा का उपयोग

आत्मविश्वास पूर्वक बोलने में किया जाता है। भाषा के अन्य कौशलों व उप-कौशलों के विकास में भी कविताएं बहुत उपयोगी हैं। कविताओं का उपयोग, छात्रों में वार्तालाप की संकल्पना को ध्यान में लाते हुए प्रश्न पूछने व उत्तर देने के लिए किया जा सकता है जो उनके भाषाई क्षमता वर्धन पर निर्भर करता है।





अंग्रेजी कक्षा का एक दृश्य नीचे वर्णित है, शिक्षिका लीना कक्षा 3 में कविताओं का उपयोग करते हुए अध्यापन करा रही हैं।

Leena went to the school park with the children. She asked them to follow her. She recited the following rhyme and children followed her line by line.

There's a lovely park,  
A lovely, lovely park,  
A beautiful lovely park;  
And the green grass grows around,  
And the green grass grows around.

There is a lovely branch,  
A lovely, lovely branch,  
A beautiful, lovely branch;  
The branch is on the tree;  
The tree is in the park;  
And the green grass grows around,  
And the green grass grows around.

There is a lovely egg,  
A lovely, lovely egg,  
A beautiful, lovely egg;  
The egg is in the nest;  
The nest is on the branch;  
The branch is on the tree;  
The tree is in the park;  
And the green grass grows around,  
And the green grass grows around.

There is a lovely tree,  
A lovely, lovely tree,  
A beautiful, lovely tree;  
And the green grass grows around,  
And the green grass grows around.

There is a lovely nest,  
A lovely, lovely nest,  
A beautiful, lovely nest;  
The nest is on the branch;  
The branch is on the tree;  
The tree is in the park;  
And the green grass grows around,  
And the green grass grows around.

There is a lovely bird,  
A lovely, lovely bird,  
A beautiful, lovely bird;  
The bird is on the egg;  
The egg is in the nest;  
The nest is on the branch;  
The branch is on the tree;  
The tree is in the park;  
And the green grass grows around,  
And the green grass grows around.

All the children followed their teacher, added new stanzas and enjoyed a lot.

Then the teacher asked them to recall the poem and draw related pictures on the board (in groups).

First group drew the first stanza the other groups added to what was drawn by the previous groups.

Now the teacher asked them to label the different parts of this picture. She wrote all the important words on the board. Children selected the words and wrote at appropriate places on the board - 'tree' near the picture of a tree, 'egg' near the picture of egg etc.

Now the teacher wrote the first stanza on the board. She recited it with the children. She also used a ruler to point out the words in the poem while reciting. Children added the rest of the stanzas with their teacher's help.

Though the children did not know how to read the new words, they could identify and read them with the help of their teacher.

Then the teacher displayed the whole poem on a wall and children recited it every morning for a week. By the end of the week children were able to identify all of these words, pronounce and use them.

- Do you like this class? Why/Why not?
- What more activities can be done with this rhyme? Do them with your students.
- Search more rhymes or select the rhyme from the students text book and design interesting activities around it.

Given below are some rhymes. Recite and enjoy! Think of more activities based on them and do them with your children.

### **The Key of the City**

This is the key of a city,  
 In that city is a town;  
 In that town is a street;  
 In that street there is a lane;  
     In that lane there is a colony;  
     In that colony there is a house;  
     In that house there is a room;  
     In that room an empty bed,  
             And on that bed a basket -  
             A basket of sweet flowers  
             Of flowers, of flowers;  
             A basket of sweet flowers.

Flowers in a basket;  
 Basket on the bed;  
 Bed in the room;  
 Room in the house;  
     House in the colony;  
     Colony in the lane;  
     Lane in the street;  
     Street in the town;  
             Town in the city;  
             This is the key of the city  
             Of city this is the key...

**The Answers**

'When did the world begin and how?'  
I asked a lamb, a goat , a cow

'what is it all about and why?'  
I asked a hog as he went by.  
'Where will the whole thing end and when?'  
I asked a duck, a goose, a hen:  
And I copied all the answers too,  
a quack, a honk, an oink, a moo.

**Let's keep it blue**

Let's keep it blue  
The sky  
The sea

Let's keep it green  
The grass  
The tree

Let's keep it clean  
The sky  
The sea

It's up to you  
The grass  
The tree

The sky  
The sea  
Let's keep it  
Let's keep it.  
It's up to me

**Mice**

I think mice  
Are very nice.  
Their tails are long,  
Their faces small,

They haven't any  
Chins at all.  
Their ears are pink,  
Their teeth are white,

They run about  
They house at night.  
They nibble things  
They shouldn't touch

And no one seems  
To like them much.  
But I think mice  
Are nice.

**(iv) Providing opportunities for creativity:**

Three 4-year old children were sitting together:

Pinky : We're making rhymes.

Rinky : Yes, we are writing. We are making lines.

Bittu : Lines are very easy.

छोटे बच्चों के लिए लिखना, चित्र बनाना बहुत रूचिकर होता है। बच्चों को कागज़, पेन, पेन्सिल लेकर कुछ आरेख, गोले, अर्धगोले बनाते हुए आप ने देखा होगा। उन्हें लिखने व चित्र बनाने में कोई फ़र्क नहीं लगता। वास्तव में उनके द्वारा कोई "शब्द बनाना", चंद्रमा या घर या उनके परिवार के सदस्य के चित्र बनाने के समान ही लगता है।

लिखना एक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में ही होता है चाहे वह चित्र बनाने के रूप में ही क्यों न हो। कहीं ना कहीं अपनी कल्पना व सोच को किसी पटल पर अंकित करना ही है, जो पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। बच्चों को इस तरह के विचारों को अभिव्यक्त करने, प्रयोग करने के बहुत से अवसरों की आवश्यकता है। शिक्षकों को बच्चों के साथ हमेशा उनके द्वारा लिखे हुए या बने हुए चित्रों पर चर्चा करनी चाहिए क्योंकि बच्चों के पास हमेशा उनके चित्र का अर्थ होता है और यही प्रक्रिया आगे पढ़ने-लिखने के कौशल के विकास में मदद करती है। पढ़ना और लिखना दोनों साथ-साथ चलते हैं। बच्चों को अधिकाधिक लिखने, कहानियां सुनने, पुस्तकों के हर पन्नों को पढ़ने, महसूस करने, चित्रों को देखने के अवसर मिलने चाहिए। ये और भी महत्वपूर्ण होता है कि बोलते समय गलतियां होने के संभावना से उन्हें मुक्त रखा जाय ताकि यह स्वतंत्रता उन्हें ज्यादा से ज्यादा अभिव्यक्त करने का अवसर उपलब्ध करा सके बोलना, पढ़ना व लिखना सीखने में गलतियां होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

**Let's do**

Convince young children around you to write on a plain paper. Ask them what they have written.

**Now let's read the following story-****Cat and Mouse**

Once there was a cat who loved to read! At night, when everybody was asleep, she would put on her spectacles and read THE BIG BOOK FOR CATS.

One night, she read, if you want a mouse for dinner, just say,

'In this house, there is a mouse, where is the mouse, where is the mouse?'

So the cat recited the rhyme and looked up from her book. And sure enough, there was a mouse on the top of the table!

The cat jumped on the mouse. Swish! And the mouse was gone.

The cat repeated the rhyme.

'In this house, there is a mouse, where is the mouse, where is the mouse?'

Once again the cat looked around. Sure enough, the same mouse was now on her bed!

'Hi, dear aunt!' the mouse said with a giggle.

'You little fellow!' cried the cat. 'I'm going to get you!' The cat jumped on the bed to catch the mouse. Swish! And the mouse was gone!

Now the cat hid behind the door. She repeated the rhyme:

'In this house, there is a mouse, where is the mouse, where is the mouse?'

Sure enough, the mouse appeared, but this time he could not see the cat. The cat quickly jumped and caught the mouse by the tail.

But the mouse was very clever. Suddenly he squeaked, 'Oh, my dear Aunt! Run, run! There's a dog after you!'

The cat spun around and was ready to jump out of the window. She let go the mouse and he was gone!

'Ha-ha-ha, dear Aunt!' laughed the mouse. 'That was a trick I learnt from THE BIG BOOK FOR MICE!'

And the mouse ran back to his home.

### Let's do

Do you think, the students will enjoy this story? Why do you think so?

Select stories for classes 1 to 5, and write reasons for selecting these stories. Read aloud to them and weave activities around them. Write your experiences in the diary.

## (v) Games, plays and puppetry

### Games:- Why to use games in class time?

सामान्यतः हम सभी खेल खेलना पसंद करते हैं, कुछ लोगों को indoor games<sup>1</sup> पसंद है तो कुछ लोग out door games<sup>2</sup> खेलना पसंद करते हैं। बच्चों के संदर्भ में वे हर प्रकार के खेल खेलना पसंद करते हैं। बच्चे खेलने के दरम्यान भाषा का उपयोग तरह-तरह से करते हैं। जैसे खेल के नियम बनाने के लिए, एक दूसरे से बातचीत करने के लिए, किसी स्थिति परिस्थितियों को समझाने के लिए अन्य खिलाड़ियों को निर्देशित करने के लिए आदि। वे इस वातावरण में स्वतः ही एक-दूसरे से अर्थपूर्ण संवाद कर लेते हैं।

भाषा के सीखने व उपयोग में खेल एक बेहतर प्लेटफार्म हो सकता है। शिक्षकों को यह कक्षा में बच्चों को लंबे समय तक बांधे रखने में मदद करेगी। इनके अलावा इस तरह के भाषाई खेल शिक्षकों व बच्चों की दूरी कम करते हैं व बच्चों को झिझक व उनके शर्मिलेपन से मुक्त रखता है। अतः भाषाई खेल कक्षा में कई तरह के ऐसे वातावरण निर्मित करते हैं। जो बच्चों के सीखने व शिक्षकों को सीखाने का एक सौहाद्रपूर्ण वातावरण निर्मित करने में उन्हें लगातार मदद करते हैं।

*The game context makes the foreign language immediately useful to the children. It brings the target language to life. (Lewis, 1999)*

भाषायी खेल के माध्यम से अंग्रेजी सीखने का एक सहज वातावरण तैयार किया जा सकता है। जिस प्रकार बच्चे खेल में बिना कोई बात ध्यान में रखे कि वे अपनी मातृभाषा सीख रहे हैं।

### खेल का चयन कैसे करे (टायसन, 2000)

- खेल मज़ा लेने से थोड़ा कुछ ज्यादा होना चाहिए।
- खेल दोस्तानापूर्ण प्रतियोगिता के रूप में हो।
- खेल में सभी छात्रों की पूर्ण सहभागिता व रुचि हो।
- खेल के दौरान इस बात को बढ़ावा मिलना चाहिए कि बच्चों का ध्यान भाषा के इस्तेमाल पर हो न कि भाषा पर।
- खेल के द्वारा छात्रों को सीखने, अभ्यास या भाषा सामग्री को उपयोग करने का एक अवसर मिलना चाहिए।

**Let's do**

- When we play the game of 'inside-out' - We draw a circle on the ground. All of us stand on the circle. When the leader says 'Inside' we all jump inside the circle; when he/she says 'out' everyone jumps out of the circle. When this is repeated randomly everyone enjoys a lot. We learn the prepositions - in, out. Further, if we use it in the class, we can make simple sentences just by adding one verb - come in, go out, jump in etc.
- Similarly we can play the game of 'stop-move-stop' - All the children move without touching each other. The teacher gives instructions like move, stop etc. When children get competent with the use of these, teacher may add instructions like: run, jump, smile, sing, dance, clap, touch the ground, turn around, etc. This may be helpful in introducing/ practicing verbs and making them familiar with new vocabulary!
- Stand in a circle with the children. Ask them to tell their names with one adjective preferably beginning with the same sound as their names - Simple Sneha, Nice Neelesh etc. If they can't find, allow them to use different adjectives or use Hindi. Once they tell you in Hindi, tell them the English equivalent of that word.
- Make an incomplete picture on the chart paper. Ask each one of the students to think about the next action or part of that picture and share in English (Please remember that they all can use Hindi words and have freedom to make mistakes while speaking in English - these are the first steps for learning a language, so please encourage them.) They will try to give different answers. Write your experience in the diary.
- Think about more games (or discover them with your students) that help children to learn language while having fun.

**Play**

बच्चों द्वारा मिट्टी से छोटे-छोटे बर्तन, खिलौने बनाकर अपने परिवार के सदस्यों की भूमिकाओं (जैसे माता, पिता व बड़ों) के रूप में खेलते हुए आपने देखा होगा। वे भोजन बनाते हैं, परोसते हैं। कुछ डॉक्टर की भूमिका में तो कुछ रोगी की भूमिका में उन वस्तुओं का इस्तेमाल करते हैं।



वे वास्तव में इस तरह के खेल को घंटों एक साथ खेलते हुए आनंद लेते हैं। बच्चों को सिखाने के लिए अगर उनके रुचि के क्षेत्र का इस्तेमाल किया जाए तो न सिर्फ छात्रों और शिक्षक के बेहतर संबंध बनेंगे अपितु बच्चों की भी सीखने में रुचि बढ़ेगी।

वायगॉट्सकी ने अपने व्याख्यान में बच्चे के शुरुआती दौर में खेल के महत्व को निम्न प्रकार से बताया है :-

*In play, children are involved in an imaginary situation, with explicit roles (they know the role that each one of them are playing - doctor / mother/ father/ patient) and implicit rules (though it is not stated how a patient should behave, a child who is playing the role of a patient will behave like a patient) For instance, when playing 'families' they take on clearly understood roles and their actions are determined by those*

*roles. This leads to a greater degree of self-regulation, the children's actions being determined by the rules of the game. When involved in play, children's concentration and application to the task are much greater than in academically-directed activities fixed by the teacher.*



*Pretend play activity is essential in the early years because it leads to development. Play develops children's oral language, oral-language comprehension and storytelling abilities.*

### Let's do

A. Given below are some situations. Create short play based on them. Share them with your friends/students/family members.

- As this the repetition of what we asked before, can we given other situation.  
"Raju lives in a village. He need to conuince his parents and relatives to send him and his siblings to school. His parents and relatives give several reasons for not sending their words to school. But ultimately get convinced.
- Susheela is a Primary teacher. She observes that most of the villagers in the community are not able to read and write. So, she decides to take night classes for them. Only one woman agrees to attend these classes. Now, Susheela is trying hard to convince other members too. Write a play to depict this situation.
- Complete the following conversation-  
One day the students meet a fairy of colours. They ask a lot of questions to the fairy and the fairy answers them all beautifully.

### Example-

Sneha - Where do you get these colours from?

The fairy - I get them from the rainbow.

B. Given below are some situations. Create play for your students. Ask them to act. Allow children to make changes to the dialogues. Do not expect word to word repetition from the children. If needed, allow them to use words from their mother tongues, so that they will feel free comfortable and enjoy the play.

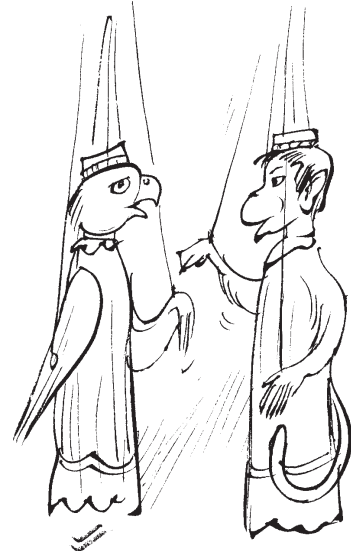
- Do this with your students - Convert the popular story of Rabbit and the Tortoise into a play, give the dialogues to your students and help them to enact it. Allow them to use Hindi words, if they forget the English ones.
- One day a cow enters the classroom. The cow is confused and all the students are shouting; some are scared. The owner of the cow is an Englishman who has just bought it from a farmer. Englishman is suspecting that the children have taken the cow deliberately into the classroom. He is going to complain to the Principal. Children have to manage the situation.

### Puppetry

बच्चों के रूचि के क्षेत्र को बच्चों के विषयगत शिक्षण का आधार बनाना, एक विषय पढ़ाने का बेहतरीन रास्ता हो सकता है क्योंकि यह प्रभावी अधिगम को बढ़ावा देता है। वे इन गतिविधियों को करने के लिए स्वाभाविक रूप से करने प्रोत्साहित होते हैं।

हम बच्चों को घंटों कार्टून से संबंधित गतिविधियों में बांधे रख सकते हैं। नाटकों के प्रति वे बहुत उत्साहित रहते हैं। खेलों का मजा लेना तो उनके जीवन का स्वाभाविक हिस्सा होता है। इसी तरह कठपुतलियों का खेल भी बच्चों को बहुत भाता है लेकिन बच्चों के पास यह खेल देखने के मौके बहुत कम होते हैं। कठपुतलियों को खेल भी कक्षा में अन्य खेलों की

1. indoor games : वो खेल जो आप घर के अंदर खेलते हैं।
2. out door games : वो खेल जो आप घर के बाहर खेलते हैं।



तरह उत्साह व कौतूहल/ जिज्ञासा पैदा करता है। जब बच्चे कठपुतलियों को खुद इस्तेमाल करते हैं तब आनन्द दो गुना हो जाता है।

कठपुतलियां बनाना बहुत आसान है। वे नाचते हैं, बात करते हैं, गाते हैं, कूदते हैं, पढ़ते हैं, लिखते हैं, और पढ़ाते भी हैं! बच्चों को बातचित करने और सुनने का संदर्भ भी मिलता है। इसमें बच्चों को सहज वातावरण में भाषा का उपयोग करने के मौके मिलते हैं। उन्हें रूचिकर कहानियां पढ़ने का अवसर मिलता है, जिन्हें वे कठपुतलियों के माध्यम से निभाते हैं। इन कठपुतलियों का उपयोग अपने विचार व भावनाओं को भी अभिव्यक्त करने में कर सकते हैं।

**One thing to keep in mind while selecting the material:**

No material is fit for all times and for everyone. A set of criteria needs to be identified before any material is evaluated or used.

### 3.4 How to teach with the help of textbook?

A text book is prepared considering the age and grade appropriate grammar points, level of vocabulary, sentence patterns for each of the classes setting the level of learning from easy to hard. A teacher gets a sense of what all needs to be discussed with the children. It ensures the common teaching points across the board.

The textbook can be boring if we over use it. No one textbook can be ideal for any particular class. Our experience tells us that the children are eager to know and learn about new things. They love variety in stories, games and poems. Hence, planning all the interactions in the class, based on a textbook does not engage the children.

A teacher needs to look for more material to support the textbook.

Every teacher can be a material developer and therefore should provide additional teaching material over and above the textbook material.

Just as piano does not play music, a textbook does not teach language. The textbook is a stimulus or instrument for teaching and learning.

Textbook provides a syllabus for the course, activities, readings, basis for assessing students' learning, consistency with a programme across a given level and supporting material.

On the other hand, the content of the textbook may not be relevant, there may be too much focus on specific aspects of language and not enough focus on others, there may not be the right mix of activities, the material may go out of date or the timetable may be unrealistic. It's important to adapt the text book by changing, supplementing, eliminating and sequencing material.

A Text book is just one out of the many resources to teach. Teachers should not use it as sum of all the experiences to be given at that particular age. A text book has to be supplemented with story books, books with pictures, flash cards, real objects etc.

**Let's do**

Select any one lesson from the text book for English from classes I to VII. How will you deal with this lesson in the classroom to provide a rich learning experience to the children? What kind of extra support material would you use?

### 3.5 Using children's literature for teaching English

#### कुछ शोध:

दशकों से, विभिन्न शोधों ने यह साबित कर दिया है कि बाल साहित्य न केवल बच्चों को आनन्द व रोमांच की अनुभूति देता है, अपितु उनके भाषाई, सामाजिक और सृजनात्मक विकास में भी विशेष रूप से सहायक होता है।

दुनिया में अनेकों शोधों से यह बात भी सामने निकल कर आई है कि जो बच्चे खुशी के लिए पढ़ते हैं, वे बेहतर पाठक बनने में सफल होते हैं। साथ ही साथ बच्चे जितना समय कहानियाँ/कविताएँ या साहित्य पढ़ने में लगाते हैं, पढ़ने के प्रति उनकी रुचि उतनी ही अधिक बढ़ती जाती है, और उनके पढ़ने की क्षमताएँ कौशल, अभिव्यक्ति व लेखन, सभी को बेहतर बनाती है।

किन्तु दुर्भाग्यपूर्ण बात ये है कि इन सभी तथ्यों को नज़र अंदाज करते हुए हम बच्चों को सीधे पढ़ना सिखाने लगते हैं। बच्चों के पढ़ने की शुरुआत करने के दौरान जो हौसला और रुचि पैदा करने की ज़रूरत होती है, वह तो हम भूल ही जाते हैं। बच्चों को किताबों व कहानियों की जादुई दुनिया से अवगत कराने के बजाय हम उन्हें 'a for apple, b for bat' रटवा-रटवा कर किताबों व पढ़ाई के प्रति एक गहरी हिचक और झुंझलाहट पैदा कर देते हैं।

इस बात में कोई दो राय नहीं हो सकती कि बच्चों को पढ़ना सिखाने से पहले उनमें पढ़ने के प्रति ललक पैदा करनी होगी।

**Think :** अपनी कक्षा के बच्चों को आप पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अलावा और किस प्रकार की पुस्तकों से परिचित कराना चाहेंगे? कारण सहित बताएँ।

#### बाल साहित्य (Children's literature)

बाल साहित्य का आशय उन समस्त पुस्तकों से है जो बच्चों द्वारा लिखी हुई या बच्चों के लिए लिखी गई या पसंद की गई होती है।

**Children's literature include:-** इसमें निम्न पुस्तकें सम्मिलित हैं—

- चित्र आधारित किताब जिसमें अवधारणात्मक किताबें (वर्णों और गिनती पर आधारित), बिना शब्दों की किताबें, पैटर्न आधारित किताबें शामिल हो सकती हैं।
- कविताएँ
- पारंपरिक साहित्य— इसके अंतर्गत विविध लोक कथाएँ आती हैं, जिसके ज़रिये हम उस समय की चर्चित कहावतें, रीति-रिवाज़ों, अंधविश्वास और लोगों के विचारों के बारे में जान सकते हैं। इसके अंतर्गत और भी शैलियाँ आती हैं जैसे कि निति कथाएँ, पौराणिक कथाएँ, जनश्रुतियाँ आदि।
- काल्पनिक कहानियाँ
- अकाल्पनिक कहानियाँ
- जीवनियाँ खासकर आत्मकथाएँ

Try to add to the list with examples. (you may refer your Hindi Language book)

उदाहरण के साथ सूची को और बढ़ाएँ।

#### बच्चों के विकास में बाल साहित्य की भूमिका

भाषा अर्जन एक दिलचस्प प्रक्रिया है। भाषा सीखने की प्रक्रिया को अनेकों तरीकों से समृद्ध बनाया जा सकता है। जैसे— फिल्म, नाटक, अखबार, पत्रिकाएँ, कहानियाँ, कविताएँ आदि के उपयोग के द्वारा। पर इन में से बाल-साहित्य सबसे बेहतरीन साधन सिद्ध हो सकता है।

जब बच्चे पढ़ना भी नहीं जानते तब भी हम उन्हें अनगिनत कहानियाँ सुनाते हैं। ये कहानियाँ पुराने समय की होती हैं, या रोजमर्रा के जीवन से संबंधित या बच्चों के जीवन से जुड़ी होती हैं, या जानवरों या परियों की दुनिया में ले जाती हैं। अच्छी कहानियाँ जिंदगी भर साथ रहती हैं। आज के टी.वी. और कम्प्यूटर के युग में भी कहानियों का अपना आकर्षण है।

### आइए एक कहानी पढ़ें—

ONCE upon a time there were three Billy-goats, who were to go up to the hill-side to make themselves fat, and the name of all three was "Gruff."

On the way up was a bridge they had to cross; and under the bridge lived a great ugly Troll.

So first of all came the youngest billy-goat Gruff to cross the bridge.

"Trip, trap!trip, trap!" went the bridge.

"WHO'S THAT tripping over my bridge?" roared the Troll.

"Oh, it is only I, the tiniest billy-goat Gruff; and I'm going up to the hill-side to make myself fat," said the billy-goat, with such a small voice.

"Now, I'm coming, to gobble (eat up) you up," said the Troll.

"Oh, no! Pray don't take me. I'm too little, that I am," said the billy-goat; "wait a bit till the second billy-goat Gruff comes, he's much bigger."

"Well, be off with you;" said the Troll.

A little while after came the second billy-goat Gruff to cross the bridge.

"TRIP, TRAP! TRIP, TRAP! TRIP, TRAP!" went the bridge.

"WHO'S THAT tripping over my bridge?" roared the Troll.

"Oh, it's the second billy-goat Gruff, and I'm going up to the hill-side to make myself fat," said the billy-goat, who hadn't such a small voice.

"Now I'm coming to gobble you up," said the Troll.

"Oh, no!don't take me, wait a little till the big billy-goat Gruff comes, he's much bigger."

"Very well!be off with you," said the Troll.

But just then up came the big billy-goat Gruff.

"TRIP, TRAP! TRIP, TRAP! TRIP, TRAP!" went the bridge, for the billy-goat was so heavy that the bridge creaked and groaned (cried) under him.

"WHO'S THAT tramping over my bridge?" roared the Troll.

"IT'S !! THE BIG BILLY-GOAT GRUFF," said the billy-goat, who had an ugly hoarse (rough) voice of his own.

"Now I'm coming to gobble you up," roared the Troll,

"Well, come along! I've got two spears,

And I'll poke your eyeballs out at your ears;

I've got besides two curling-stones,

And I'll crush you to bits, body and bones."



That was what the big billy-goat said; and so he flew at the Troll, and poked his eyes out with his horns, and crushed him to bits, body and bones, and tossed him out into the burn, and after that he went up to the hill-side. There the billy-goats got so fat they were scarce able to walk home again; and if the fat hasn't fallen off them, why, they're still fat; and so-

"Snip, snap, snout  
This tale's told out."

आपने महसूस किया होगा किस प्रकार एक छोटी सी कहानी आपको एकदम अलग सी दुनिया में ले जाने की क्षमता रखती है। ठीक इसी प्रकार का प्रभाव ये कहानियाँ बच्चों पर भी डालती हैं। कहानियों व कथाओं की ये रोमांचकारी यात्राएँ बच्चों को एक जगह से दूसरी जगह और अनदेखी जगहों की सैर कराने की भरपूर क्षमता रखती है। ये कहानियाँ ही हैं, जो बच्चों को विभिन्न संस्कृतियों, मान्यताओं, जीवन-शैलियों तथा भाषाओं से परिचित करवाती हैं।

आइए सोचें, क्यों कहानियाँ शिक्षा और मनोरंजन का एक सहज साधन हैं—

1. कहानियाँ विभिन्न देशों, संस्कृतियों व रीति रिवाजों को जानने समझने का मौका देती हैं।
2. नई जगहों की सैर कराती हैं।
3. लोगों के रहन-सहन के तरीकों को समझने में मदद करती हैं।
4. अतीत से जोड़ती हैं।
5. कल्पनाशक्ति को निखारती हैं।
6. शिक्षा की प्रक्रिया को रोचक बनाती हैं।
7. सामान्य चीजों/घटनाओं के बारे में नए तरीके से सोचने का अवसर प्रदान करती हैं।
8. भाषा कौशलों को महसूस करने का अवसर देती हैं।

अब कोई 3 लाभ अपने अनुभवों से जोड़ कर लिखें—

---



---



---

### Let's do

Work in groups select a story for children of class-3. Put your arguments for selecting the story. Listen to the arguments of other groups. Debate and come out with some parameters to decide what kind of literature is useful for the children at this level. You may also refer to the article given in subject- Hindi for "Selecting Stories for Children."

### कक्षा में कहानियों का इस्तेमाल

जैसा कि अभी हमने समझा कि कहानियाँ किस प्रकार से बच्चों के समूचे विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, उसी प्रकार से अब इस बात पर भी मंथन करना जरूरी है कि इन कहानियों का भरपूर उपयोग कक्षा में किस प्रकार किया जाए।

दरअसल अच्छी कहानी/कविता किसी भी कक्षा में एक अर्थपूर्ण संसाधन सिद्ध हो सकते हैं, यदि उनको कुशलतापूर्वक प्रयोग में लाया जाए। हममें से अधिकतर शिक्षक जाने-अनजाने ऐसा करते भी हैं।

आइए एक नज़र डालें कि एक कहानी/कविता किस तरह से अनगिनत संभावित गतिविधियों की जननी हो सकती है, जो कक्षा में बच्चों के अनुभवों को एक नया रूप दे सकती है।

| क्र.सं. | संभावित गतिविधियाँ  | भाषायी कौशलों का विकास   |
|---------|---|--|
| 1.      | भाव-भंगिमा सहित कहानी सुनाना                                    | नए शब्द/कहावतें सीखना<br>सुनने के कौशल का विकास                              |
| 2.      | कहानियों पर बातचीत/विचार-विमर्श                                 | सवाल करना<br>मौखिक अभिव्यक्ति<br>घटनाओं को जोड़ना<br>चिन्तन करना             |
| 3.      | कहानी पर नाटक करना  | संवाद कुशलता<br>अभिनय कौशल का विकास<br>बोलने की कला<br>परिप्रेक्ष्य समझना    |
| 4.      | कहानी पढ़ने सुनने के बाद मुख पृष्ठ बनाना तथा एक नया शीर्षक देना | स्मरण शक्ति का विकास<br>कला कौशल<br>अभिव्यक्ति<br>कल्पनाशीलता<br>सृजनात्मकता |
| 5.      | सार लेखन  | स्मरण शक्ति<br>अभिव्यक्ति<br>कम शब्दों में बात कहना                          |
| 6.      | कहानी का अंत बदलना  | कल्पना शीलता<br>सृजनात्मकता  |
| 7.      | कहानी सुनने के बाद उस पर आधारित चित्र (एक या अनेक) बनाना        | चित्रकारी की कला में गति<br>चिंतन<br>सृजनात्मकता                             |
| 8.      | कहानी में पसंदीदा पात्र का चित्र बनाना तथा उसके बारे में लिखना  | चित्रकारी कला का विकास<br>चिंतन<br>स्मरणशक्ति<br>अभिव्यक्ति                  |
| 9.      | सुनाई गई कहानी के कुछ शब्द चुनना तथा उनसे नई कहानी बनाना        | सृजनात्मकता<br>अभिव्यक्ति<br>तार्किक क्रमबद्धता<br>भाषाई कौशल                |



अब स्वयं से कोई 5 गतिविधियाँ तथा उनसे होने वाले कौशलों का विकास इस सारणी में जोड़े।

|    |  |  |
|----|--|--|
| 1. |  |  |
| 2. |  |  |
| 3. |  |  |
| 4. |  |  |
| 5. |  |  |

अपनी इच्छा से कोई एक कहानी/कविता चुने तथा उस पर कुछ गतिविधियों को कक्षा में बच्चों के साथ करवाएँ और अपने अनुभव लिखें।

| गतिविधियाँ | अनुभव |
|------------|-------|
|            |       |

इस पूरे खंड में एक बात ध्यान देने योग्य है कि जहाँ कही भी बाल साहित्य का इस्तेमाल किया गया है, वहाँ पाठ्यपुस्तकों के बाहर की कहानियों या कविताओं के अलावा पाठ्यसामग्री में दी गई कहानियाँ/कविताएँ एवं लेख भी इसका अंश हो सकते हैं।

यह केवल शिक्षक पर निर्भर करता है कि वह दी गई विषयसामग्री का किस प्रकार से कक्षा में उपयोग करता है। क्या वह विषयसामग्री को “किसने कहा” “किससे कहा” “क्यों कहा” और “रिक्त स्थान भरो” तक ही सीमित कर देता है या शिक्षक उसकी सहायता से बच्चों को कल्पना की उड़ान भरने में मदद करता है।

### 3.6 Role of a teacher (शिक्षक की भूमिका)

जैसा कि हम सब जानते हैं कि यह समय शिक्षा और शिक्षा से जुड़ी समझ में बदलाव का समय है। जहाँ पहले बच्चों के दिमाग को एक खाली स्लेट के समान समझा जाता था, वहीं अब यह समझ व्यापक रूप से बनने लगी है कि बच्चे अपने ज्ञान के निर्माण में एक सक्रिय भूमिका निभाते हैं तथा अपने अनुभवों के आधार पर स्वयं ज्ञान का सृजन करते हैं। इसके लिए शिक्षक को केवल उपयुक्त माहौल व अवसर तैयार करने होते हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि एक कुशल जिम्मेदार व संवेदनशील शिक्षक की जगह कोई दूसरा नहीं ले सकता। एक कक्षा में छात्र एवं शिक्षक, पढ़ने सीखने की सामग्री का निरंतर उपयोग करते हुए एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं।

इस पूरे संवाद में शिक्षक एक विशेष भूमिका में होता है। जैसे कि पिछले भागों में आपने देखा कि विभिन्न कहानियाँ, पठन-सामग्री व गतिविधियाँ किस प्रकार से बच्चों को सीखने में मदद करती हैं किन्तु आप स्वयं सोचें कि शिक्षक के उचित मार्गदर्शन के बिना यह कितना संभव हो पाएगा?

**Think :** क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।

अपने अनुभव के आधार पर दो ऐसी कक्षाओं का चित्रण लिखें जहां एक ही पाठ्यपुस्तक से दो बिल्कुल अलग कक्षाओं में पढ़ाया जा रहा हो। एक कक्षा में शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पुस्तकें बाँट कर, बच्चों को स्वयं ही पुस्तकों के साथ संवाद करने के लिए छोड़ देता/देती है। वहीं दूसरी कक्षा में पुस्तकें बाँट कर शिक्षक/शिक्षिका स्वयं अलग-अलग समूह में जाकर बच्चों के साथ पुस्तकों के बारे में बातचीत शुरू करता/करती है और जहाँ बच्चों को समझ न आए वहाँ उसकी मदद करता/करती है। आप बताइए, कौन सी कक्षा में बच्चे पुस्तकों के साथ बेहतर संवाद कर पा रहे होंगे?

जैसा कि हमने समझा कि कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को रोचक व अर्थपूर्ण बनाने में शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तो ऐसे शिक्षक को अपनी भूमिका की गंभीरता का आभास होना भी आवश्यक है।

यदि आप शिक्षण के संदर्भ में देखें तो यह समझना शिक्षक के लिए बहुत ज़रूरी है कि भाषा शिक्षा केवल सिखने व सिलेबस (Syllabus) पूरा कराने तक ही सीमित नहीं है और न ही भाषा का दायरा LSRW (सुनाना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के कौशलों में सिमटकर रह जाता है। भाषा की कक्षा तो इन सब दायरों से आगे बढ़ती हुई सीखने की अनंत संभावनाओं को जन्म देती है। एक शिक्षक अपनी भाषा की कक्षा को अर्थपूर्ण तथा सीखने के अवसरों से भरपूर बना पाए, इसके लिए उसे अपनी विभिन्न भूमिकाओं को समझना होगा और उन्हें निभाना होगा।

## एक शिक्षक की विभिन्न भूमिकाएँ

### 1. एक पाठक और लेखक (A reader and a writer)

"Practice what you preach." - Mahatma Gandhi.

बच्चों में पढ़ने के प्रति ललक पैदा करने के लिए शिक्षक का भी बच्चों के साथ पढ़ना ज़रूरी है। यह सच ही है कि बच्चे शिक्षक को सुनने से अधिक उन्हें देखकर सीखते हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों के साथ समूह में बैठकर विभिन्न किताबों से कहानियाँ/कविताएँ पढ़कर सुनाए और उन पर बच्चों के साथ चर्चा करें। कुछ ऐसी गतिविधियाँ व अभ्यास करें जो बच्चों को उस लेख की तरफ आकर्षित करे व उनकी समझ बढ़ाने में मदद करें।

शिक्षक चाहे तो कहानी सुनाने के बाद कुछ ऐसे सवाल खड़े कर सकते हैं, जो बच्चों के मन को रोमांच से भर दे तथा उन्हें कल्पना की उड़ान भरने दे।

आइए एक उदाहरण देखें :- सविता अक्सर पुस्तकालय से बच्चों की कहानियों की किताबें उठाकर पढ़ती रहती है। तथा कुछ चुनिंदा किताबें कक्षा में 'पुस्तक कोना' में रखती है। एक दिन उसे एक बहुत ही रोचक कहानी मिली। अगले दिन :

सविता : कल मैंने एक मजेदार कहानी पढ़ी। आप सुनना चाहेंगे?

बच्चे : हाँ जी।

सविता : उसमें तुम्हारी तरह ही कुछ बच्चों ने मिलकर जंगल की सैर करने की सोची।

बच्चे : आगे?

सविता : आपको खुद पढ़ना पड़ेगा।

बच्चे : कौन सी किताब है? कहाँ पर है?

सविता : लाइब्रेरी में है। पुस्तकें खोलकर देखो। अपने आप समझ जाओगे। जब मिल जाए तो पढ़ना और अपने दोस्तों को भी सुनाना।

आपने देखा कि किस प्रकार केवल 5 मिनट के समय में सविता बच्चों को पढ़ने के लिए रोमांचित कर पाई। इसी प्रकार से शिक्षक कक्षा में बच्चों को किसी विषय पर लिखवा सकते हैं और अंत में बच्चों के लेखों सहित अपने लेख को भी कक्षा में पढ़कर सुना सकते हैं। इससे न केवल बच्चों का लिखने का प्रति उत्साह बढ़ेगा बल्कि विभिन्न प्रकार के विचारों से भी अवगत हो पाएँगे।

**Think :** सविता की गतिविधि के बाद कक्षा में क्या हुआ होगा?

आप एक सक्रिय लेखक व पाठक बने रहे उसके लिए आप कौन-कौन सी आदतें अपनी दिनचर्या में शुमार करेंगे? संक्षेप में बताएं।

## 2. खोजी (Curious)

**To teach is to learn!** सीखना कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा एक ऐसा स्रोत है जहां निरंतर कुछ नया सीखने को मिलता है। सही मायने में देखें तो एक सफल शिक्षक वही है जिनके मन में हमेशा कुछ सवाल उठते हैं जो हमेशा जिज्ञासु रहते हैं और जो सदा अपने सवालों के जवाब ढूँढने और कुछ नया करने/जानने की कोशिश करते हैं। एक सच्चा शिक्षक वही है जिसके भीतर का विद्यार्थी सदैव जीवित है।

वे शिक्षक ही हैं जो एक दिन शिक्षा संसार को बदलेंगे जब वे उसे समझेंगे। जो शिक्षक निरंतर शिक्षा जगत से जुड़ी खोज की प्रक्रिया में लगे रहते हैं कुछ पढ़ते व विचार विमर्श करते रहते हैं, वे निश्चित रूप से शिक्षा ज्ञान, स्कूल और बच्चों की बेहतर समझ बना पाते हैं और शिक्षा जगत में आए किसी भी बदलाव नीति के वे बेहतर आलोचक होते हैं।

एक खोजी तथा जिज्ञासु शिक्षक के प्रभाव से कक्षा भी अछूती नहीं रहती। सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय शिक्षक निश्चित रूप से अधिक विचारशील होते हैं और बच्चों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होते हैं। वे नित नए तरीकों और सामाग्रियों का प्रयोग कक्षा में करते हैं और स्वयं उनकी समीक्षा भी करते हैं। याद रखें शिक्षक अपने अंदर के विद्यार्थी को जीवंत रखें, तो निश्चित रूप से कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया बहुत अर्थपूर्ण हो जाएगी। खोजी प्रवृत्ति के शिक्षक शिक्षा जगत से जुड़ी अनेक समस्याओं का समाधान करने की क्षमता रखते हैं।

### Let's do

अंग्रेजी भाषा सीखने-सिखाने से संबंधित कोई किताब/लेख या मैगज़ीन पढ़ें और उस पर चर्चा करें। उससे आपकी क्या समझ बनी, उसके बारे में विस्तार से लिखें और अपनी कक्षा में आप उसे कैसे समाहित करेंगे उसके बारे में भी बताएँ। बाद में उस कक्षा की समीक्षा भी अवश्य करें और यदि किसी बदलाव की संभावना लगे तो उसे ज़रूर लाएँ।

## 3. सृजनशील (Creative)

भाषा की कक्षा में एक शिक्षक में सृजनात्मकता व कल्पनाशीलता जैसे गुण और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि इन गुणों के बदौलत, शिक्षक एक साधारण से पठन सामग्री में भी प्राण फूँक सकता है और बच्चों को कुछ सीखने में मदद कर सकता है। नित कुछ नया पढ़ने व सिखते रहने की प्रवृत्ति तथा कुछ नया करने की चाह शिक्षकों को सृजनशील बने रहने में मदद करती है।

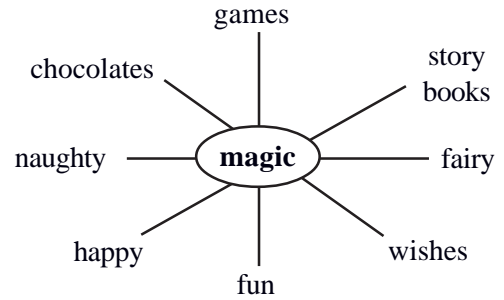
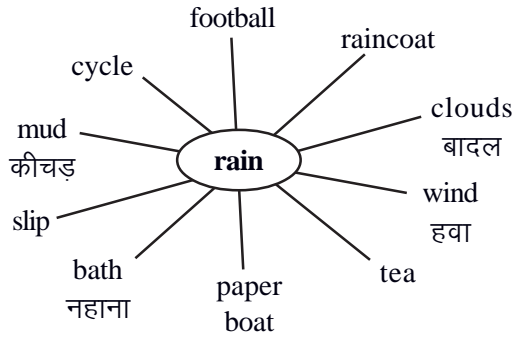
### आइए एक उदाहरण देखें :-

The English teacher asked his students of class IV to write a paragraph on 'A Rainy Day'. While correcting their copies he/she realized that most of the children could not write well on the topic. He planned and the next day he start the discussion with the following questions.

--- Why do I like rains?

--- If I get a magic Wand then....

He write both these topics on the board and asked the children to think of all the related words. He noted them on the board as given below.



Then he divided the children into groups of 5. He encouraged them to discuss and write paragraphs. He didn't stop children from asking each other or helping each other. He also went to each of these groups and helped them where it was needed.

**क्या आप सोच सकते हैं?**

- उस दिन बच्चों का लेख कैसा रहा होगा?
- क्या उन्हें मज़ा आया होगा?
- क्या बच्चों ने कुछ सीखा होगा?
- क्या इस पूरी प्रक्रिया में साजिद ने भी कुछ सीखा क्या?

**Let's do**

पढ़ने/बोलने या लिखने से जुड़ी एक रोमांचकारी गतिविधि सोचें व लिखें। उसे कक्षा में करें और फिर अपने अनुभव भी लिखें।

Activity : \_\_\_\_\_

Objective : \_\_\_\_\_

Material : \_\_\_\_\_

Method : \_\_\_\_\_

My experience : \_\_\_\_\_

**4. चिंतनशील (A reflective teacher)**

जैसा कि हमने देखा कि एक शिक्षक का कक्षा में होने वाली सीखने- सीखाने की प्रक्रियाओं को लेकर चिंतनशील रहना बहुत महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी भाषा के संदर्भ में एक चिंतनशील शिक्षक निरंतर इन सवालों से जूझता रहता है व इनके उत्तर खोजने में प्रयासरत रहता है :-

- बच्चे क्या पढ़ रहे हैं?
- इसे पढ़ने का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
- बच्चों को पढ़ते समय क्या दिक्कतें आ रही हैं?
- इन समस्याओं का कारण क्या है?

- इन समस्याओं को दूर करने के लिए क्या किया जा सकता है?
- कौन सी किताबें बच्चों के द्वारा सर्वाधिक पसंद की जा रही हैं और क्यों?
- कौन सी गतिविधियाँ करने में बच्चों को मज़ा आता है और क्यों?
- किस प्रकार बच्चों की रुचि अंग्रेजी भाषा सीखने में बढ़ाई जा सकती है?
- कक्षा में अंग्रेजी के इस्तेमाल को किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है?
- अंग्रेजी बोलने की बच्चों की हिचक किस प्रकार दूर की जा सकती है?

ऐसे अनेक विषयों पर जिन पर शिक्षक निरंतर चिंतन करता रहता है, उसकी शिक्षण प्रक्रिया में उसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अवश्य ही उसकी कक्षा में बच्चे भी सहज, आनंदित व आत्मविश्वास से भरा महसूस करते हैं।

**Think :** क्या आपने पहले कभी इन विषयों पर चिंतन किया है?

**Discuss :** समूह में चर्चा करें कि इस चिंतन की प्रक्रिया का क्या महत्त्व है? यह क्यों आवश्यक है?

ऊपर दिए गए तमाम सवाल जो एक शिक्षक के मन में निरंतर आ सकते हैं। कक्षा में पढ़ाते समय आपके मन में भी अनेक प्रश्न उठते होंगे उनको नीचे लिखें और उस पर

चिंतनशील शिक्षक हमेशा अपने कार्य के बारे में विचार करते हैं और उसे बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

#### 5. समीक्षक (Teacher as a reviewer)

अभी तक दिए गए सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट हो चुका है कि एक शिक्षक को निरंतर अपने काम की समीक्षा स्वयं करते रहना चाहिए। निरंतर यह सोचते रहना आवश्यक है कि बच्चों की क्या ज़रूरतें हैं और वह उसके लिए क्या कर सकता है।

एक शिक्षक अपने काम का सबसे बड़ा और सच्चा आलोचक होता है। इस कार्य में छात्र भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं यदि शिक्षक समय-समय पर कक्षा में हुई प्रक्रियाओं के बारे में बच्चों से चर्चा करें।

By observing the children when they are interacting during an activity, listening to their questions, analyzing their responses a teacher would get a lot of insights about his/her work.



## UNIT - 4

## Structure of the English Language

- 4.1. Rules at sound level
- 4.2. Structure of Hindi and English sentences
- 4.3. Arbitrariness of language
- 4.4. Teaching grammar to children
- 4.5. Children's language

## जरा सोचें.....

- क्या आपने कभी किसी भाषा की बारीकियों के बारे में सोचा है?
- वे कौन-सी बातें हैं जो विभिन्न भाषाओं में समान रूप से देखने को मिलती हैं? तथा वे एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?
- किसी भी भाषा की अपनी क्या खूबियाँ होती हैं?
- किसी भाषा की व्याकरण बच्चे किस प्रकार सीखते हैं?

इस पाठ का नाम पढ़ने पर शायद आपको लगे कि हम इसमें कुछ जटिल अवधारणाओं पर चर्चा करेंगे, किन्तु इस पाठ को पढ़ने के बाद आपका भाषा को लेकर एक अलग ही नज़रिया बनने लगेगा।

इस पाठ में आपको गतिविधियों के द्वारा भाषा के विभिन्न नियमों को पता करना होगा और फिर भाषा की संरचना के बारे में आप स्वयं ही कुछ रोचक निष्कर्ष निकाल पाएँगे।

आइए इस पाठ की शुरुआत नीचे दी गई गतिविधि से करें...

**Activity-1**

Talk to a child of 3 to 5 years of age. Note down the conversation.

---



---



---



---



---



---



---



---

इस संवाद को बार-बार पढ़ें? बच्ची के द्वारा कहे गए वाक्यों की ध्यानपूर्वक समीक्षा करें। वह भाषा का प्रयोग किस लिए कर रही है? उसके वाक्य किस प्रकार के हैं? क्या वे व्याकरण की दृष्टि से सही हैं? या नहीं? यदि वे सही हैं तो बिना व्याकरण पढ़े यह कैसे संभव हुआ? या कहीं वह बच्ची ये सभी वाक्य याद करके तो नहीं बोल रही? या उसमें नित नए वाक्य रचने की क्षमता है?



How does a child frame new sentences which he has not heard ever before?

.....

.....

.....

.....

संजय और उसके भतीजे ललित के बीच में हुई निम्नलिखित बातचीत को पढ़ें:-

संजय : बेटा, आज तुम इतनी जल्दी उठ गए?

ललित : हाँ, आज हमारी टीचर हमें सरोवर दिखाने ले जा रही हैं।

संजय : क्या जाना जरूरी है?

ललित : हाँ, वहाँ जाकर हमें सरोवर के बारे में जानकारी मिलेगी।

संजय : वो तो मैं तुम्हें घर पर बैठे-बैठे ही दे सकता हूँ।

ललित : नहीं, मेरी पूरी क्लास के बच्चे जा रहे हैं, मुझे भी जाना है।

संजय : अच्छा तो तुम सिर्फ बच्चों के लिए वहाँ जा रहे हो?

ललित : नहीं, हमारी टीचर ने कहा है कि सभी को आना है।



क्या आप बता सकते हैं, ऊपर दिए गए उदाहरण में ऐसे कौनसे वाक्य होंगे जो बच्चे ने पहले कभी नहीं सुने होंगे?

— सभी।

बच्चे के पास जानकारी तो है, पर वह उसे पहली बार किसी और के सामने रख रहा है और वह भी एकदम नई परिस्थिति में जिसमें वह पहले शायद कभी न आया हो।

यहाँ पर ज़रा इस बात पर विचार करें कि एक कम उम्र का बच्चा एकदम सही वाक्य कैसे बना पा रहा है?.....

बच्चे कैसे समझ पाते हैं कि कहाँ संज्ञा इस्तेमाल करनी है और कहाँ विशेषण? हम उन्हें यह सब नहीं बताते। फिर भी बच्चे बखूबी भाषा का प्रयोग अपने जीवन में करते हैं।

यह कैसे संभव होता है? इस पर अपने विचार लिखें।

छोटे बच्चों को बात करते हुए और बोलते हुए देखना एक विस्मयकारी अनुभव है। किस प्रकार से वे अक्षरों को जोड़कर सही शब्द, और शब्दों को जोड़कर सही वाक्य बनाते हैं, किस प्रकार से अपनी बात अर्थपूर्ण तरीके से हमारे सामने रखते हैं, और किस प्रकार हमारे साथ सार्थक बातचीत करने में सक्षम होते हैं। क्या भाषा इतनी सरल है? इस पाठ में हम भाषा और उसकी संरचना पर गहराई से बात करेंगे।

अक्सर जब शिक्षकों से पूछा जाता है कि भाषा माने क्या? या 'भाषा शब्द से आप क्या समझते हैं?' तो कई तरह के जवाब मिलते हैं?

- भाषा संप्रेषण का एक माध्यम है।
- भाषा के माध्यम से हम अपनी मन की बात दूसरों को कह सकते हैं।
- भाषा विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम है।
- भाषा ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों का एक समूह है।

इस इकाई में हम अंग्रेजी भाषा में ध्वनि के स्तर पर नियमों को समझने की कोशिश करेंगे। इसी के साथ हम भाषा के बारे में वह जिन नियमों द्वारा निर्धारित होता है उसकी भी बात करेंगे। हर भाषा में यह नियम अलग-अलग हो सकते हैं और शायद कुछ नियम एक जैसे भी। इसी नियमबद्धता की वजह से हम एक दूसरे की बात समझ पाते हैं। इस नियमबद्धता पर भी हम इस इकाई में चर्चा करेंगे।

आगे कुछ गतिविधियाँ दी जा रही हैं। आप इन गतिविधियों को अपने मित्रों के साथ कर सकते हैं।

#### 4.1. Rules at the sound level (ध्वनियों के स्तर पर कुछ नियम)

किसी भी भाषा की ध्वनियों को मोटे तौर पर स्वर और व्यंजन ध्वनियों के रूप में बाँटा जाता है। आइए इन दोनों ध्वनियों के बीच के अंतर को समझ लें—

‘अ’ और ‘ई’ ध्वनि का लंबे समय तक उच्चारण करने की कोशिश कीजिए। आप पाएँगे कि आप ऐसा करने में सक्षम हैं और पूरी कक्षा अअअअ और ईईईई की ध्वनि से भर गई है। अब इसी तरह से ‘प’ या ‘च’ या ‘त’ या ‘क’ ध्वनि को उच्चारित कीजिए। क्या आप इन ध्वनियों को लम्बे समय तक उच्चारित कर पाएँ?

नहीं, क्योंकि जब हम ‘क’ ध्वनि का उच्चारण लंबे समय तक करते हैं, हमें ‘क’ की जगह ‘अ’ की ध्वनि सुनाई देती है।

पहली तरह की ध्वनियों को हम स्वर ध्वनियाँ कहते हैं और दूसरी तरह की ध्वनियों को व्यंजन। दोनों के उच्चारण के तरीके में अंतर है। स्वर ध्वनियों के उच्चारण में फँफड़ों से निकलती हुई हवा को मुँह के किसी भाग जैसे जीभ, होंठ आदि से रोका नहीं जाता। व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में हवा को अलग-अलग स्थान पर रोकते हैं। ‘प’ का उच्चारण कीजिए। अवरोध होठों के एक दूसरे को छूने से हुआ होगा। अब ‘त’ का उच्चारण कीजिए। इस ध्वनि के उच्चारण में अवरोध कहाँ हुआ? लिखिए।

अन्य व्यंजन ध्वनियों के साथ भी यह करके देखें।

क्या आप अंग्रेजी का कोई शब्द सोच सकते हैं जिसमें केवल व्यंजन ध्वनियों का प्रयोग हो रहा हो?

क्या हिन्दी में ऐसा कोई शब्द है?

क्या आप अंग्रेजी में कोई ऐसा शब्द सोच सकते हैं, जिसमें केवल स्वरों का प्रयोग हो रहा हो?

क्या हिन्दी भाषा में ऐसे शब्द हैं?

#### Patterns of Consonantal and Vowel sounds in words (शब्दों में स्वर और व्यंजन ध्वनियों के पैटर्न)

आइए अंग्रेजी शब्दों में स्वर (vowel) व व्यंजन (consonant) ध्वनियों को पहचानें। नीचे कुछ अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाई गई है। अब आप प्रत्येक शब्द को उसमें आ रही स्वर और व्यंजन ध्वनियों के रूप में लिखें। उदाहरण के लिए—

|          |   |                                |
|----------|---|--------------------------------|
| map      | - | .....C+V+C                     |
| match    | - | .....C + V +C                  |
| magazine | - | .....C + V + C + V + C + V + C |

यह ध्यान में रखने की ज़रूरत है कि शब्दों को उनकी उच्चारित स्वर और व्यंजन ध्वनियों के आधार पर देखना है, अक्षरों के आधार पर नहीं।

'Match' शब्द में 'tch' तीन अक्षर हैं, पर तीनों मिल कर एक ही ध्वनि – 'च' है। ऐसा आपको कई अंग्रेज़ी शब्दों में देखने को मिलेगा। 'Bottle' शब्द में भी 'tt' दो अक्षर एक ही ध्वनि 'ट' बता रहे हैं। और 't' और 'l' के बीच कोई स्वर ध्वनि हमें लिखी नहीं दिख रही है पर हम बोलते समय उसका उच्चारण ज़रूर करते हैं। इसी तरह से 'Bottle' शब्द में ही हमें शब्द के अंत में 'e' लिखा हुआ दिख रहा है पर हम इसका उच्चारण नहीं करते हैं।

### Activity-2

Now look at the words given below and expand them in the same way as done in the previous table:

|            |   |
|------------|---|
| pen        | - |
| book       | - |
| table      | - |
| chair      | - |
| television | - |
| happy      | - |
| bus        | - |
| cycle      | - |
| photograph | - |
| mountain   | - |
| paper      | - |
| education  | - |
| army       | - |
| no         | - |
| low        | - |
| feed       | - |
| magic      | - |
| artificial | - |
| bag        | - |
| tea        | - |
| coffee     | - |
| rain       | - |
| tan        | - |
| boat       | - |
| sun        | - |
| doll       | - |
| pot        | - |
| coat       | - |
| begin      | - |
| chair      | - |

|            |   |
|------------|---|
| teacher    | - |
| write      | - |
| rabbit     | - |
| potato     | - |
| onion      | - |
| body       | - |
| teeth      | - |
| develop    | - |
| eleven     | - |
| university | - |

(अ) क्या इन शब्दों में स्वर और व्यंजन ध्वनियों की लड़ियों में कोई पैटर्न है?

-----

(ब) किस तरह का पैटर्न है?

-----

यह क्रम जिसमें व्यंजन व स्वर ध्वनि क्रम से एक के बाद एक आती है, दुनिया की सभी भाषाओं के ज्यादातर शब्दों में देखने को मिलता है। अंग्रेजी के कुछ और शब्दों को लेकर उनमें निहित ध्वनियों को भी देखिए। क्या यही पैटर्न उनमें भी अधिकतर में देखने को मिलता है। चाहें तो और भी भाषाएँ लेकर देखें। आइए एक और गतिविधि से इस क्रम के बारे में और समझें।

### Activity-3

#### Patterns of Consonantal and Vowel sounds in words

#### (शब्दों में स्वर और व्यंजन ध्वनियों के पैटर्न)

नीचे कुछ अंग्रेजी के शब्द दिए गए हैं। इन्हें भी पिछली गतिविधि की तरह स्वर और व्यंजन ध्वनियों में बाँटिए। उदाहरण के लिए—

|          |   |           |
|----------|---|-----------|
| street   | - | c+c+c+v+c |
| fry      | - | c+c+v     |
| string   | - |           |
| Spring   | - |           |
| scratch  | - |           |
| screen   | - |           |
| splendid | - |           |
| squeal   | - |           |
| squint   | - |           |
| skew     | - |           |
| stew     | - |           |
| spew     | - |           |

|        |   |
|--------|---|
| speak  | - |
| scold  | - |
| spell  | - |
| still  | - |
| steal  | - |
| skill  | - |
| slide  | - |
| slept  | - |
| sway   | - |
| swing  | - |
| sew    | - |
| pray   | - |
| play   | - |
| plug   | - |
| crack  | - |
| class  | - |
| cream  | - |
| tray   | - |
| tree   | - |
| free   | - |
| fright | - |
| fry    | - |
| flow   | - |
| flee   | - |
| blow   | - |
| blind  | - |
| bright | - |
| bread  | - |
| glow   | - |
| grow   | - |
| graph  | - |
| glide  | - |

ऊपर लिखे शब्दों में शब्द के शुरु में दो या तीन व्यंजन ध्वनियाँ एक साथ इस तरह आ रहे हैं कि उनके बीच में स्वर ध्वनि नहीं बोली जा रही है। छोट कर लिखिए इन शब्दों के शुरु में कौन-सी दो-तीन व्यंजन ध्वनियाँ आ रही हैं जिनके बीच स्वर ध्वनि नहीं है।

कुछ और भी ऐसे शब्द खोजने का प्रयास करें जिनके प्रारम्भ में एक से ज़्यादा व्यंजन ध्वनियाँ हैं। ध्यान रहे कि हम व्यंजन ध्वनि की बात कर रहे हैं न कि अक्षरों की।

बहुत से इन शब्दों में पहली ध्वनि 'स' है, कुछ में 'प्', 'फ्', 'ब्', 'द्' है। इसके अलावा 'ट्' है और 'क्'। गौर कीजिए कि इनके अलावा कोई और व्यंजन ध्वनि शुरू में नहीं आती। क्या अन्य कोई व्यंजन ध्वनि देखने में आई?

**Think :** जिन शब्दों के शुरू में तीन व्यंजन ध्वनियाँ हैं, उनमें तीसरी व्यंजन ध्वनियाँ कौन सी हैं?

आप चाहें तो यही अन्य भाषा के शब्दों के साथ भी जाँच कर देख सकते हैं। भाषा में ऐसे बहुत से और नियम भी हैं जिनको हम उपयोग करते हैं।

इस अभ्यास के दौरान आपने यह जाना होगा कि अधिकतर शब्दों में CVCV का pattern दिखाई देता है। कुछ शब्दों की शुरुआत CCCV या CCV की ध्वनि से होती है। ऐसे शब्दों में पहली ध्वनि 'स्' की होती है, दूसरी ध्वनि 'प्', 'ट्' या 'क्' की होती है। और तीसरी ध्वनि 'य्', 'र्', 'ल' या 'व्' की होती है।

आइए अंग्रेजी भाषा में अब शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए ध्वनियों के नियमों को समझें।

#### Activity-4

##### Making plurals (शब्दों के बहुवचन)

नीचे कुछ शब्दों की एक सूची दी है। इन शब्दों के बहुवचन लिखिए।

|            |   |         |         |   |         |
|------------|---|---------|---------|---|---------|
| mat        | - | mats    | bangle  | - | bangles |
| watch      | - | watches | earring | - |         |
| pen        | - |         | book    | - |         |
| blackboard | - |         | table   | - |         |
| match      | - |         | brush   | - |         |
| switch     | - |         | sound   | - |         |
| copy       | - |         | tea     | - |         |
| dog        | - |         | friend  | - |         |
| cat        | - |         | bat     | - |         |
| trunk      | - |         | fan     | - |         |

जब हम शब्दों के बहुवचन बनाते हैं तो लिखते समय शब्द के अंत में श्श या श्मेश जोड़ देते हैं। पर इन शब्दों को बोलते समय हम शब्दों के अंत में 'स', 'ज' और 'इज' ध्वनि का उच्चारण करते हैं – मैट्स (mats), बैंगलज (banglz) और वौचिज (watchiz)। अब आप इन ध्वनियों के आधार पर शब्दों को नीचे बनी तालिका में वर्गीकृत कीजिए। इसके लिए शब्द को जोर से बोलें व ध्यान से सुनें। यह कार्य समूहों में करें तो आखिर की ध्वनि पहचानने में मदद मिलेगी। जिन शब्दों के बहुवचन आप mat जैसे बोलते हैं, उन्हें उस खाने में लिखें।

**Note :** यह संभव है कि आप के उच्चारण में शब्दों के अंत में ठीक वही ध्वनियाँ न हों जो यहाँ दी गई हैं। इसलिए आप वही ध्वनि लिखें जिसका आप उच्चारण कर रहे हैं।



| Words ending with the sound of /s/ | Words ending with the sound of /z/ | Words ending with the sound of /ɪz/ | Words ending with a different sound |
|------------------------------------|------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------------------|
| mat                                | bangle                             | watch                               |                                     |

Now write down the 'end sounds' of the words that you wrote :-

| 1st column   | 2nd column | 3rd column | 4th column |
|--------------|------------|------------|------------|
| 'ट' (in mat) |            |            |            |

इनमें से प्रत्येक स्तंभ के शब्दों के अंत में एक जैसी ध्वनियाँ हैं और उनके बहुवचन के अंत में भी एक जैसी ध्वनियाँ हैं। हमें कोई भी नया शब्द मिलेगा, उसके अंत की ध्वनि से आप उसका बहुवचन पहचान लेते हैं।

#### Activity-4

आइए अब हम भूतकाल के शब्दों के अंत की ध्वनियाँ देखें। नीचे कुछ क्रियाएँ लिखी हैं। इन क्रियाओं का जब भूतकाल में प्रयोग किया जाता है तो इनके रूप में बदलाव आ जाता है। इन सभी क्रियाओं को भूतकाल में लिखिए। फिर प्रत्येक शब्द को गतिविधि 2 और 3 की तरह स्वर और व्यंजन ध्वनियों में तोड़िए।

|       |   |         |
|-------|---|---------|
| slip  | - | slipped |
| shout | - | shouted |
| beg   | - | begged  |
| slap  | - |         |
| cook  | - |         |

|        |   |
|--------|---|
| test   | - |
| save   | - |
| call   | - |
| pick   | - |
| shift  | - |
| rent   | - |
| plant  | - |
| comb   | - |
| crawl  | - |
| earn   | - |
| play   | - |
| wish   | - |
| grasp  | - |
| murder | - |
| kill   | - |
| plan   | - |

जब क्रिया रूप को भूतकाल में प्रयोग किया जाता है तो अक्सर लिखने में 'd' या 'ed' को शब्दों के अंत में जोड़ देते हैं। पर बोलते समय हम शब्दों के अंत में 'ट', 'इड' और 'ड' ध्वनियों को शब्दों के साथ जोड़ते हैं— slipped (स्लिप्ट), shouted (शाउटिड) और begged (बैग्ड)।

शब्दों को ध्वनियों में तोड़कर समझने के लिए गहरे अध्ययन करने की आवश्यकता है। यहाँ हम उसका एक छोटा हिस्सा देख रहे हैं। कई जगह अंग्रेजी की ध्वनियों को बिल्कुल ठीक स्वरूप में देवनागरी लिपि में नहीं लिखा जा सकता। हमारा मकसद यह पहचानना है कि भाषा में कुछ नियम हैं और उसका एक स्वरूप है, जिसे हम समझने का प्रयास कर रहे हैं।

अब आप इन तीनों ध्वनियों के आधार पर क्रिया शब्दों को नीचे बनी तालिका में वर्गीकृत कीजिए।

| ending with /t/ | ending with /d/ | ending with /Id/ | others |
|-----------------|-----------------|------------------|--------|
| slip            |                 |                  |        |

Write down the 'end sounds' of the words that you wrote in

| 1st column | 2nd column | 3rd column | 4th column |
|------------|------------|------------|------------|
|            |            |            |            |

आप पाएंगे कि तीनों स्तंभों की अंत में आई ध्वनियां एक-दूसरे से भिन्न हैं और उनके भूतकाल रूप अलग-अलग हैं।

## 4.2 Structure of Hindi and English sentences

### (हिन्दी और अंग्रेजी वाक्यों की संरचना)

हमने ध्वनियों के स्तर पर भाषा के कुछ नियमों की बात की। इस हिस्से में हम वाक्यों के स्तर पर भाषा के कुछ नियमों की बात करेंगे। इन नियमों पर बात करने के लिए हम अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं के वाक्यों के उदाहरण लेंगे।

इन नियमों को पहचानने के लिए आप दोनों भाषाओं के कुछ वाक्य लेकर उनमें पैटर्न खोजने का प्रयास कर सकते हैं। इनको करने से पहले नीचे लिखे हिस्से को ध्यान से पढ़ लें।

### Subject and Predicate (कर्ता और विधेय)

जैसा कि आप जानते हैं, वाक्य को दो भागों में बाँटा जा सकता है— कर्ता (subject) और विधेय (Predicate)। Subject वाक्य का वह भाग है जिसके बारे में कुछ कहा जा रहा है। Predicate subject के बारे में कही गई बात को बताता है। आइए, नीचे के उदाहरणों में देखें —

- |  |                                  |
|--|----------------------------------|
| 1. राम खाना खा रहा है।                     | Ram is eating food.              |
| 2. गीता सो रही है।                         | Gita is sleeping.                |
| 3. कुत्ता भौंक रहा है।                     | The dog is barking.              |
| 4. अंजना ने खिड़की तोड़ दी।                | Anjana broke the window.         |
| 5. बाढ़ ने बहुत से मकानों को नष्ट कर दिया। | The Flood destroyed many houses. |

पहले वाक्य में 'राम' subject है क्योंकि उसके बारे में कुछ कहा जा रहा है यानी वह कुछ कर रहा है या उनका विवरण दिया जा रहा है। 'खाना खा रहा है' predicate है क्योंकि वह यह बताता है कि राम के बारे में क्या कहा जा रहा है। इसी तरह अंग्रेजी वाक्य में भी Ram subject है और 'is eating food' predicate है।

Now in each of the five sentences mentioned above, indicate the subject and the predicate.

| Sentence            | Subject | Predicate       |
|---------------------|---------|-----------------|
| Ram is eating food. | Ram     | is eating food. |

### Subject, object and verb (कर्ता, कर्म और विशेषण)

'राम खाना खा रहा है।'

इस वाक्य में कर्ता, क्रिया व कर्म तीनों मौजूद हैं। राम (कर्ता है) — वह जिसके द्वारा क्रिया की जा रही है। क्रिया (खा रहा है) — यानि जो कार्य हो रहा है और कर्म (खाना) — जिस पर किये जाने वाले कार्य का असर पड़ रहा है। अब हम दिये गये वाक्यों को देखते हैं।

'गीता सो रही है।'

इसमें गीता \_\_\_\_\_ है, सो रही है \_\_\_\_\_ है, कर्म \_\_\_\_\_

**Think :** क्या इस वाक्य में कर्म है ? इसी तरह अब बाकी वाक्यों का भी विश्लेषण कीजिये और बताइए कि क्या हर वाक्य में क्रिया और कर्म हैं ?

वाक्य के विधेय भाग में क्रिया और कर्म होते हैं।

ऊपर लिखे हिन्दी के उदाहरणों में 'खा रहा है', 'सो रही है', 'भौंक रहा है', 'तोड़ दी' और 'नष्ट कर दिया' क्रिया पद हैं। यह ध्यान देने की बात है कि तीनों क्रिया पदों में 'खा', 'सो', 'भौंक', 'तोड़' और 'नष्ट' मुख्य क्रिया (main verb) कहलाती है क्योंकि इनसे हो रही घटना के स्वरूप का पता चलता है। 'रहा है', 'रही है', 'रहा है', 'दी' और 'दिया' सहायक क्रिया (helping verb) हैं क्योंकि इनसे केवल यह पता चलता है कि कोई घटना घट रही है; पर यह नहीं कि क्या हो रहा है और किस तरह की क्रिया हो रही है। अब आप बताइए कि अंग्रेजी के उदाहरणों में मुख्य क्रिया कौनसी है और सहायक क्रिया कौन सी है?

| Sentence            | main verb | helping verb |
|---------------------|-----------|--------------|
| Ram is eating food. | eating    | is           |

आइए, अब कर्म (object) की बात करें। कर्म वाक्य का वह भाग है जिस पर क्रिया का असर पड़ता है। यह जरूरी नहीं कि क्रिया और कर्म हर वाक्य में एक साथ हों। कुछ में दोनों एक साथ होते हैं, कुछ में नहीं।

ऊपर लिखे पाँचों उदाहरणों को एक बार और देखें—

राम खाना खा रहा है। Ram is eating food.

पहले हिन्दी और अंग्रेजी वाक्य में 'खाना' और 'food' कर्म (object) हैं, क्योंकि इन पर खाने की क्रिया का असर पड़ रहा है।

अब आप बचे हुए हिन्दी और अंग्रेजी वाक्यों के उदाहरणों को देखकर बताइए कि इनमें किन वाक्यों में कर्म है —

- (अ) क्या दूसरे वाक्य में कर्म है? \_\_\_\_\_
- (ब) तीसरे वाक्य में? \_\_\_\_\_
- (स) चौथे वाक्य में \_\_\_\_\_
- (द) पांचवे वाक्य में \_\_\_\_\_
- (य) क्या प्रत्येक वाक्य में कर्म है? \_\_\_\_\_

अब तक आप समझ गए होंगे कि प्रत्येक वाक्य में कर्म का होना जरूरी नहीं है।

### Sequence of words in sentences (वाक्यों में शब्दों का क्रम)

#### Activity-5

नीचे कुछ हिन्दी के वाक्य लिखे हुए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए। इनमें उद्देश्य, कर्ता, कर्म व क्रिया पहचानें। पता लगाएं कि वाक्यों में उद्देश्य, क्रिया और कर्म किस क्रम में आ रहे हैं?

|                      |                        |                       |                 |
|----------------------|------------------------|-----------------------|-----------------|
| गीता नहा रही है।     | राम नहा रहा है।        | मैं नहा रहा हूँ।      | वे नहा रहे हैं। |
| हम गाना गा रहे थे।   | वह गाना गा रहा था।     | गीता रोटी खा रही है।  |                 |
| राम रोटी खा रहा है।  | गीता गाड़ी चला रही है। | राम गाड़ी चला रहा है। |                 |
| गीता गाना गा रही है। | राम गाना गा रहा है।    |                       |                 |

(अ) उद्देश्य, क्रिया और कर्म का क्या क्रम है?

\_\_\_\_\_

(ब) क्या ये सभी वाक्यों में एक ही क्रम में आते हैं?

\_\_\_\_\_

अब ऊपर लिखे कार्य को नीचे लिखे अंग्रेजी वाक्यों के साथ भी कीजिए –

|                        |                       |                  |                      |
|------------------------|-----------------------|------------------|----------------------|
| Gita is sleeping.      | Ram is sleeping.      | I am sleeping.   | They are sleeping.   |
| We were singing.       | He was singing.       | She was singing. | Gita is eating roti. |
| Gita is driving a car. | Ram is driving a car. | Gita is singing. | Ram is singing.      |

1. What is the order of the subject, verb and object in these sentences?

-----

2. Is this order the same as was in the case of Hindi? Do all sentences in English follow the same order?

-----

### Position of prepositions in sentences (वाक्यों में कारक चिन्हों का स्थान)

वाक्य का एक और हिस्सा कारक है। यह भी सभी वाक्यों में नहीं होते। हिन्दी में जिन शब्दों को कारक चिन्ह कहते हैं, उन्हें अंग्रेजी में **preposition** कहते हैं।

उदाहरण—

किताब टेबल पर पड़ी है।

The book is lying on the table.

उसने किताब दराज़ में रखी।

He has kept the book in the drawer.

अब आप हिन्दी और अंग्रेजी के ऐसे दो-दो वाक्य लिखिए जिनमें prepositions का प्रयोग किया गया है।

-----  
-----

क्या हिन्दी और अंग्रेजी के वाक्यों में कारक चिन्ह का प्रयोग एक ही जगह होता है।

अगर, उदाहरणों को वापस देखें –

टेबल पर

on the table

दराज़ में

in the drawer

-----

-----

### Let's write

Write any 5 sentences in English having prepositions. Then write 5 sentences which do not have any prepositions.

### वाक्यों में विशेषण

वाक्य में विशेषण (adjectives) किसी संज्ञा शब्द की विशेषता या गुण बताते हैं। जिस शब्द की विशेषता बताई जा रही है उसे विशेष्य कहते हैं। पहले वाक्य में विशेषण और विशेष्य रेखांकित हैं। अब अन्य वाक्यों में विशेषण और विशेष्य को रेखांकित कीजिए।

|   |   |
|---|---|
| सीता की माँ ने एक लाल साड़ी पहनी है।    | Sita's mother is wearing a red sari.    |
| मेरे सामने एक लम्बा लड़का खड़ा है।      | A tall boy is standing in front of me.  |
| मेरे सामने एक लम्बी लड़की खड़ी है।      | A tall girl is standing in front of me. |
| मेरे पास दस सुंदर काँच की चूड़ियाँ हैं। | I have ten beautiful glass bangles.     |
| मेरी घड़ी टूट गई है।                    | My watch has broken.                    |
| मेरा घड़ा टूट गया है।                   | My pot has broken.                      |

**Think :** क्या हिन्दी और अंग्रेजी के वाक्यों में विशेषण और विशेष्य के स्थान में भिन्नता है?

### नकारात्मक वाक्य

नीचे लिखे सभी वाक्यों में 'नहीं' या 'not' के प्रयोग से किसी चीज़ के लिए मना किया जा रहा है, यानी जो नहीं होता उसके बारे में लिखा जा रहा है।

|                                      |  |
|--------------------------------------|--|
| सीता रोज़ नहीं नहाती है।             | Sita does not bathe everyday.                |
| लड़कियाँ मैदान में नहीं खेल रही हैं। | The girls are not playing in the playground. |
| मैं यह किताब नहीं पढ़ रहा हूँ।       | I am not reading this book.                  |

हिन्दी और अंग्रेजी के वाक्यों को पढ़ने के बाद आप पाएँगे कि दोनों भाषाओं में नकारात्मक अर्थ दर्शाने वाले शब्द 'नहीं' और 'not' क्रिया के आस-पास ही होते हैं।

दोनों भाषाओं के 10-10 वाक्य लिखें जिनमें नहीं व not का उपयोग हो रहा है व उनका क्रिया के सापेक्ष स्थान देखें।

**Think :** क्या दोनों भाषाओं में इनका स्थान क्रिया के सापेक्ष एक-सा ही है?

Till now, we have talked about various rules of Hindi and English language. In Hindi, we discovered that verb comes at the end of the sentence and subject in the beginning. Object comes in between both of them.

In English, unlike Hindi, verb comes in the middle and object in the end. However, position of the subject remains the same in both the languages i.e. in the beginning.

In both the languages, gender and number of the subjects affects the verb. However, there is a greater influence of the gender in Hindi language.

Prepositions come after the noun in Hindi language, but prior to them in English language. But when it comes to the adjectives, they are placed at the same position i.e. before the nouns. For the negative sentences, 'नहीं' comes before the verb in Hindi; but 'not' finds its place in between the main verb and the helping verb.

Hence, it comes to our notice that both English and Hindi have rules at the sound level and sentence level. Some rules look similar and some different!

हिन्दी और अंग्रेजी भाषा की तरह, दुनिया की प्रत्येक इंसानी भाषा के अपने नियम होते हैं। भारत की ज्यादातर भाषाओं (जैसे मराठी, तमिल, सिंधी, कोंकणी, कन्नड़, बंगला, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत आदि) में क्रिया वाक्यों के आखिर में ही आती है। यह गुण जापानी, ब्रमीज तिब्बती, कोरियाई आदि जैसी विदेशी भाषाओं में भी देखा जा सकता है। इन भाषाओं में आपको ज्यादातर कारक चिन्ह संज्ञा के बाद ही आते हुए दिखेंगे।

अंग्रेजी की तरह फ्रांसीसी, चीनी और वियतनामी जैसी विदेशी भाषाओं और कश्मीरी और खासी जैसी भारतीय भाषाओं में क्रिया वाक्य के बीच में मिलेगी। इन भाषाओं में कारक चिन्ह संज्ञा के पहले या बाद में आ सकते हैं, और अंग्रेजी में बाद में आ रहे हैं।

दुनिया की ज्यादातर भाषाएँ क्रिया को या तो वाक्य के अंत में लेती है या वाक्य के बीच में। दुनिया में ऐसी कम ही भाषाएँ हैं जिनमें क्रिया वाक्य के शुरू में आ सकती है। ऐसी भाषाओं के कुछ उदाहरण हैं—अरबी, वैल्श, स्कोटिश, आयरिश और लेबनानी।

### 4.3 Arbitrariness of language

**Think :** Does the characteristics of a pig change depending upon whether we call it as 'pig' or 'सूअर'? What will happen if someday people start calling it as 'seraata'? Will the same pig now become a different animal with different features? Or it will still be the same even if its name changes?

Arbitrariness (स्वच्छन्दता) शब्द, Arbitrary (आरबिट्ररी) शब्द से बना है। Arbitrariness सभी इंसानी भाषाओं का एक महत्वपूर्ण गुण है। Arbitrary होने का मतलब है शब्द और उसके अर्थ में कोई तार्किक संबंध नहीं होना है जैसे 'pig' (जानवर) को हम 'pig' ही क्यों कहते हैं? एक भाषा में कौन से शब्द का क्या अर्थ होगा यह उस भाषा के बोलने वालों के बीच की साझी सहमति पर निर्भर है। अंग्रेजी भाषा में कौन से शब्द का क्या अर्थ होगा, यह अंग्रेजी भाषियों के बीच की साझी सहमति का सवाल है। और बिल्कुल इसी तरह की साझी सहमति के कारण ही हिन्दी भाषी 'pig' को 'सूअर' बुलाते हैं। ऐसा नहीं है कि 'pig' और 'सूअर' में से एक शब्द, अर्थ को ज्यादा स्पष्टता से बताता है। दोनों ही शब्द अपनी-अपनी भाषाओं में सही हैं।

यह भी जरूरी नहीं कि किसी भाषा को बोलने वाले व्यक्तियों की यह साझी समझ, समय दर समय एक सी हो। जिस जानवर को अंग्रेजी भाषी आज 'pig' कहते हैं, उसे एक जमाने में 'swine' कहा जाता था। इसके कारण, अर्थ हमेशा संदर्भ में समझे जाते हैं। भाषा बोलने वाला ही अपने संदर्भ में शब्द का अर्थ बता सकता है। कौन से शब्द का क्या अर्थ होगा यह एक चलती आ रही परम्परा की बात है। अलग-अलग भाषाओं की अलग-अलग परम्पराएँ होती हैं। परम्पराएँ बदल सकती हैं और बदलती भी हैं।

Make a list of 5 words in Hindi and English each, whose meanings change in different contexts or situations. E.g. 'volume' has different meanings when used while watching T.V or doing Mathematics!

|       |       |
|-------|-------|
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |

भाषा का स्वच्छन्दता इस बात में भी झलकता है कि किसी भाषा में एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के शब्द 'mean' के कई अर्थ देखने में आते हैं। इस शब्द का अर्थ — 'औसत' भी है (the mean of 19, 20 and 21 is 20) 'अर्थ या मतलब' भी है (what do you mean?) और 'कंजूस' भी है (he is very mean about money)। यही नहीं, 'mean' की तरह उच्चारित होने वाले शब्द



अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग अर्थ भी रखते हैं। जैसे फ्रांसीसी में इस शब्द का अर्थ 'खान' है, वेल्श में 'किनारा', बास्क में 'दर्द' और अरबी में 'वहाँ से'।

**Think :** अब आप हिन्दी के कुछ ऐसे उदाहरण/वाक्य सोचिये जिनमें एक ही शब्द का अलग-अलग अर्थ में प्रयोग हो रहा हो ।

एक ही शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं, और बोलने वाले उन शब्दों के नए अर्थ भी बना सकते हैं। यह भी भाषा के स्वच्छन्दता को दर्शाता है। हालांकि यह नये अर्थ बिल्कुल स्वच्छन्द नहीं हो सकते।

इंसानों में भी भाषा सीखना कुछ इसी तरह की प्रक्रिया है। एक इंसानी बच्चे को अगर ऐसे वातावरण में बड़ा किया जाए जहाँ उसे किसी भी इंसानी भाषा को सुनने या बोलने का मौका न मिले, तो वह भी भाषा नहीं सीख पाएगा। यह ऐसे अध्ययनों में देखा गया है, जहाँ बच्चों को इंसानों की जगह, जानवरों के साथ बड़ा किया गया है। जब बच्चों को इंसानी भाषा का वातावरण दिया जाता है, तभी वह सामान्य रूप से बोलना सीखते हैं। अतः इंसानी दिमाग में भी शायद ऐसा कुछ है जो उसे भाषा सीखने में मदद करता है, पर जब तक उसे इंसानी भाषा का वातावरण नहीं दिया जाए तब तक उसके लिए भाषा सीखना असंभव है। अतः भाषा सीखने की क्षमता तो मनुष्य में है, पर वह कोई भी भाषा नहीं सीख लेता। बच्चा जो भाषा सुनता है, वही सीखता है। अर्थात् बिना भाषा के माहौल के, भाषा नहीं सीखी जा सकती।

ओनोमाटोपिया शब्द का अर्थ है— 'ऐसे शब्दों से परिस्थितियों का चित्रण करना, जिनमें दर्शाई जा रही परिस्थितियों में उत्पन्न ध्वनियों की गूँज हो। 'splash, buzz, meow, moo, boom' 'छपाक', 'कल-कल' आदि शब्द ऐसे हैं जो वास्तव में इनसे संबंधित ध्वनियों जैसे ही सुनाई देते हैं। जब हम पानी में कूदते हैं, तो 'splash' जैसी आवाज़ होती है और इस आवाज़ को हम अंग्रेज़ी भाषा में 'splash' शब्द से ही दर्शाते हैं। जब मधुमक्खियाँ भिन-भिनाती हैं तो 'buzz' जैसी आवाज़ होती है, जब बिल्लियाँ आवाज़ निकालती हैं तब 'meow' जैसी आवाज़ आती है, जब गाय आवाज़ निकालती है तो 'moo' जैसी आवाज़ आती है और जब कहीं धमाका होता है तो 'boom' जैसी आवाज़ आती है। इसलिए इन सब को दर्शाने के लिए हम 'buzz', 'meow', 'moo', or 'boom' शब्दों का प्रयोग करते हैं। हम इन शब्दों का उनके स्रोत और उनके अर्थ के साथ रिश्ता देख सकते हैं। पर इन ध्वनियों को पहचानने में भी और शब्दों से जोड़ने में भी काफी लचीलापन व विविधता है। यह बात तब और साफ़ होती है, जब हम अलग-अलग भाषाओं के onomatopic शब्दों की तुलना करते हैं। उदाहरण के लिए— एक बंदूक से निकली हुई आवाज़ को अंग्रेज़ी में 'bang' कहते हैं, स्पेनी में 'pim', फ्रांसीसी में 'pan', जर्मन में 'peng' और बास्क में 'dzast' कहते हैं।

Make a list of 10 onomatopic words in English and Hindi.

.....  
 .....

भाषाओं में एक और किस्म की हल्की iconicity दिखती है। इस iconicity को phonaesthesia (फोनाथेशिया) कहते हैं। आइए समझें इसका क्या मतलब है—

जैसे कि बास्क भाषा में 'tximelta' एक जानवर का नाम है (जिसका उच्चारण कुछ ऐसा है— चीमेलेता)। अगर आपको इस जानवर का केवल नाम ही पता हो, तो आप इस जानवर के बारे में क्या कहेंगे? क्या यह बड़ा होगा या छोटा, धीमा या गतिशील, सुन्दर या बदसूरत? अब अगर मैं आपको यह बताऊँ कि यह जानवर लोमड़ी, सांड, तितली, शंबुक और कछुए में से ही एक है, तो आप किसको चुनेंगे? ज्यादातर लोगों से जब यह सवाल पूछा जाता है तो उनको लगता है कि 'tximelta' नाम का जानवर बड़ा या धीरे चलने वाला नहीं हो सकता। उनके दिमाग में एक ऐसे जीव की कल्पना होती है जो छोटा और हल्का है और इधर-उधर उड़ता रहता है और इसलिए वे तितली को ही चुनते हैं। आप चाहें तो कुछ और नाम गढ़कर जैसे 'तिलुंगडी',

'लपडसी', 'टवारस' आदि और अन्य लोगों से पूछ सकते हैं। वे इनके अर्थ के बारे में क्या समझते हैं और क्या अनुमान लगाते हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि 'tximelta' शब्द 'buzz' या 'moo' आदि से भिन्न है। यह किसी वास्तविक ध्वनि को नहीं दर्शा रहा है। पर इस शब्द में आ रही ध्वनियाँ एक तरह के जीव का (छोटा, हल्का, फुदकू) आभास देती हैं।

Onomatopia और phonaesthesia दोनों ही 'sound symbolism' (ध्वनि प्रतीकात्मकता) के प्रकार हैं।

इस तरह की ध्वनि प्रतीकात्मकताएँ जिनमें शब्दों के अर्थ के बारे में कुछ समझ स्वतः बन जाती है, यह समझाना जरूरी है कि ध्वनि प्रतीकात्मकता दर्शाने वाले शब्द कम ही हैं।

आपको क्या लगता है, आपकी भाषा में स्वछन्दता है? कुछ वाक्यों और शब्दों का उदाहरण लेकर समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भाषा के स्वछन्दता होने की वजह से, बच्चों को भाषा सिखाते समय किस चीज़ पर ज़ोर देने की आवश्यकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

#### 4.4 Teaching Grammar to children (बच्चों को 'व्याकरण सिखाना')



एक बात बता, I के साथ am लगेगा या is?



सुनने से लग रहा है कि am लगेगा। पर पता नहीं, कल की कक्षा में मैं नहीं आई थी।



वैसे कल टीचर ने कहा था कि एकवचन के साथ "is" लगता है।



अच्छा! शायद तू ठीक ही कह रहा होगा।



तो मतलब sentence होगा 'I is running.'



यार, मुझे ये गलत लग रहा है। पर अगर नियम देखा जाए तो सही है। मुझे समझ नहीं आ रहा।

ऐसे ही व्याकरण से जुड़े कई सवाल हमारे दिमाग में घूमते रहते हैं। हर कक्षा में हमें ऐसे अनेकों विद्यार्थी मिल जाएंगे जिनके लिए व्याकरण के नियम रटना, वाक्य लिखते समय व्याकरण का ध्यान रखना, एक टेढ़ी खीर के समान होता है। व्याकरण के स्वाभाविक से नियम हमें एक विकराल पहाड़ की तरह प्रतीत होने लगते हैं और भाषा सीखने की प्रक्रिया को आसान की बजाय और जटिल बना देते हैं। अंग्रेज़ी कक्षाओं का सबसे बड़ा डर होता है व्याकरण के नियमों को याद करना। बहुत से लोगों का यह भी मानना है कि प्राथमिक कक्षाओं में भाषा सीखने के लिए सामान्य तौर पर पढ़ाया जाने वाला व्याकरण अनिवार्य है। इसलिए भाषायी कक्षाओं में शिक्षकों और विद्यार्थियों को बहुत सारा समय संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि को रटने-रटवाने और एकवचन, बहुवचन, स्त्रीलिंग, पुल्लिंग आदि पूछने में निकल जाता है।

अभी तक इस अध्याय के अंतर्गत हमने जो भी गतिविधियाँ की हैं, उनसे हमें इस बात का ज्ञान तो हो गया है कि व्याकरण भाषा का अभिन्न हिस्सा है परन्तु व्याकरण से भाषा न होकर, भाषा से व्याकरण है। ऐसा नहीं हुआ है कि पहले व्याकरण बनी हो और फिर उसके आधार पर भाषा। पहले भाषा का सृजन हुआ और फिर भाषा में निहित पैटर्नस को निकाल कर ही व्याकरण के नियम बनाए गए हैं।

इस बात को पुख्ता करने के लिए हमारे पास बहुत से तथ्यों की मदद ली जा सकती है। एक चार साल की बच्ची जिसे न 'संज्ञा' का ज्ञान है, न 'भाषा-संरचना' का, उसे भी अच्छी तरह से पता है कि कहाँ संज्ञा का इस्तेमाल करना है और कहाँ क्रिया का। आपको कोई भी बच्ची 'खाता केला मैं' बोलते हुए नहीं मिलेगी। और अगर आप 'मैं .....खाती हूँ।' वाक्य देंगे तो बच्ची वहाँ खाने की वस्तु का नाम ही भरेगी, न की कोई पहनने की वस्तु का नाम या किसी क्रिया का नाम।

अतः हम चह देख सकते हैं कि बच्चे भी पहले भाषा सीखते हैं और बिना जाने ही व्याकरण का सही इस्तेमाल भी करते हैं।

इसका अर्थ यह है कि भाषा से व्याकरण बनी है। कोई शब्द या वाक्य अपने स्थान पर सही है या नहीं, ये जानने के लिए किसी को व्याकरण का ज्ञान होना जरूरी नहीं है। बस इतना आवश्यक है कि बच्ची और भाषा के बीच लगातार एक अंतःक्रिया होती रहे। बच्ची को एक ऐसा वातावरण मिले जहाँ पर उसे खूब सारी भाषा सुनने व इस्तेमाल करने के मौके मिलते रहे।

भाषा एक मनमानापन लिए होने के बावजूद भी नियमों में बंधी है। और कोई भी बच्ची उस भाषा को इस्तेमाल करते हुए आराम से उन नियमों को जाने बिना आत्मसात करती चली जाती है। इन नियमों की वजह से ही ये मुमकिन हुआ कि एक ही भाषा को बोलने वाले इतने सारे व्यक्ति एक दूसरों की बातों और विचारों को समझ लेते हैं, क्योंकि वे उन नियमों को साँझा करते हैं, और उन पर एकमत भी हैं।

अब हम व्याकरण के प्रति लोगों का दृष्टिकोण व इसका बच्चों के 'सीखने' पर होने वाले प्रभाव को समझेंगे। इसके लिए हम कुछ लेख पढ़ेंगे और उनके बारे में सोचेंगे। यह लेख निम्नलिखित है।

(अ) Language and Dialect (भाषा और बोली)

(ब) बच्चों की भाषा

लेखों में कही गई बातों को संक्षिप्त रूप में नीचे व्यक्त किया गया है— लोग जिन भाषाओं को बोलते हैं, उनके बारे में बहुत कुछ जानते हैं। वे जानते हैं कि उनकी भाषा में ध्वनियों को पिरोकर शब्द कैसे बनते हैं और शब्दों को पिरोकर व्याकरणात्मक तौर पर सही वाक्य कैसे बनाए जाते हैं, सही वाक्यों का प्रयोग करके कैसे अपनी बात दूसरों को समझानी है और दूसरों की बात समझनी है।

4-5 साल का बच्चा बोलते समय हुई त्रुटि पहचानकर उसका सुधार भी कर लेता है। चाहे वह त्रुटि स्वयं के उपयोग में हो, चाहे किसी दूसरे के द्वारा की गई हो। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जिसके घर में हिन्दी बोली जाती है, यह जानता है कि 'गीता खाना खाता है' एक सही वाक्य नहीं है। यह चार साल का बच्चा शायद हमें यह नहीं समझा पाए कि वाक्य इसलिए गलत है क्योंकि क्रिया के लिंग और कर्ता के लिंग में एकरूपता नहीं है, पर उस वाक्य को सही करके 'गीता खाना खाती है' जरूर बता देगा। अंग्रेजी भाषा बोलने व सुनने वाला बच्चा अपने द्वारा उपयोग की जाने वाली अंग्रेजी के वाक्यों में हुई गलतियों को व्याकरण की परिभाषाएँ व नियम याद किए बिना ठीक कर लेता है।

बच्चा यह भी जानता है कि दोनों— 'मोहन ने खाना खाया' और 'गीता ने खाना खाया' सही वाक्य हैं। वह यह नहीं समझा पाएगा कि कर्ता का क्रिया से रिश्ता 'ने' के आने से टूटा है और क्रिया का रिश्ता अब वाक्य में आ रहे कर्म (खाना) से जुड़ रहा है। पर वह बता देगा कि— 'मोहन ने रोटी खाई' और 'गीता ने रोटी खाई' भी सही वाक्य हैं।

वह यह भी जानता है कि नीचे लिखे दोनों वाक्य सही हैं—

मोहन ने गीता को मारा।

गीता ने मोहन को मारा।

यहाँ भी वह नहीं समझा पाएगा कि दोनों वाक्यों में कर्ता और कर्म के आगे 'ने' और 'को' जैसे कारक चिन्हों की वजह से क्रिया दोनों से नहीं मेल खाएगी।

अतः बच्चा जब अपने घर की भाषा बोलता है, वह अपनी भाषा के सभी व्याकरणात्मक नियमों का सही से प्रयोग करता है। ऐसे बच्चे के लिए कर्ता, क्रिया, कर्म, लिंग, वचन आदि जैसे शब्दों से परिचित कराना, इनके बीच रिश्ते ढूँढने को कहना एक सहज प्रक्रिया है। किसी भी भाषा के व्याकरण को सचेत रूप से समझने के लिए यह बहुत जरूरी है कि पहले हम उस भाषा को समझने और बोलने में सक्षम हों। इसलिए प्राथमिक कक्षाओं में हमारा ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि बच्चे अंग्रेजी भाषा को सहज रूप से बोल पाएँ। जब बच्चे यह कर पाएँगे तो वे स्वतः ही वाक्यों में व्याकरण के नियमों को पकड़ने में सक्षम होंगे।

एक सवाल जो इस चर्चा का अभिन्न अंग है, वह है कि हम अपने घर में बोली जा रही भाषा सीखते कैसे हैं? क्या यह भाषा हमें प्रत्यक्ष रूप में सिखाई जाती है?

जैसा कि हम पहले भी बात कर चुके हैं कि बच्चे अपने घर में बोली जाने वाली भाषा एक ऐसे स्वाभाविक माहौल में सीख लेते हैं जहाँ बड़े या तो एक-दूसरे से बात कर रहे होते हैं या उनसे बात कर रहे होते हैं। किसी भी बच्चे को अपनी भाषा बोलना सिखाने के लिए हम किसी शब्द या वाक्य को बार-बार उनके सामने बोलते नहीं हैं। उदाहरण के लिए, एक बच्चा पेड़ के बारे में इसलिए नहीं जानता क्योंकि हम उसे पेड़ के पास ले जाकर 'पेड़, पेड़, पेड़' या 'यह पेड़ है, यह पेड़ है, यह पेड़ है' कहते हैं। पेड़ के बारे में बच्चों से हमारी बातचीत इससे बहुत ज्यादा स्वाभाविक होती है और इस बातचीत के जरिये वह पेड़ के बारे में जान लेता है। जब बच्चे अपने घर की भाषा इस तरह सीखते हैं, तो हमें उन्हें अंग्रेज़ी जैसी भाषा सिखाने के लिए भी बोलने और सुनने के भरपूर मौके देने चाहिए। बोलते समय बच्चे गलतियाँ तो करेंगे, पर जितना वह अंग्रेज़ी भाषा को अपने आस-पास सुनेंगे और बोलेंगे, उतना ही वह स्वतः उस भाषा को सीखेंगे।

अंग्रेज़ी के शिक्षकों के रूप में हमारा काम थोड़ा कठिन जरूर हो जाता है, क्योंकि घर की भाषा या हिन्दी से भिन्न, अंग्रेज़ी भाषा बच्चों के घरों और आस-पास के वातावरण में बोली नहीं जाती। पर इसका तोड़ बच्चों को अंग्रेज़ी व्याकरण सिखाने में नहीं है पर ऐसी हर कोशिश करने में है जिससे बच्चों को अंग्रेज़ी भाषा के साथ एक रिश्ता जोड़ने का अवसर मिले।

What can you do in your class to help develop a friendly relationship with English language?

Playing language games, .....

.....

#### 4.5 Children's language (बच्चों की भाषा)

रश्मि पालीवाल और कमलेश चंद्र जोशी (संदर्भ के दो लेखों से संकलित)

प्रशिक्षण का आखिरी दिन था। कक्षा तीसरी का प्रशिक्षण लेनेवाले शिक्षकों के एक समूह से यह चर्चा हो रही थी कि तीसरी में आनेवाले बच्चों के साथ भाषा सिखाने में किन बातों पर ध्यान देना होगा, वे किस तरह की गलतियाँ करते हैं और उन्हें किन बातों में मदद चाहिए होगी?

शिक्षकों ने कहा कि मुख्यतः व्याकरण में और वर्तनी में मदद करनी होगी।

मैंने पूछा, "भाषा पढ़ाने का और कोई तीसरा उद्देश्य भी हो सकता है, क्या?" थोड़ी देर सोचने पर भी मौजूद लोग कोई और लक्ष्य नहीं सोच पाए। बहरहाल जब मैंने कहा कि अभिव्यक्ति की क्षमता का विकास भी भाषा शिक्षण का एक लक्ष्य माना जा सकता है तो सबने तुरन्त अपनी थोड़ी झंप-युक्त सहमति जताई।

सहमति व्यक्त हो जाने पर श्यामपट्ट पर भाषा शिक्षण के तीनों उद्देश्य लिख दिए—

वर्तनी

व्याकरण

अभिव्यक्ति

फिर हम यह लेखा-जोखा लेने बैठे कि इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अभी तक शिक्षक अपनी कक्षाओं में क्या कदम उठाते आए हैं तथा किस प्रकार के नए कदम उन्हें सूझे हैं।

**वर्तनी :** शिक्षकों ने कहा कि 'लिखने में मात्राओं और अक्षरों की गलतियाँ' सुधारने के लिए आमतौर पर गलत वर्तनी को सुधारकर बच्चों से कई बार सही शब्द लिखवाया जाता है। किन्तु, इससे समस्या हल नहीं होती। बहुत से बच्चे फिर भी गलत ही लिखते हैं।

इसका क्या कारण हो सकता है? क्या यह कि, हम जैसा सुनते हैं, वैसा बोलते हैं और वैसा ही लिखते हैं? हम हाथी को हाती, सफेद को 'शफेद', परीक्षा को 'परिक्षा', चाकू को 'साकू' बोलते हैं तो बच्चों से यह उम्मीद क्यों करते हैं कि वे 'हाती' को हाथी लिखें? इसमें बच्चे की गलती है या उनके समाज की गलती है? और जिसे हम समाज की गलती कहने को तैयार हो रहे हैं, वो समाज की गलती है या समाज की रीति है?

हम यह भी सोच लें कि एक क्षेत्र के समाज की भाषा की रीति को गलत कहनेवाला कौन है? हम किसी एक समाज द्वारा बोली लिखी गई हिन्दी को सही मान लेते हैं और उसे 'मानक हिन्दी' का नाम दे देते हैं। यह मानने पर अन्य सभी समाजों का हिन्दी को बोलने का तरीका (उच्चारण) गलत हो जाता है। यह सब कैसे होता है, यह एक बड़ा ऐतिहासिक व राजनैतिक मसला है। पर इसकी वजह से हम कक्षा में यह कोशिश करते रहते हैं कि बच्चे चाहे जो भी बोलें, वे लिखें तो वही जो मानक हिन्दी है— मतलब चाहे बच्चा 'चाकू' को 'साकू' बोले और शिक्षक भी वही बोले पर वे लिखे तो 'चाकू' ही। और इस मसले का समाधान शिक्षक, उसी शब्द को कई बार लिखवाकर करने की कोशिश करता रहता है।

फिर भी इस संबंध में क्या कुछ और नया किया जा सकता है? उदाहरण के लिए तीसरी के बच्चों को बाल पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने व देखने का कितना मौका दिया जाता है? पर अलग-अलग किताबें, खूब सारी किताबें पढ़ने से वर्तनी सुधारने में क्या मदद मिलेगी? शायद कहें कि अपेक्षित शब्द को कई बार सहज और रुचिपूर्ण ढंग से देखने से शब्दों की छवि मन मस्तिष्क में बनती-बैठती जाती है। बच्चों को अपेक्षित ढंग से लिखने में भी सहायता मिलेगी, जबकि सिर्फ अपनी गलत वर्तनी को सुधारकर सैंकड़ों बार नकल करते रहना एक सीमित और नीरस प्रयास है। बार-बार एक ही चीज़ लिखने से शायद बच्चे को बोरियत भी महसूस हो।

एक और तरह की कोशिश की जा सकती है, जो आज भी स्कूलों में बहुत कम होती है— वह है ध्वनियों से खेलना। वर्तनी द्वारा हम शब्द की ध्वनि को ही तो किताब में लिखकर आकार देते हैं। अगर शब्दों की ध्वनियों के प्रति बच्चे सचेत हो जाएँ, तो उन ध्वनियों को आकार देने में भी उनको ज़्यादा सचेत रहने की संभावना है। तो क्यों न ऐसा करें कि घेरे में बैठकर, मान लीजिए, आपने कहा 'बुन' .... और श्यामपट्ट पर लिख भी दिया 'बुन' .... फिर हर बच्चा ऐसी ही मिलती-जुलती ध्वनि के शब्द बोले— गुन/सुन/धुन सार्थक भी और निरर्थक भी, सब चलेगा... नुन, कुन, जुन ... क्योंकि हमारा आशय तो ध्वनि पकड़ने से है। आप इन सब शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखते जाइए। हर बच्चे को बोलने दीजिए, दो-तीन राउण्ड खिलवाइए जब तक मज़ा और नए उदाहरण, दोनों कम होते नज़र न आएँ।

गलत शब्दों के सही कार्ड बनाकर उन्हें बच्चों से ढूँढवा सकते हैं, और इसके द्वारा उनकी गलतियों को सुधार सकते हैं।

**व्याकरण :** बच्चों को व्याकरण में क्या कठिनाई आती है?

शिक्षकों ने कहा, "मुख्य रूप से बच्चे ऐसे प्रश्नों के सही उत्तर नहीं दे पाते— 'स्त्रीलिंग.पुल्लिंग लिखो', 'एकवचन.बहुवचन लिखो' आदि।

बात निकली की प्राथमिक कक्षाओं में व्याकरण का मूल्यांकन दो तरह से किया जा सकता है। पहले तरीके में बच्चों को स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, एकवचन, बहुवचन जैसे शब्दों की परिभाषा याद रखना ज़रूरी है। जैसे— नीचे लिखे सवालों में—

नीचे लिखे शब्दों का बहुवचन लिखिए।

नदी — ..... माला — .....

नीचे लिखे शब्दों का स्त्रीलिंग लिखिए।

आदमी — ..... कुत्ता — .....

इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बच्चों को स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, एकवचन, बहुवचन जैसे शब्दों का मतलब पता होना ज़रूरी है, नहीं तो वे इन सवालों का उत्तर नहीं दे पाएंगे।

दूसरा तरीका है— संदर्भों के माध्यम से मूल्यांकन करना।

जैसे, बच्चों से कहें कि नीचे दिए गए खाली स्थान भरो—

राम आम खाता है।

लड़के आम ————— हैं।

दादाजी आम ————— हैं।

———— आम खाती हैं।

तुम आम ————— हो।

मैं आम ————— हूँ।

चूहा आया।

बन्दरिया नाची।

चुहिया —————।

———— नाचा।

या, नीचे लिखे वाक्य सुधारो—

पेड़ पर एक चिड़िया बैठी है। —————

इन प्रश्नों में बच्चा पूरे वाक्य का मतलब समझते हुए खाली स्थान भरेगा। अगर वह सही शब्द का चुनाव करेगा तो वह अपने लिंग और वचन के ज्ञान को दर्शाएगा।

पूरे वाक्य के संदर्भ में सही लिंग, वचन आदि पकड़ना और व्यक्त करना सहज और स्वाभाविक होता है। तीसरी कक्षा के स्तर पर क्या ऊपर लिखा अभ्यास और मूल्यांकन काफी नहीं माना जा सकता? परिभाषा के स्तर पर सोचना एक अमूर्त क्रिया है— बच्चों के लिए ठोस नहीं है। इसलिए उसका उनके लिए कोई मतलब नहीं है। इसके लिए, आगे की कक्षाओं का समय है बच्चों के पास।

साथ ही यह बात भी ध्यान में रखना ज़रूरी है कि उच्चारण की तरह ही व्याकरण भी बच्चे अपने अपने समाज की रीति के अनुरूप ही सीख लेते हैं। यदि गोंड समाज की भाषा की रचना में स्त्रीलिंग, पुल्लिंग का भेद नहीं है तो उस समाज के बच्चों को ऐसा भेद करती हुई भाषा का इस्तेमाल करने में बच्चों को समय लगेगा और शायद कई बच्चे बहुत प्रयास के बाद भी, अपनी भाषा रचना में लिंग भेद न ला पाएँ। इसके लिए उन्हें व्याकरण के नियम याद करने व अभ्यास करने से सीमित सहायता मिलेगी। उससे ज़्यादा सहायता हिन्दी बहुत बार सुनने, बहुत बार पढ़ने से मिलेगी, जिससे वे हिन्दी भाषा के तौर-तरीकों से घनिष्ठ रूप से परिचित हो जाएँ। जो भाषा हम बच्चों को सिखाना चाहते हैं, उससे उनका परिचय कैसे बढ़ाया जाए, और गाढ़ा किया जाए, यह हमारे सोचने की उपयुक्त दिशा होनी चाहिए।

**अभिव्यक्ति :** हमारे बीच असम के कुछ साथी उपस्थित थे। वे हिन्दी बोलने की कोशिश करते थे, जिसमें स्वाभाविक तौर पर उच्चारण और व्याकरण की काफी भिन्नता होती थी। फिर भी वे हिन्दी भाषा का इस्तेमाल कर रहे थे, अपने को अभिव्यक्त करने के लिए। और हम उनकी बात बहुत कुछ समझ भी रहे थे। यानी भाषा का उपयोग आपसी संप्रेषण के लिए सफलतापूर्वक हो रहा था। भाषा की यह भूमिका भाषा शिक्षण के लक्ष्यों में शामिल होनी ही चाहिए तो सोचिए कि हम अभी कक्षा में अभिव्यक्ति के विकास के लिए क्या करते हैं?

इस प्रश्न पर शिक्षकों ने सोचा और स्वीकार किया कि इस संबंध में वे कुछ खास नहीं करते! हम क्या कर सकते हैं? बच्चों से तरह-तरह की चीजों पर बातचीत कर सकते हैं, उनकी बातें सुन सकते हैं पर वे अभी खुद ज़्यादा कुछ लिख नहीं सकते। इसलिए बच्चे जो कुछ बोलते जाएँ वही सब शब्द श्यामपट्ट पर



या कॉपी में आप लिखते जा सकते हैं। फिर उन्हीं की बोली गई बात उन्हें पढ़कर सुना सकते हैं। इससे लिखी गई चीजों को पढ़ने में बच्चों की रुचि भी बढ़ती है।

ऐसे और भी तरीके हो सकते हैं, जैसे मौखिक रूप से अनकों कहानियाँ सुनाना, उन पर अधूरी कहानी या कविता को पूरा कराना, चित्र पर आधारित कहानी या कविता बनाने को कहना। धीरे-धीरे जब बच्चे स्वयं लिखने लगें तो उन्हें अपने विचार भी लिखने को कह सकते हैं। जैसे परिवार, स्कूल, दोस्त आदि।

मूल्यांकन

फिर बात उठी कि भाषा की परीक्षा में बच्चों का मूल्यांकन कैसे करेंगे? किस लक्ष्य के अनुरूप होगा मूल्यांकन? उच्चारण व व्याकरण की शुद्धता और अभिव्यक्ति की क्षमता के लक्ष्य तो एक दूसरे को काटेंगे?

इस बिन्दु पर विचार हुआ और निष्कर्ष कुछ ऐसा निकला कि कुछ प्रश्न अभिव्यक्ति की कुशलता जांचने के लिए निर्धारित किए जाने चाहिए और उन प्रश्नों में वर्तनी.व्याकरण की गलतियों को नज़र.अन्दाज़ करके, अभिव्यक्ति के अनुसार बच्चों को अंक दिए जाने चाहिए।

### कुछ सवाल—

- इस पाठ में बच्चों की भाषा में सुधार के लिए किन बातों पर ध्यान में रखने की बात कही गई है?
- बच्चों को भाषा लिखना और पढ़ना सिखाने के लिए आप व्याकरण, वर्तनी और अभिव्यक्ति में किस पर ज़्यादा ज़ोर देंगे और क्यों?
- एक मास्टरजी एक स्कूल में बच्चों को श्रुतलेख दे रहे थे। उन्होंने ये शब्द बोले—हतोड़ा, कमल, साम, कतार, सक्कर, हात।

श्रुतलेख लिखने के बाद कैलाश ने मास्टरजी को कॉपी दिखाई। उसने लिखा था— हतोड़ा, कमल, साम, कतार, सक्कर, हात

मास्टरजी ने उसे कहा कि उसने केवल दो शब्द ही सही लिखे हैं— कमल और कतार और बाकी शब्दों के सही उत्तर बोर्ड पर लिखे— हथौड़ा, शाम, शक्कर, सात

क्या मास्टरजी ने सही किया? क्यों?

- (अ) पाठ में व्याकरण पढ़ाने के कौनसे दो तरीकों की बात कही गई है? समझाइए।
- (ब) आपके अनुसार बच्चों के लिए कौनसा ज़्यादा उपयुक्त रहेगा? क्यों?
- (स) वर्तनी' और 'व्याकरण' शब्दों का मतलब समझाइए।
- एक बच्चा जब नया-नया स्कूल आता है, तो उसकी मौखिक अभिव्यक्ति पर ज़ोर देने की ज़रूरत है या लिखित पर? क्यों?





## UNIT - 5

## Teaching Plan

## 5.1 Teaching Plan

Need of a teaching plan

Teaching plan - planning a class

## 5.2

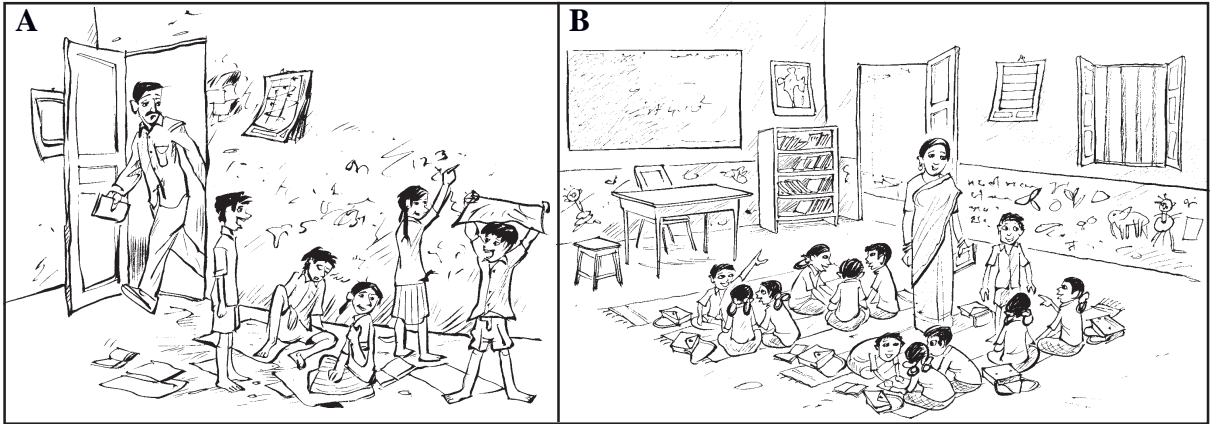
Assessment and Evaluation

(NCF 2005)

Self assement &amp; Feed back

## ज़रा सोचें.....

- शिक्षण योजना किस प्रकार से बेहतर शिक्षण में मदद करती है?
- वे कौन सी बातें हैं जिन्हें शिक्षण योजना बनाते समय ध्यान में रखना चाहिए?
- क्या आकलन व सीखना एक साथ की जा सकने वाली प्रक्रियाएँ हैं ?



इन दोनों चित्रों को ध्यान से देखिए। नीचे दिए गये तालिका में दिए गये प्रश्नों के आधार पर प्रतिक्रिया लिखिए।

बच्चे क्या कर रहे हैं? शिक्षिका क्या कर रही है? इस कक्षा के बारे में आपकी क्या राय है? लिखिए।

| A | B |
|---|---|
|   |   |

एक बात तो तय है कि चित्र-B में दिखाई गई कक्षा कि शिक्षिका जानती थी कि उसे कक्षा में क्या करना है, किस प्रकार करना है और उसके लिए उसकी तैयारी भी थी।

हम सभी इस बात से सहमत होंगे की योजनाबद्ध तरीके से किए हुए कार्य अक्सर सफल होते हैं। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के लिए भी यह बात कितनी सही है, अपनी कक्षाओं के दौरान आपको इसका अनुभव हुआ होगा

इस इकाई में हम शिक्षण योजना (teaching plan) पर चर्चा करेंगे और साथ ही साथ सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को समझने का प्रयास करेंगे।

Broadly, the unit deals with how to

- plan for a class
- Assess what is taught and learnt.
- Plan, Reflect and replan.

In this unit, we shall discuss about what a teaching plan is, why it is required and what are its components?

क्या आपको लगता है कि इस इकाई के इन दो हिस्सों में कोई अंतर सम्बन्ध हैं? सोचिए और लिखिए।

.....

.....

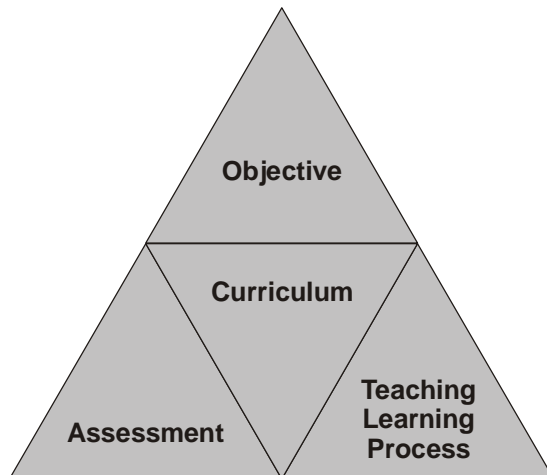
.....

.....

.....

.....

‘उद्देश्य’ और ‘आकलन’ पाठ्यचर्या से इतने गहरे रूप से जुड़े हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करके समझ पाना लगभग नामुमकिन है। इस पाठ को पढ़ते समय भी इस पाठ के दोनों भागों में आप बहुत से संबंध खोज पाएँगे और उनका एक-दूसरे पर प्रभाव भी समझ पाएँगे। इसलिए इस चित्र में दिखाए गए चारों मुद्दों पर लगातार लोगों से चर्चा करते रहें।



# 1

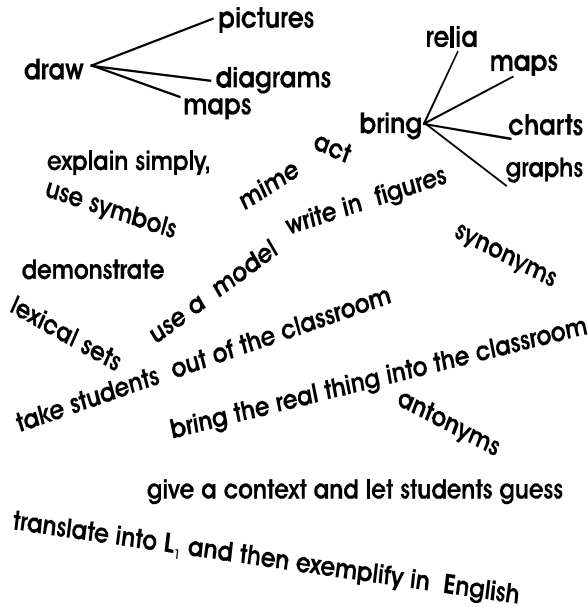
## VOCABULARY

### (at a glance)

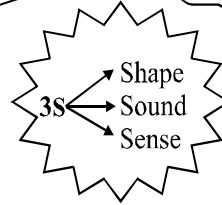
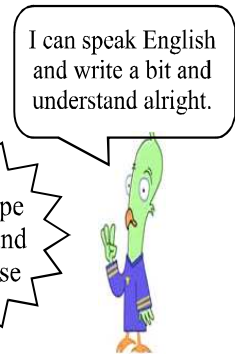
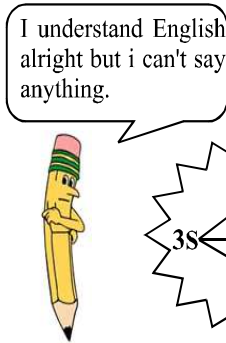
**WHAT TO TEACH**

- Meaning
- pronunciation
- spelling

**How can you TEACH IT?**



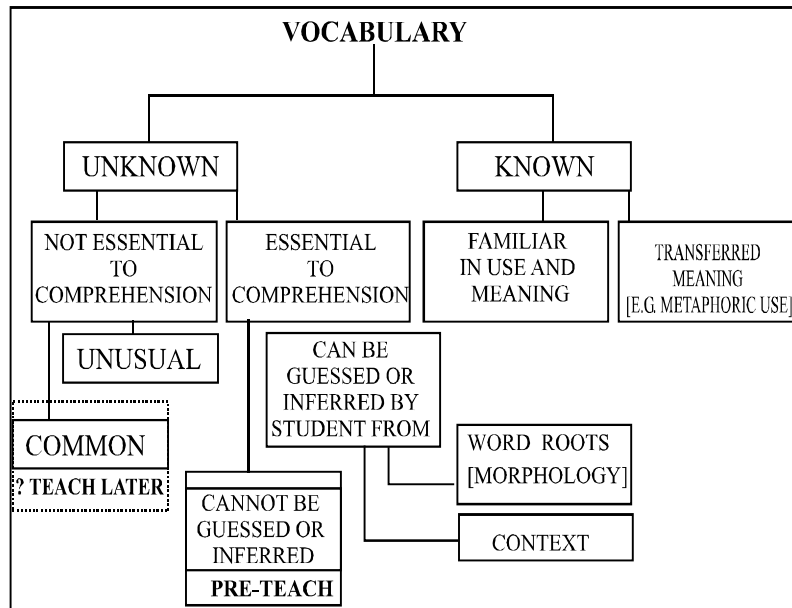
OR



**WHICH WORDS FROM THIS PASSAGE**

-would you pre-teach?  
 -could students guess from context?

Mr. Sharma, an business man with a job, was worried about his health. He wanted to keep fit so he started jogging with his friends. They met at the Park at 7a.m. and jogged round the Park before breakfast every day. Mr Sharma however, found he could not keep up with them. He was soon out of breath and got pains in his chest. Finally he decided to give up smoking and drinking. He was convinced it would help improve his health and his jogging, which it finally did.



# 2 LISTENING (at a glance)

**LISTEN! HOW?**  
 Extensive (general idea)  
 Intensive (for details)

Discussions  
 Descriptions  
 talks dialogues  
 Stories advertisements  
 Interviews lectures  
 Pop songs  
 directions  
 folk songs  
 news broadcasts  
 instructions  
 telephone  
 conversations

## LISTEN! TO WHAT?

### LISTENING ENABLING SKILLS

1. Predicting what people are going to talk about
2. Guessing at unknown words or phrases without panicking
3. Using one's own knowledge of the subject to help one understand
4. Identifying relevant points; rejecting irrelevant information
5. Retaining relevant points (note taking, summarising)
6. Recognizing discourse markers, e.g. "well", oh, another thing is, and 'Now, finally...'
7. Recognizing cohesive devices, e.g. 'such as', 'which', including link words, pronouns, references, etc.
8. Understanding different intonation patterns, and uses of stress, etc. which give clues to meaning and social setting
9. Understanding inferred information, e.g. speakers' attitude or intentions.
10. Distinguishing main ideas from supporting detail [the whole & its parts, fact & opinion, statement & example, and proposition & argument]
11. Transferring and transforming information in speech to diagrammatic display [e.g. through completing a diagram, table or chart]
12. Skimming: listening to obtain the gist of spoken text.
13. Scanning: listening for specific details in spoken text.
14. Note-taking from spoken text

## LISTEN! TO WHAT?

### PURPOSES


- General information main points
- Specific information particular items
- Cultural interest general
- People's attitudes and opinions
- Organization of ideas
- Sequence of events
- Lexical items words expressing noise/movement
- Structural items their use and meaning
- Functional items their form and use

## IDENTITY WHO LISTEN AND-

**TRUE or FALSE ?**

**Discuss**  
 For \_\_\_\_\_  
 against \_\_\_\_\_

**Continue the dialogue**



**Write ?**  
 1 \_\_\_\_\_  
 2 \_\_\_\_\_  
 3 \_\_\_\_\_  
 4 \_\_\_\_\_  
 5 \_\_\_\_\_  
 6 \_\_\_\_\_

**DISCRIMINATE**  
 Or  
 Compare with [slightly different] Reading text

**DRAW!**  
 Take notes (a) i (b) Select [a] [b] or [c]

**Follow directions**

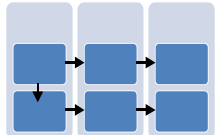


**Fill in a table**

|  |  |  |  |
|--|--|--|--|
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |
|  |  |  |  |

**THINK! [PROBLEM SOLVING]**

**Complete flow charts**



|   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|
| a | b | c | d | e | f |
|   | 1 |   | 2 |   |   |

# 3 SPEAKING (at a glance)

## EXPLANATION and DESCRIPTION

### Interpretations of graphs, maps, diagrams.

e.g. from geography or social science textbooks.

### Mini-speeches on topics of interest.

e.g. home town, hobbies, school rules pop stars.

### Describing a process.

bottling factories, cocoa production.

### Street directions, or directions for a journey.

**Instructions** for operating a machine or how to drive a car or mend a fuse.

1. Producing segmental features of English at word level [especially vowel and consonant sounds, stressed and unstressed syllables]
2. Using suprasegmental features of English [especially intonation, stress in sentences, word-linking and weak forms] accurately in spoken utterances
3. Expressing grammatical [syntactic and morphological] relationships in spoken utterances at the level of the sentence
4. Expressing relationships between parts of a spoken utterance through cohesive devices [especially grammatical cohesion such as noun-pronoun reference]
5. Using markers in spoken discourse, in particular
7. Expressing conceptual meaning in spoken utterances
8. Expressing attitudinal meaning in spoken text and utterances [especially by intonation]
9. Marking the main points or important information in spoken text and utterances [especially through emphasis or vocal underlining and through verbal cues]
10. Expressing information or knowledge in informal and semi-formal utterances
11. Planning and organising information in formal expository discourse

## ROLE PLAY and DRAMATISATIONS

Extending or continuing a set dialogue  
Inventing a conversation for characters in a picture,  
e.g. two people leaving a cinema, or a tourist arriving at a hotel reception, or someone shopping.

**Social events**  
e.g. shopping, travel, party, interview.

**Dramatising a sequence,**  
e.g. a family discussion about choice of job for teenage son, or discussion between witnesses of a car accident (using cue cards).

## GAMES and PROBLEM SOLVING

**Guessing games** (teams or whole class) Class has to guess, by asking questions that can be answered 'Yes' or 'No', what object, action, person or place one student is thinking of or has a picture of, e.g.

'Twenty Questions'(object) 'Glug' (action)

'Personalities'(famous person)

'Hide and Seek' (place)

**Elimination games** (teams, groups or whole class)

'Just a minute'

'Conversation

'My grand mother went to market' 'Simon Say's

'Don't answer "Yes" or "No".

'Arrange a meeting', with two diaries with various engagements for the week.



## DISCUSSION/CONVERSATION

### Interpretations of pictures

e.g. the story behind a picture or speculations about the people in the picture.

### Social issues-

e.g. traffic, pollution, education, role of women, planning a new town or school. (Ideas from a reading text, book or newspaper.)

### Personal experience

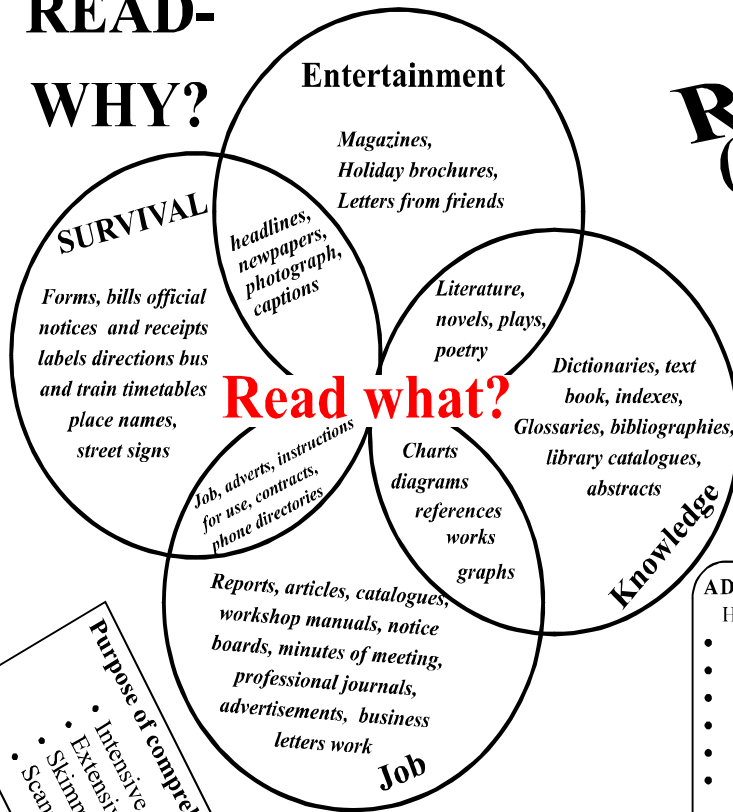
-e.g. discussion of horoscopes, disasters, plans for future, holidays,

**Pictures for opinions** e.g. fashion, stars, consumer goods.





# READ-WHY?



**Purpose of comprehension**

- Intensive
- Extensive
- Skimming
- Scanning

**Level of comprehension**

- Reading the lines
- Reading between the lines
- Reading beyond the lines
- Reading with involvement

**READING ACTIVITIES**

After the early stages  
(Reading for meaning)

Arrange jumbles sentences into a paragraph.  
Answer the questions. Complete the sentences.  
Is this information TRUE, FALSE or NOT STATED? Choose the correct answer from a,b,c or d.  
Note taking for summary. Jumbled key points.  
Complete a table or chart of information. label a diagram. Fill in missing information.  
Sentence which tells you that .....Find a  
Word which shows that .....Cloze passages, words given below.  
Fill in the blanks.

**Match**  
questions to answers.  
inbled sentence halves.

**Early stages**  
(word/sentence recognition)  
Match words to pictures.  
Sort words into lexical sets.  
Match sentences to pictures.

# 4 Reading (at a glance)



**ADIFFICULT TEXT ?**  
Help students BY

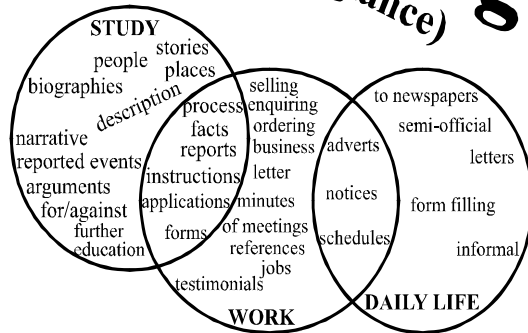
- More background information!
- Pre-teach key words the day before!
- Divide text into short chunks!
- Sign-post questions for main points!
- Add discourse markers where helpfull!
- Ask easy tasks like matching questions and answers!
- Praise and encouragement!

- READING SKILLS**
1. Recognising words and phrases in English script.
  2. Using one's own knowledge of the outside world to make predictions about and interpret a text.
  3. Retrieving information stated in the passage.
  4. Distinguishing the main ideas from subsidiary information.
  5. Deducing the meaning and use of unknown words' ignoring unknown words / phrases that are redundant, i.e.
  6. Understanding the meaning and implications of grammatical structures, e.g. cause, result, purpose, reference in time (e.g. verb tences; compare: 'he could swim well' past, 'he could come at 10 a.m.' - future).
  7. Recognising discourse markers: e.g. therefore + conclusion, however+ contrast, that is + paraphrase, e.g.+ example.
  8. Recognising the function of sentences even when not introduced by discourse markers : e.g. example , definition, paraphrase, conclusion, warning.
  9. Understanding relations within the sentence and the text (words that refer back to a thing or a person mentioned earlier in the sentence or the text, e.g. which, who it).
  10. Extracting specific information for summary or note taking organization or ideas within the text.
  11. Skimming to obtain the gist, and recognize the organization of ideas within the text.
  12. Understanding implied information and attitudes.
  13. Knowing how to use an index, a table of contents, etc. understanding layout, use of headings, punctuation.
  14. Transferring information and Note-making from text.

# 5 Writing (at a glance)

## Writing skills

1. Handwriting: forming and joining letters.
2. Mastering spelling, punctuation, sentence construction, referential words (he, who).
3. Linking sentences, using connecting words, relatives, etc. connecting paragraphs.
4. Being aware of different demands of written English (contrast with spoken).
5. Organizing information logically and clearly with a specific type of reader in mind.
6. Using discourse markers appropriately to indicate main points, developments in a theme, change of topic, examples, conclusions, etc.
7. Using variation in normal sentence patterns and word order to develop a theme clearly and emphasis the main points at each stage.
8. Selecting vocabulary to convey attitude and implied meaning.



## WRITING TASKS:

### Paragraph writing

1. Hossein's new house is off Kings Street. He moved there because it was quieter it's next door to a hospital and has a large garden at the back. His wife likes it because it has a modern kitchen.

Sadegh//flat/park road//moved/  
Cheaper//cinema/small garden/  
Front.//Friends/near/town centre.//

Now write about your friend's house, using the similar sentences.

2. 'You think you have seen a man who is wanted by the police. Write, for the police, a short description of the man, saying when and where you saw him.

**Begin:** The man I saw was coming out of, etc. place, time, date. Description of clothes, briefcase, etc. appearance, manner, possible intentions.

### Essay Writing

3. "The school leaving age should be 15 minimum"

Discuss.

Skeleton plan: Advantages: It's a good thing to do x because....

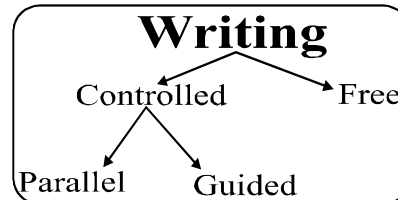
Disadvantages: It's not a good thing to do x because.....

Most people prefer x (or y) because...

I think perhaps Y as well as instead of x

Because (+ example)

4. Write a letter applying for the job advertised here. Give all necessary details and ask for more information re hours, pay, etc.



### Are your students POOR at

#### WRITING? Try the following:

- Stage preparation carefully: students should speak-read-then write.
- Grade each step: give shorter, simpler tasks until they improve.
- Give practice in planning, organising and expressing information.
- Give model or target essays.
- Practice relevant structures before they write their own.
- Keep a record of common mistakes. Focus on ONE per lesson.
- Insist on corrections. Test them later.
- Make them write in class. Vary the topics set.
- Do writing as group work. (The good help the weak).

Oh, dear, I can never think of what to write for English compositions. And I always make so many mistakes.

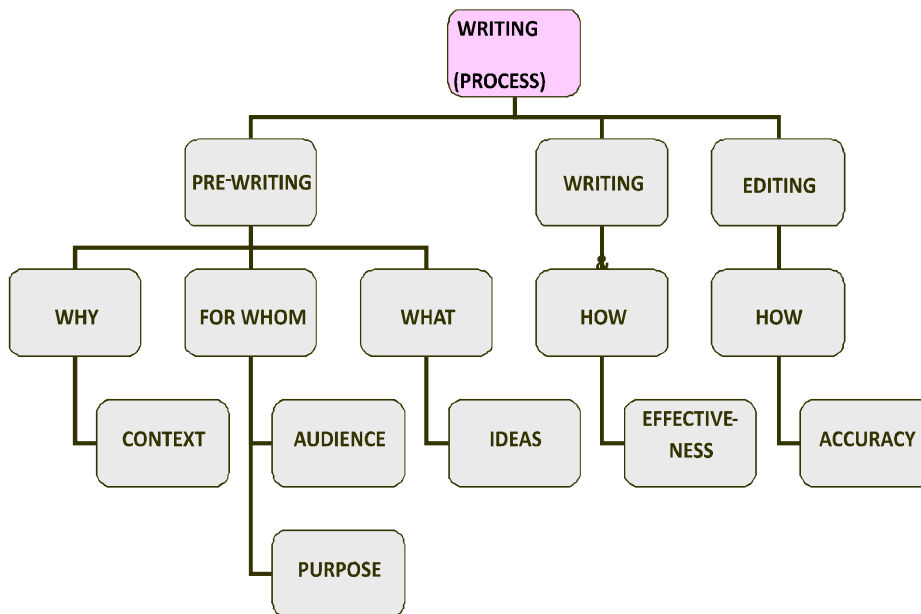
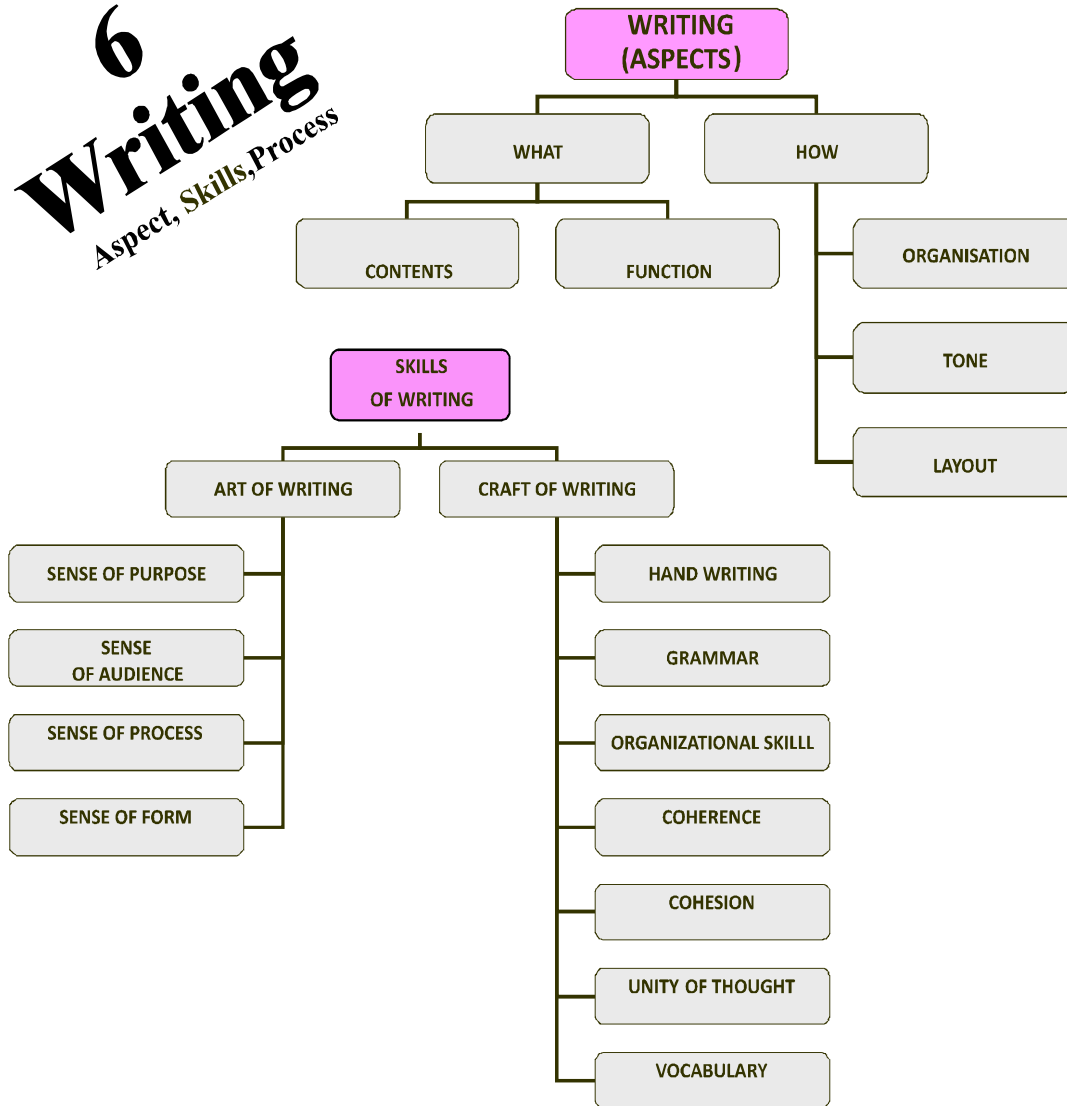


Well, our teacher discusses what we can write about, we get our ideas together and then we form a plan. We often say it through first, so my marks aren't too bad.



# 6 Writing

Aspect, Skills, Process



## 5. Teaching Plan (शिक्षण योजना)

### Need of a teaching plan (शिक्षण योजना की जरूरत)

जिस प्रकार एक बिल्डिंग को बनाने के लिए एक ब्लूप्रिंट की आवश्यकता होती है, एक व्यंजन बनाने के लिए एक रेसिपी धतरीके की आवश्यकता होती है, यात्रा करने के लिए दिमाग या कागज में उसके नक्शे की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार से एक कक्षा में सुचारू रूप से काम होने के लिए एक 'योजना' की आवश्यकता होती है।

आज कक्षा में क्या पढ़ाना है? उसके लिए किन चीजों की जरूरत मुझे पड़ेगी? बच्चों के सामने किस प्रकार के सवाल रखूँ कि बच्चे इस टॉपिक/विषय के बारे में सोचना शुरू कर दें? टॉपिक पर पकड़ बनाने के लिए किस किस की गतिविधियाँ कराऊँगी? कैसे जाँचूँगी कि बच्चों ने कितना सीखा? जिन बच्चों को मदद की जरूरत है उनके लिए मैं क्या तैयारियाँ करूँगी? ऐसे अनगिनत विचार व सवाल आमतौर पर शिक्षक अपनी कक्षा में लेकर जाते हैं। और यही सवाल आपकी कक्षा को दिशा भी देते हैं। हालांकि ये सवाल केवल कक्षा में जाने से पहले ही नहीं, कक्षा के दौरान भी आपके दिमाग में कौंधते रहते हैं और लगातार कक्षा को सक्रिय बनाए रखने में मदद करते हैं।

#### Think :

- क्या आपको ऐसा कोई दिन याद है जब आप बिना किसी मानसिक योजना/तैयारी के कक्षा में गए हों? ध्यान से विश्लेषण करें कि उस दिन कक्षा किस प्रकार की रही?
- क्या कभी ऐसा हुआ है कि आपने जिस प्रकार से योजना बनाई हो, उसके अनुरूप में कक्षा में काम न हुआ हो? ऐसे में आप क्या करते हैं?
- बहुत बार हमारी योजना के अनुरूप कक्षा में हर प्रक्रिया नहीं हो पाती। चर्चा करें कि ऐसा क्यों होता है? इसके क्या-क्या कारण हैं ?

R.L. Stevenson ने कहा है,

"Always plan your lesson before hand but do not be slave to it."

अर्थात् 'पहले से योजना जरूर बनाकर रखें, पर उसमें बंध न जाएँ, उसके गुलाम न बनें?' इसका एक प्रमुख कारण यह है कि जिनके लिए हम यह योजना बना रहे हैं, वे कोई कम्प्यूटर या मशीन नहीं जो हमारे योजना या प्रोग्रामिंग के अनुसार ही चलेंगे। वे सोचने-समझने वाले सजग व सक्रिय जीव हैं। वे अपने अनुसार चीजों को समझते हैं। और अनुभव करते हैं। बच्चों के जीवन के अनुभव बहुत व्यापक तरीके से उनकी क्षमताओं को प्रभावित करते हैं।

उदाहरण के लिए 'पेड़-पौधों' जैसे विषय पर एक किसान परिवार का बच्चा और एक शहर में रहने वाले बच्चे कि समझ क्या समान होगी? दोनों की समझ में क्या अंतर आपको देखने को मिलेंगे? इन अंतरों के क्या कारण होंगे?

प्रथम वर्ष में बाल-विकास के कोर्स में आपने पढ़ा कि कंडीशनिंग थ्योरीस का निर्मूलन इसी आधार पर हुआ था कि उसमें मानव मस्तिष्क को कम्प्यूटर की तरह समझने की प्रवृत्ति पाई गई थी।

एक विशेष प्रकार के स्टिमुलस से हमेशा एक विशेष प्रकार का रिस्पॉन्स ही पैदा होगा, मानव मस्तिष्क से ये उम्मीद करना बेमानी है।

**Think :** आप पूरी कक्षा को समान रूप से सिखाते हैं, पर क्या सभी बच्चे समान रूप से उसे सीख लेते हैं? नहीं। किस प्रकार के अंतर आपको देखने को मिलते हैं? इसके क्या कारण हैं? गहराई से सोचिए।

नीचे कुछ कारक दिए गए हैं जो कक्षा में किसी बच्चे की समझने की प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं। अपने अनुभव के आधार पर इस सूची को आगे बढ़ाएँ।

• परिवार का माहौल

• विषय में रुचि

पियाजे और वायगोत्सकी के सिद्धांतों पर आधारित रचनावादी मॉडल इसी बात पर जोर देता है कि बच्चे कोई खाली स्लेट नहीं जिस पर हम अपनी मंशा के अनुसार जो चाहे लिखें, अपितु बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। ऐसे में बतौर शिक्षक हमारी जिम्मेदारी बच्चों को अपने ज्ञान के 'सृजन' के लिए उचित वातावरण और सुविधाएँ उपलब्ध कराना है। और यह बात ध्यान देने योग्य है कि जब भी कोई चीज 'सृजन' की प्रक्रिया में होती है तो उसे एक योजना व दिशा की तो जरूरत होती है, पर उस 'सृजन' को हम किसी योजना में बांध कर नहीं रख सकते।

अतः कक्षा में जाने से पहले हमारी शिक्षण योजना इस प्रकार की होनी चाहिए जो हर एक बच्चे को अपना ज्ञान व समझ बढ़ाने के लिए बेहतर से बेहतर मौका दे, पर ऐसा करते समय हम उस योजना के गुलाम न बन जाएँ। याद रहे कि शिक्षण-योजना बेहतर शिक्षण के लिए है, शिक्षण 'शिक्षण योजना' के लिए नहीं।

**Think :** एक अच्छी शिक्षण योजना के कोई 5 प्रमुख बिंदु बताइए।

### Teaching Plan - Planning a unit (इकाई की योजना)

यदि ध्यान से सोचें तो आप महसूस करेंगे कि हम अपनी शिक्षण योजना हमेशा समग्रता में बनाते हैं। कोई अवधारणा या इकाई एक दिन में नहीं पूरी की जा सकती। इसलिए किसी अवधारणा को हम किस तरह कक्षा में करवाएँगे, इसकी योजना का एक मोटा खाका अपने दिमाग में रखते हैं। जैसे – 'लगभग कितने दिनों में यह इकाई पूरी करनी है, इस इकाई के अंतर्गत कौन-कौन से टॉपिक पर चर्चा करनी होगी आदि। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो आप एक 'इकाई' की योजना बनाते समय ध्यान में रखते हैं। उन्हें नीचे दिए गए डिब्बे में लिखें।

#### इकाई योजना के बिंदु

- |   |                             |
|---|-----------------------------|
| — | समय/दिन                     |
| — | कौन-कौन से टॉपिकों पर चर्चा |
| — |                             |
| — |                             |
| — |                             |
| — |                             |
| — |                             |

जैसे-जैसे समय बीतता है और अनुभव बढ़ता है, हमारी 'योजना' बनाने की प्रक्रिया में गंभीरता की कमी आने लगती है। शायद इसका एक प्रमुख कारण यही है कि अपने पेशे और काम के प्रति हमारी समझ बहुत बेहतर हो जाती है, पर जैसा हमने पाठ के शुरू में पढ़ा कि जिस प्रकार एक अच्छी इमारत को सुदृढ़ नींव की जरूरत होती है, उसी प्रकार अपनी कक्षा में शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए हमें लगातार बेहतर शिक्षण योजनाओं की जरूरत होती है। एक आरकिटेक्ट अपने काम में कितना ही प्रखर क्यों न हो जाए, वह इमारत बनाने से पहले इसका ब्लू-प्रिंट बनाना नहीं छोड़ता। फिर हम तो नित नए बच्चों के साथ, नई-नई परिस्थितियों में नए विषयों से जूझते हैं, तो हम अपनी शिक्षण योजना क्यों न बनाते रहें।

### What in a unit plan?

Let's go through what we consider while making a unit plan.

- All the relevant concepts should be covered in a unit,
- Resources (charts, laboratory equipments, hands on experiences, personnel - expert of the subject) required to make the concepts clear.
- Interlinkages with other subjects so that students study all the dimensions of a concept.
- Materials and methods of assessment. - to know whether or not students and teacher have achieved the objectives. i.e. Whether the students have learnt what the teacher had expected and could the teacher teach what she/he had planned)
- In a teaching plan, there is also a space for reflection. Reflection provides inputs to the teacher regarding how things went in the class, what needs improvement, where do we need to work more etc. So, she/he can modify planning according to it.

**Let's do:**

1. Choose a unit in any subject that you are going to take in next few days, and make a unit plan about it.
2. क्या unit plan को 'लिखने' से आपको किसी प्रकार की मदद मिली? 'लिखना' किस प्रकार से हमारी सोच को पुख्ता बनाता है?

### Planning

|               |  |   |
|---------------|--|---|
| <b>Before</b> | <ul style="list-style-type: none"> <li>• What do I want the students to learn from this lesson?</li> <li>• What activities will I include in the lesson?</li> <li>• What do the students need to know before they can learn the learning item?</li> <li>• How will I organize the lesson into stages?</li> <li>• How much time will I need for each stage?</li> <li>• How will I ensure that I get the students attention and that they are interested in the learning task?</li> <li>• What is the difficulty level of the lesson?</li> <li>• What will the learners be doing during each stage of the lesson?</li> <li>• What is my role during the different stages of the lesson?</li> <li>• What management techniques will I use?</li> <li>• How will I organize the learners in pairs, groups etc?</li> <li>• What are my alternative plans if problems arise with some of the learners?</li> </ul> | <ul style="list-style-type: none"> <li>• Have I provided enough information to the students?</li> <li>• Have I used appropriate grouping methods?</li> <li>• How relevant is what I am teaching to the students?</li> <li>• Am I controlling the students learning too much?</li> </ul> |
|               | <ul style="list-style-type: none"> <li>• learners work it out for themselves help?</li> <li>• Is the teaching going as I had planned?</li> <li>• How can I attend to breakdowns as they occur?</li> </ul>  |   |

**Aims and Objectives:**

**An objective** is a measurable<sup>7</sup>, observable<sup>8</sup> behavior of less than a day's duration.

**An aim** is an expression of a long-term purpose, usually over the course of one or more years.

For example, the aim of teaching English at the initial levels (the first two years) is to build familiarity with the language in meaningful situations; so that the child builds up a working knowledge of the language.

Now, if a teacher in class 2 teaches a poem 'Pointing':

**Point to the window**  
**Point to the door**  
**Up to the ceiling**  
**Down to the floor.**

**Point to the table**  
**Point to the chair**  
**Point to your friend**  
**Sitting over there.**

**Point to your head now**  
**Point to your knees**  
**Point to your elbow**  
**Now point to me!**

|                        |   |
|------------------------|---|
| <p><b>Pointing</b></p> | <ul style="list-style-type: none"> <li>• Did the lesson address the students n</li> <li>• Was the lesson at the appropriate level</li> <li>• Did the students learn what they were e this?</li> <li>• Were all the students involved in the le</li> <li>• Did the lesson arouse the students inter</li> <li>• What were the strengths and weakness</li> <li>• How would I teach the lesson if I were</li> <li>• learned from this experience of teachin</li> <li>• What would be a suitable follow up to t</li> </ul> |
|------------------------|---|

Can you tell what are can be the objectives of doing the above poem in the class?

.....

.....

The teacher may have the following objectives in her mind corresponding<sup>1</sup> to the said aims of teaching English at the initial levels:

**Learners:**

- Recite the rhyme with actions and rhythm.
- Know and use new words in English.
- Know the names of body parts in English.

1. active/changing | 2. provide/supply | 3. not giving attention | 4. given/recommended | 5. in a given order  
 6. a sente of sameness | 7. that can be measured | 8. that can be observed/seen



In order to make sure that we facilitate<sup>2</sup> learning in the class exactly in the way we want to, having clear and specific objectives is a must. Please note that objectives should not be the activities. They should instead be the learning outcomes of those activities i.e what we want to achieve through those activities.

**Let's do**

Find out and write down the *aims* of teaching English at the elementary level. Then choose any one topic from that grade and write down the *objectives* for teaching that. (Refer NCF – 05 and text books)

**Classroom language**

1. ELEMENATRY stage reading activities, (word and sentence recognition etc.)
2. ADVANCED reading comprehension lessons (training in reading skills, understanding texts etc.)

Any of (suitable) tables could be practiced, in pairs/groups, with the relevant flash cards, pictures, reading texts, so that you get used to handling the materials and speaking about them simultaneously.

**Elementary reading tasks**

1.

|                       |                 |   |           |
|-----------------------|-----------------|---|-----------|
| I've got<br>We'll use | Some cards with | your names words and<br>pictures sentences questionson,<br>and answer | on, Look! |
|-----------------------|-----------------|---|-----------|

2.

|                                       |  |                               |
|---------------------------------------|--|-------------------------------|
| Give some to read with this card      | Card   | Which leads to me....         |
| Show the words to the right picture   | Which goes with this                         | is your neighbour             |
| Find the sentences about this picture | What picture                                 | in your groups                |
| Point to                              | Match the questions to the right answers etc | Do these letters              |
| Pick out                              |  | Read the rest of the sentence |

3.

|  |
|--|
|  |
|--|

4.

|  |  |
|--|--|
|  |  |
|--|--|

5.

|  |
|--|
|  |
|--|

6.

|  |
|--|
|  |
|--|

7.

|  |                   |               |            |                     |              |
|--|-------------------|---------------|------------|---------------------|--------------|
| What does it say<br>Tell me what it says |                   | at the        | Top bottom | of the page/lesson. |              |
| Look at the                              | exercise activity | in the middle |            |                     |              |
|  |                   | under by      | the        | Picture photograph  | on page..... |

8.

|   |                       |
|---|-----------------------|
| Can you read the instructions<br>What do you have to do | in /for the exercise? |
|---|-----------------------|

9.

|             |  |
|-------------|--|
| You have to | match the questions to answers.<br>find the right word for each gap.<br>arrange the sentences into a good paragraph. |
|-------------|--|

Checking students have understood

10.

|                                   |   |                                  |                             |          |
|-----------------------------------|---|----------------------------------|-----------------------------|----------|
| Checking students have understood |   | Could you open your              | book reading text work book | and find |
| Alright.                          | Do you all know   | What to do?<br>How to read this? |                             |          |
|                                   | Does anyone have any questions?<br>Any questions?<br>Any problems?<br>Shall I go over it again? |                                  |                             |          |

**Intermediate and advanced reading comprehension**

Find a reading comprehension passage in your text book and adapt the language in the tables to refer to your text, filling the blanks with relevant words from the text. Try to imagine what the teacher is doing at each stage, and why.

Sit in pairs, take turns to be the teacher! Practise rephrasing your instructions, using two or three alternative expressions from each table.

**Introducing the text**

11.

|               |                    |     |                                      |   |      |  |
|---------------|--------------------|-----|--------------------------------------|---|------|--|
| Right! Ready? | What about look at | the | title heading picture first sentence | ? | What | could it be about? do you think it is about? |
|---------------|--------------------|-----|--------------------------------------|---|------|--|

12.

|  |
|--|
|  |
|--|

|  |  |
|--|--|
|  |  |
|--|--|

|  |  |  |
|--|--|--|
|  |  |  |
|--|--|--|

|  |  |  |
|--|--|--|
|  |  |  |
|--|--|--|

|  |  |  |
|--|--|--|
|  |  |  |
|--|--|--|

|     |  |                                    |
|-----|--|------------------------------------|
| 13. | Yes, perhaps.<br>Well, I don't know.<br>ErnWhat.do.you.know...<br>Do you know anything.<br>Who can tell me something | What do<br>Do you<br>About '-----' |
|-----|--|------------------------------------|

|  |                          |                             |
|--|--------------------------|-----------------------------|
|  | 14.                      |                             |
|  | Have you ever            | seen<br>heard of<br>been to |
|  | <b>Beginning to read</b> |                             |

15.

|  |         |                 |
|--|---------|-----------------|
|  | Alright | So now you know |
|  | 16.     |                 |

|  |        |                   |  |
|--|--------|-------------------|--|
|  | Before | you begin reading | you n<br>can you<br>could<br>I<br>make |
|--|--------|-------------------|--|

|  |          |  |                                 |
|--|----------|--|---------------------------------|
|  |          |  | 17.                             |
|  | Student: |  | But I don't understand '--<br>, |

|         |      |         |
|---------|------|---------|
| '-----' | Well | '-----' |
|---------|------|---------|

**Talking about the text in detail**

21.

|  |             |  |
|--|-------------|--|
| In line 4,<br>The 10 <sup>th</sup> line from the top.<br>The 2 <sup>nd</sup> line in paragraph 2,<br>Near the bottom,<br>The sentence beginning '-----', | What        | does the author mean by '-----'?<br>can he mean by '-----'?<br>do you think 'which' refers to?<br>does the word 'However' tell us? |
|  | Why does he | use the word 'moreover'?<br>repeat the words '-----'?  |
| Can you say/explain that in your own words?  |             |  |

22.

|                               |            |             |   |                           |
|-------------------------------|------------|-------------|---|---------------------------|
| Difficult?<br>You don't know? |            | Never mind. | Look at the sentence                              | after.<br>before.         |
| Try to                        | think work |             | See if you can guess.<br>What could it be? Guess. |                           |
|                               |            |             | it out for yourselves. Think !                    | Is it '-----' or '-----'? |

23.

|                      |  |  |
|----------------------|--|--|
| Let's recap quickly. |  |  |
| how, what            | Do you think the writer                                  | wanted to tell his readers?<br>will say next?<br>will go on to say next? |
|                      | kind of people do you think the author is addressing to? |  |

**Classroom processes:**

Based on the topic and objectives, classroom processes (methodologies that can be adopted for that topic) are to be planned. While planning, we should consider following components:

- Effectiveness<sup>3</sup> of any strategy: group discussions/ taking students out of the class/ having relevant activities in the class/ presentations by the students/ demonstration by the teacher/ calling a resource person (farmer or doctor) to the class/ field visits/ organizing a quiz in the classroom / integrating with the other subjects/ projects etc. We may and should not rely on the same kind of strategy for each subject or topic. A range of strategies as per requirement helps in maintaining the interest of the students and ensures the development of various skills.
- Available resources - reference books, models, pictures, flash cards, concrete<sup>4</sup> objects, local experts, students of higher classes, videos, movies, computers, library, museums, worksheets etc. We should exploit<sup>5</sup> the maximum resources that are available. But no resource, no strategy can replace a teacher. So, whatever strategy we choose, be sure that we are fully convinced<sup>6</sup> that this will make students learn better.

**Evaluation and Feedback:**

This is the phase of classroom transaction where in a stress free environment, we find out how much the students have learnt. This also gives us a feedback on to what extent the objectives are met by various students and how appropriate our teaching methods are for attaining those objectives. So it is not only an evaluation of students' progress but also our skills as a teacher. Let's see an example to understand this.



Sudha in class 3, narrated the story of 'The Sun's Handkerchief' (given at the end of the unit)

She had the following objectives in her mind:

- Reading stories aloud and comprehending them.
- Revisiting colours' names.
- Introducing the past tense forms of verbs.

She first discussed about the sun, rain, and what they do when it rains etc. Then she narrated the story twice, first in bilingual manner and then in English. After that children also read the story aloud in class. However, the next day when she saw the notebooks of children after discussing the exercises of the story, she found that most of the children are having troubles with the past tense forms of verbs in writing sentences.

For example, she came across sentences like:

"The sun caught the cold."

"He goed in the puddles!."

"Mother Earth gave him a medicine." And many more like this.

Although Sudha knew that such errors go with time, still she wanted to capture<sup>2</sup> students' attention to the fact that all past tense forms do not end with -ed.

So next day again she read the story aloud with children, but this time she also asked children to underline the words of past tense form in their books. Then she made a list of all those words on the blackboard.

Read the story and write such words below:

---



---

She also discussed in detail about the past tense forms of verbs, how they are formed, when they are used etc. Then she had a small activity in which she wrote two words on the blackboard which corresponded to the same word.

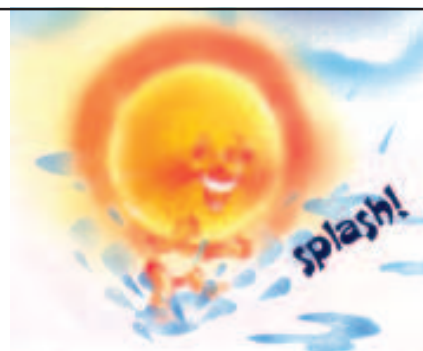
*e.g.* caught - caught

goed - went

took - taked, etc.

Children collectively chose the correct form and made small sentences using them.

The whole process helped her in bringing clarity about the concept, and students participate actively in the process.



### Think :

- इस पूरे उदाहरण में सुधा ने कब-कब बच्चों को आकलन किया? उस आकलन के क्या आधार थे? क्या वे उद्देश्यों से जुड़े थे? आकलन के दौरान सुधा ने जो समझा, उस समझ का उसने किस प्रकार उपयोग किया? क्या उसने अपने पढ़ाने के तरीके में भी कुछ बदलाव किए?
- How are 'evaluation' and 'feedback' related to each other?

In the above example we saw that Sudha did not make a judgement<sup>1</sup> about her learners, rather she identified the problem and instantly<sup>2</sup> modified<sup>3</sup> her plan to help students learn what she intended<sup>4</sup> for them to learn. She took students' difficulties as a feedback to her teaching methods and brought about the necessary change in it. So evaluation eventually takes a teacher to reflection!

**Reflection:**

You are the best judge of yourself!

Knowingly or unknowingly, we all think and reflect about how things went in the class, could it have been better or an activity really engaged every child meaningfully in the learning process! But the problem begins when we become casual about our reflections. Its not a teacher, but a reflective teacher who helps her learners best in learning, as we saw in the previous example.

**Let's see another example for this.**

Ujjwal teaches class 3rd. He took the poem 'One Fish Two Fish' in the class, with the following objectives in his mind:

- Learners will recite the poem.
- Learners will be able to write the opposite words for the given words.

He sang the following poem with full enthusiasm<sup>5</sup> along with his students and also put up a chart with the following poem.

All the students enjoyed singing the poem very much.

Then he tried to bring children's attention to the opposite words in the poem like:

old- new  
thin- fat

But he found that the students were not able to und these opposite words. Ujjwal was not satisfied with th concept of opposite words in the context of this poem, ar surroundings and use them in their language.

So next day he came prepared with another cha form a visual connection with the opposite words in th

One fish, Two fish,  
Red fish, Blue fish,  
Black fish, Blue fish,  
Old fish, New fish.  
Some are red  
and some are blue,  
Some are old  
and some are new.  
Some are thin  
and some are fat,  
The fat one has a yellow hat!  
Some are sad  
and some are glad  
Some are good and some are bad!  
Why are they sad and glad and bad?  
I don't know  
You can ask your dad!

sad- gla  
good- b

One fish, Two fish,  
Red fish, Blue fish,  
Black fish, Blue fish,  
Old fish, New fish.  
Some are red  
and some are blue,  
Some are old  
and some are new.  
Some are thin  
and some are fat,  
The fat one has a yellow hat!  
Some are sad  
and some are glad  
Some are good and some are bad!  
Why are they sad and glad and bad?  
I don't know  
You can ask your dad!

This time, students were able to relate a word with its picture and understand its meaning. This helped Ujjwal in carrying out an enthusiastic discussion around the opposite words in the poem, where he kept on referring<sup>1</sup> to the pictures of those opposite words again and again. By the end of the class, students started giving examples of more opposite words like 'black and white', 'big and small' etc. Ujjwal also gave them the freedom to share opposite words from their local language too and helped them with their English translations. Ujjwal's reflections about his learners' needs and suitable changes in his teaching methods, helped him develop a richer understanding of the concept of opposite words.

### Let's write

Think of any incidence of your teaching experience where you 'reflected' on your ideas about your students/ teaching methodologies/ your students' needs etc. and modified your planning accordingly. How did it help? Share your experience.

### Way forward:

Based on the response of the students and our own reflection, we then need to plan our next class. If there are the concepts that students have not understood, we need to rethink and re-plan things for them, as we saw in last two examples.

For example, if some students are not able to arrange the following in the dictionary order, Ant, Arrival, Aanchal, Animal, A

Then give the following tasks, along with one demonstration of how to use dictionary:

Task 1: Ant, Bee, Cat, Dog

Task 2: Ant, Bee, Bird, Dog

Task 3: A, Arrival, Animal,

Task 4: Ant, Arrival, Aunt, Animal, A

### Let's write

Explain with the help of an example how 'evaluation', 'reflection' and 'way forward' are connected to each other?

आप शिक्षण-योजना बना रहें हों या प्रश्न पत्र, उसके पीछे हमारे निर्धारित उद्देश्य होते हैं। हमारे मन में इन कार्यों को करने से पहले मोटे उद्देश्य तय होते हैं, पर उन्हें हम लिखना जरूरी नहीं समझते। यदि हम उन्हें ठीक से लिखें, तो हमारी समझ में स्पष्टता आएगी। हम आखिरकार कोई काम क्यों कर रहे हैं? हम किसी कक्षा में क्या करना या करवाना चाहते हैं? यह लिखने से हमारी योजना को सही दिशा मिलती है। इस भाग में हम उद्देश्य कैसे लिखे जाएँ, इस पर चर्चा करेंगे।

शिक्षण-योजना या प्रश्न पत्र बनाते समय बड़े उद्देश्यों को ध्यान में रखकर specific objectives उद्देश्यों को सुनिश्चित करना जरूरी होता है। इससे हमारी योजनाओं में और प्रश्नों में पैनापन आता है। हमारे उद्देश्यों तक हम पहुँच पाये या नहीं, इसका आकलन करने में मदद मिलती है। इन कार्यों से हमारी अपेक्षाओं को सीमित करने में भी मदद मिलती है। आइए उद्देश्य कैसे लिखे जाएँ, इस पर अपनी समझ बनाएँ—

Follow the three-step process below for creating learning objectives.

#### 1. Create a stem. Stem Examples:

After completing the lesson, the student will be able to ...

After this unit, the student will have ...

By completing the activities, the student will ...

At the conclusion of the course/unit/study the student will ...

इस पाठ के अंत में बच्चे.....

इस गतिविधि को करने पर बच्चे.....

1. related to mind | 2. related to control on hand movements and skills | 3. covering all the aspects/areas



2. **After you create the stem, add a verb:**

Arrange, associate, analyse, build, calculate, carry out, categorize, change, check, classify, collect, combine, compare, contrast, compose, compute, construct, convert, conduct, complete, compose, construct, count, criticize, debate, decrease, define, demonstrate, design, direct, discuss, discover, detect, distinguish, draw, dramatize, explore, estimate, explain, express, evaluate, examine, extrapolate, formulate, generalize, identify, illustrate, implement, improve, increase, infer, integrate, interpret, introduce, investigate, judge, list, locate, maintain, manage, name, order, organize, perform, plan, point, predict, prepare, prescribe, produce, propose, question, rank, rate, recall, reflect, relate, remove, repeat, replace, score, sing, sketch, specify, state, tabulate, trace, track, translate, use, verify, write etc

इस पाठ के अंत में बच्चे चित्रों को देखकर पक्षियों के नाम बता पाएँगे।

इस गतिविधि को करने पर बच्चे दिए गए शब्दों से कहानी बना पाएँगे।

3. **Once you have a stem and a verb, determine the actual product, process, or outcome:**

After completing this lesson, the student will be able to 'recognize the fruits'.

Below, you will find numerous examples of learning objectives used by teachers. Modify them as necessary.

**Language Examples**

Objectives:

After completing the lesson, the student will be able to:

- a) Listen for the purpose of following directions: fold the paper, again fold it, cut the corners etc.
- b) Record his or her understanding/knowledge by creating pictures of fruits named by the teacher and colour them appropriately.
- c) Use the vocabulary of shapes, colors, etc. to describe flowers, clothes etc.
- d) Explain the meaning of the word(s): \_\_\_\_\_.
- e) Discuss the differences and similarities between the two main characters from \_\_\_\_\_ and \_\_\_\_\_.
- f) Identify the definition of \_\_\_\_\_ (fables, fairy tales, etc.).
- g) Re-tell in his/her own words \_\_\_\_\_.
- h) Summarize<sup>1</sup> the plot of \_\_\_\_\_.
- i) Make inferences<sup>2</sup> from the text ...
- j) Listen critically to interpret<sup>3</sup> and evaluate ...
- k) Represent textual information by \_\_\_\_\_ (drawing, painting, etc.)
- l) Recite a poem (or excerpt of text) with fluency
- m) Compose a \_\_\_\_\_ (verse, rhyme, poem, etc.)

इन शब्दों का चयन इसलिए जरूरी है क्योंकि उससे स्वयं का और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का आकलन करने में मदद मिलती है। लेकिन ऐसा जरूरी नहीं है कि कक्षा में वही हो ;या वही होता है, जिसका आकलन हो सकें। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में ऐसी कई बातें होती हैं जिनका आकलन कर पाना आसानी से संभव नहीं होता। जैसे बच्चों का किसी विशिष्ट चीज़ के लिए बदलता दृष्टिकोण, उनकी रुचियाँ, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता आदि और यही वजह है कि हम पोर्टफोलियो, नियमित अवलोकन आदि को आकलन में शामिल करते हैं।

## The art of asking questions

(Oral/written test or as a strategy to teach the topic)

सही व सटीक सवाल पूछ पाना भी एक कला है। कई बार हम देखते हैं कि प्रश्नकर्ता का प्रश्न हमें समझ में नहीं आता या हम उसका अर्थ कुछ और ही लगा लेते हैं।

प्रश्न पूछने के पीछे कोई न कोई आशय होता है और यह आशय सामने वाले व्यक्ति को समझ में आना सही उत्तर देने के लिए आवश्यक है।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के बारे में बात करें तो प्रश्न पूछने के कई कारण होते हैं। जैसे:—

- बच्चों के अंदर की उत्सुकता और जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए
- उनके अंदर छिपे प्रश्नों को आमंत्रित करने के लिए
- उनके अंदर की प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए
- विषय के प्रति उनकी समझ को भापने के लिए
- उन्हें अलग तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करने के लिए
- उन्हें उनके विचारों को व्यवस्थित करने में मदद करने के लिए, इत्यादि।

क्या आप इस सूची में कुछ और जोड़ना चाहेंगे? कोशिश कीजिए।

.....  
 .....

The art of asking questions is one of the basic skills of good teaching. A teacher must be able to reach the learners. Questions help the teachers to go deeper into the minds of children to know what they have understood and how far they are able to relate to the concepts.

Through the art of thoughtful questioning, teachers can extract not only factual information, but also aid learners in connecting concepts, making inferences, increasing awareness, encouraging creative and imaginative thinking, aiding critical thinking processes, and generally helping learners explore deeper levels of knowing, thinking, and understanding.

There are five basic types of questions:

- |                   |                |              |
|-------------------|----------------|--------------|
| 1. Factual        | 2. Convergent  | 3. Divergent |
| 4. Evaluative and | 5. Combination |              |

Let's know about each of them briefly.

**Factual** - Asking for reasonably simple, straight forward answers based on obvious facts or awareness. Their answers are frequently either right or wrong.

Example: Who is the poet of 'Daffodils'?

Frame any three factual questions for your class.

.....  
 .....  
 .....

### Convergent and divergent questions

Example:

Teacher: In this story, why did the fox say, "Grapes are sour"?

Teacher: How would you help the fox to reach the grapes?

For the first question, most of the children will have similar answer . This is an example of convergent question. However, for the second question, she expects that the students should think and come out with varied answers. There isn't any one correct answer for this. Such are divergent questions which allow students to explore different possibilities and create many different variations and alternative answers. Correctness may be based on logical projections, may be contextual, or arrived at through basic knowledge, inference, creation, intuition, or imagination. These types of questions often require students to analyze, synthesize, or evaluate a knowledge base and then project or predict different outcomes.

**Evaluative:** These types of questions usually require higher levels of intellectual and/or emotional judgment. Often an answer is analyzed at multiple levels and from different perspectives before a person arrives at newly synthesized information or conclusions.

**Examples:** In the story of 'Hare and the tortoise', tortoise won the race. So, can we say that tortoise is the fastest?

**Combinations:** These are the questions that blend combinations of the above.

**Examples:**

- a) Name your favourite movie. Compare it with the movie you do not like.
- b) What measures are taken in your school to keep it clean? What is the best way to ensure cleanliness?

### READING FOR DIFFERENT PURPOSES:

Reading always means reading with comprehension. The degree of comprehension depends upon the subject matter, the reader's linguistic competence and the purpose for which it is read. Fry classifies reading into three main categories:

Study Reading is used when the material to be read is difficult or when a high degree of comprehension is desired. A fairly good reader can read between 200 and 250 words per minute with 80% to 90% comprehension.

Average Reading is used for everyday reading of news papers, magazines, novels and other texts. The speed in this kind of reading can be 250-300 wpm. The comprehension desired is 70%.

Skimming and Scanning come under the fastest form of reading at 800 wpm or more; comprehension is necessarily low but not lower than 50% During such reading the reader is guessing for himself those parts of the sentences he has missed. Reading, under such circumstances, becomes "externally guided thinking". When comprehension goes below 50% reading becomes a fruitless exercise.

Comprehension is a part of the communication process by which the reader gets the thoughts of the author. This involves the ability to perceive and understand words in relation to others. The ability to understand individual words is not enough. Careful studies have revealed that reading is not a general ability but a complex of specialized skills. These specialized skills are called for in various curriculum areas depending on the types of reading materials.

An error occurred while printing this page.

Error: **typecheck**                      Offending Command: **setcolor**

Suggestions:

Restart your printer and send document again. Try proof print or moving some of the non-printing elements off the page.